क्षत्रिय वंशावली



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन

क्षत्रियवंशावली

लेखक :

ठाकुर–उदयनारायण सिंहजी

संस्करण : जनवरी २०२०, संवत् २०७६

मूल्य : ६० रुपये मात्र ।

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास,™

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

प्रस्तावना

★

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् ।।

जिसको न निजजाती तथा निजदेशका अभिमान है।
वह नर नहीं, नरपशु निरा है और मृतक समान है ।।

किसी समाज अथवा राष्ट्रकी उन्नति उसके धर्म तथा पूर्व पुरुषोंके सच्चरित्र पर अवलम्बित है। जिस तरह लंगड़ा व्यक्ति लाठीके सहारे पर्वत शिखर पर चढ़नेमें समर्थ हो जाता है, उसी प्रकार किसी भी देशकी जातियां तथा समाज धर्म तथा सदाचार पर उन्नति कर सकती है। वर्त्तमान समय विकास, क्रान्ति और जागृतिका युग है।

धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्रमें बड़े २ परिवर्तन हो रहे हैं, तथा उनके जटिल प्रश्नोंको सुलझाने तथा तरक्की करनेमें लोग लगे हुये हैं। पर हतभागी क्षत्रिय जाति गाढ़ निद्रा देवीकी गोदमें खर्राटे ले रही है। क्षत्रिय सज्जनो! चेतो और पूर्व पुरुषोंके सच्चरित्रपर ध्यान दो।

हो गया सो हो गया, अब सोच करना व्यर्थ है।
गत काल के लौटालने में, कौन शूर समर्थ है?
हम क्या थे क्या हो गये, और क्या होंगे अभी,
आओ विचारें आज मिल कर, येसमस्याएँ सभी।

इसी विचारसे मैंने संक्षिप्तमें सृष्टिसे लेकर वर्त्तमान समय तकके क्षत्रियोंके वंशवृक्ष, शाखा गोत्र कुलदेवी कुलदेव, विवाहसम्बन्धी विकृत दिमाग वालों का अटपट आक्षेपों का सप्रमाण उत्तर देते हुये १४६ विषयोंके ऊपर प्रकाश डाला है।

धर्मशास्त्र सम्बन्धी विषयोंका प्रचार करनेके लिये सदैव कटिबद्ध रहने वाले-धर्मरत्न खेमराज श्रीकृष्णदासजीके ज्येष्ठ पुत्र श्री० रावसाहब श्रीमान् रंगनाथजी सेठ तथा आपके लघु भ्राता श्रीमान् श्रीनिवासजी सेठ इनके लिये इस "क्षत्रियवंशावली" नामक पुस्तक को पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार पुरःसर सादर समर्पित करता हूँ, और ईश्वरसे प्रार्थना करता हूं कि-श्रीमानों को, तथा आपके परिवार को सदैव सुखी रखते हुए परमात्मा कुलकी अभ्युन्नति करे, आशा करता हूं कि स्वजातीय सज्जनवृन्द उक्त विषयोंको आद्योपान्त अवलोकन कर यथासाध्य लाभ उठाते हुये मेरे परिश्रमको सफलीभूत करेंगे और भूल चूकके लिये क्षमा प्रदान करेंगे।

स्थान—मधुरापुर
डाक—बिद्दूपुर बाजार
जि. मुजफ्फरपुर
(विहार)

एक जातीय सेवक—
उदयनारायण सिंह,
(निकुम्भ)

क्षत्रियवंशावलीकी विषयानुक्रमणिका।

इति श्रीक्षत्रियवंशावली विषयानुक्रमणिका समाप्त

क्षत्रियवंशावली

★

सृष्टि

सृष्टिके विषयमें शास्त्रीय विचार करनेके पहिले पाठकोंको सुलभ रीतिसे यह कठिन विषय समझमें आजाये इसलिये शास्त्रोक्त पारिभाषिक विषयोंको लिखते हैं,—कल्प ३० हैं :—१—श्वेत-कल्प, २—नीललोहित, ३—वामदेव, ४ रथन्तर, ५—रौरव, ६—प्राण (देव), ७—बृहत्‌कल्प, ८—कन्दर्प, ९—सद्यःकल्प, १०—ईशान, ११—तमः, १२—सारस्वत, १३—उदान, १४—गारुड़, १५—कौर्म, १६—नरसिंह, १७—समान, १८—आग्नेय, १९—सोम, २०—मानव, २१—पुमान्, २२—वैकुण्ठ, २३—लक्ष्मी, २४—सावित्री, २५—घोर, २६—वाराह, २७—वैराज, २८—गौरी, २९—माहेश्वर, ३०—पितृकल्प, । और मनु १४ हैं, जैसे :—स्वाम्भुव, २—स्वारोचिष, ३—औत्तमेय, ४—तामस, ५—रैवत, ६—चाक्षुष, ७—वैवस्वत, ८—सावर्ण्य, ९—दक्षसावर्णी, १०—ब्रह्मसावर्णी, ११—धर्मसावर्णी, १२—रुद्रसावर्णी, १३—देवसावर्णी, १४—इन्द्रसावर्णी है । और लोक या भुवन १४ हैं, जैसे१ भूर्लोक, २—भुवर्लोक, ३—स्वर्लोक (स्वर्ग), ४—महर्लोक, ५—जनलोक, ६—तपलोक, ७—सत्यलोक, (ये ऊपरके सात लोक हैं), और ८—अतल, ९—वितल, १०—सुतल, ११—तलातल, १२—महातल, १३—रसातल, १४—पाताल, (ये नीचेके ७ लोक हैं) । और भूलोकके ७ भाग हैं जिसको सप्तद्वीपा वसुमती कहते हैं । इसके इस प्रकार विभाग (द्वीप) ७ हैं जैसे :—१ जम्बू, २ प्लक्ष, ३ शाल्मलि, ४ कुश, ५ क्रौंच, ६ शाक और ७ पुष्करद्वीप हैं । जिनमें जम्बू द्वीपके भीतर ९ खंड हैं, जैसे :—१ इलावृत्तवर्ष, २ रम्यकवर्ष ३ हिरण्यवर्ष, ४ कुरुवर्ष, ५ हरिवर्ष, ६ किन्नरवर्ष, ७ भारतवर्ष, ८ भद्राश्ववर्ष, ९ केतुमालवर्ष ।

प्रत्येक ब्रह्माण्ड (सौर जगत्) में निम्न लिखित यह पद होने चाहिये जैसे :—ब्रह्मा १, विष्णु १, रुद्र १, दिक्पाल १०, आदित्य १२, रुद्र १२, ग्रह ९, वसु, ८, ३३ कोटि (प्रकार) देवता, (मनुष्य ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र आदि), यक्ष, गन्धर्व, किन्नर, भूत, पिशाच आदि राक्षस, स्वर्ग आदि ७ लोक, पाताल आदि नीचेके ७ लोक, सात समुद्र, सात द्वीप, सूर्य्य १, चन्द्रमा, १, नक्षत्र, तारा आदि, और पुण्यक्षेत्र, नदी, नद, पर्वत् आदि ॥

सृष्टि और प्रलयका वर्णन

वेदादि शास्त्रोंके अनुसार सृष्टिका रचयिता प्रधान पुरुष ईश्वर हैं । यह अपनी माया (शक्ति, प्रकृति) से १४ लोकोंकी सृष्टि करते हैं । पुरुषकी विभूति स्वरूप काल है और प्रकृतिकी विभूति प्रदेश है । देश और काल अविनश्वर और अनादि हैं । आदि काल प्रधान पुरुषकी विभूति है और आदि प्रवेश परा प्रकृति की विभूति है । आदि कालकी ३ विभूतियां हैं :—महाकाल काल और पिता । प्रकृतिकी विभूति—मातृभूमि, शरीर और माता हैं । महाकाल उसको कहते हैं जो प्राणीमात्रका संहार करता है और काल वह है जो दिन, मास, ऋतु, अयन, वर्ष, युग और कल्पोंके रूपमें परिणत है । उस कालका इस प्रकार विभाग है :—१०० त्रुटियोंका १ पर, ३० परका १ निमेष, १८ निमेष की १ काष्ठा, ३० काष्ठा की १ कला, ३० कला की १ घटिका २ घटिक का १ क्षण, ३० क्षणका १ दिन रात, सात दिन रात का १ सप्ताह, २ सप्ताहका १ पक्ष, २ पक्षका एक मास, २ मासका १ ऋतु, ३ ऋतुका एक अयन और २ अयनका एक वर्ष होता है । प्रदेश विभाग :—

६० विकलाकी १ कला, ६० कलाका १ अंश, ३० अंशका १ राशि, १२ राशियोंका १ राशिचक्र (३६ अंश) होता है। सत्ययुग १७२८००० वर्ष त्रेतायुग १२९६००० वर्ष, द्वापरयुग ८६४००० वर्ष और कलियुग ४३२००० वर्ष, यों सब युगोंका योग ४३२०००० वर्ष है—इसका नाम महायुग है।

जो देव कालका शासन करते हैं उनको मनु कहते हैं—७१ महायुगों का १ मन्वन्तर होता है (एक मनुके बाद दूसरा मनु शासन करते हैं)। ऐसे १४ मन्वतरों तथा इनके सन्धि सन्ध्यांश मिलकर १ कल्प होता है। इसकी वर्ष संख्या ४३२०००००० है। प्रत्येक ब्रह्माण्डमें ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र ये त्रिदेव क्रमसे सृष्टिकर्त्ता पालयिता और प्रलय करनेवाले होते हैं। इनमें सबसे छोटी आयुके ब्रह्मा, इनसे बड़े विष्णु और सबसे बड़े रुद्र देव हैं। ब्रह्माका १ दिन १ कल्प परिमाणका होता है। अर्थात् ४३२०००००० मानुष वर्षका और उतने ही वर्षोंकी उनकी रात्रि होती है। इस हिसाबसे ब्रह्मा अपने वर्षसे १०० वर्षतकजीवित रहते हैं अर्थात् ९३३१२००००००००००००० मानुष वर्ष तक सृष्टि करते रहते हैं—यही इनकी आयु है।

ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र ये तीन देव अन्य देवोंकी भांति साधारण देवता नहीं हैं। इनको मृत्यु साधारण जीवोंकी भांति नहीं होती है, किन्तु ये अपने २ सृष्टिकालिक दिनोंको पूरा करने पर प्रधान पुरुषमें मिल जाते हैं।

प्रलय

ब्रह्मा अपने दिनोंमें सृष्टि करते हैं और उनकी रात्रिमें प्रलय वा जगत्का, नाश हो जाता है। इसी प्रकार विष्णु और रुद्रकी रात्रियोंमें प्रलय होता है। जो प्रलय रुद्रकी रात्रिमें होता है उसीको महाप्रलय कहते हैं। और जो प्रलय विष्णु और ब्रह्माकी रात्रिमें होता है उसको नैमित्तिक प्रलय कहते हैं।

जीवोंके प्रारब्ध कर्मानुसार प्रत्येक लोकोंमें * ८४००००० योनियोंकी सृष्टि करते हैं। जिसमें मनुष्य भिन्न सब योनिथोंमें जीवगण कर्मोके फलके बल भोग करते हैं:—क्रियमाण कर्म्म करनेका उन्हें अधिकार नहीं। मनुष्य योनिमें जीवको भोग तथा क्रियमाण कर्म्म करने का अधिकार है।

सृष्टिके आरम्भमें ब्रह्मा पहिले मानसिक सृष्टिद्वारा देव, ऋषि आदिकोंको उत्पन्न करते हैं जिनको ब्रह्माण्डको चलाने आदि कार्यमें नियत करते हैं। उसके बाद ऐश्वरी सृष्टि (विना रज वीर्य्यके) द्वारा बीजमात्र प्रत्येक योनिके थोड़े जीवोंको उत्पन्न करते हैं—जिसका क्रम वेदादिमें वर्णित है। प्रलयके बाद विष्णु भगवानने स्वयं इच्छा की कि अब सृष्टि होवे, यह भाव उत्पन्न होतेही

---

* "जलजा नवलक्षाणि स्थावरा * लक्षविंशतिः। कृमयो रुद्रख्याकाः पक्षिणोदशलक्षम्। त्रिंशल्लक्षाणि पशवश्चतुर्लक्षाणि मानुषाः"॥ अर्थात् ९००००० जलज जीव, २०००००० स्थावर, ११००००० कृमियां, १०००००० पक्षिगण, ३०००००० पशुगण और ४००००० मनुष्य योनि हैं। मनुष्योंकी आयु १२० वष की, वृक्षोंकी ५००, हाथीकी १२० वानरोंकी ३००, घोड़ेकी ३२, व्याघ्रकी ६४, सर्पकी १०००, कछुवेकी १५००, गदहेकी २५, पिपीलिका की १, कुत्तेकी १२, बकरीकी १६, मृगकी २५ वृषभकी २४, ऊंटकी २५, गुद्धकी ४०००, पिंगलकी ३०००, जलधोक्षजकी ११५, तड़ाग, देवालय और कूपआदिकी १०००, मेढ़ककी ३००, बगलेकी ६००, वृश्चिक और गोहठीकी ८, पारावतकी १० वर्ष की आयु होती है।

उनकी नाभिसे कमल उत्पन्न हुआ और कमलसे ब्रह्मा उत्पन्न हुए तत्पश्चात् स्वर्गादि ७ ऊपर के लोक और नीचेके पाताल आदि सात लोकोंकी रचना किया जिनमें नीचेके सात लोकोंके ऊपर आठवां भूगोलका यों विभाग किया, जैसे:—जम्बूद्वीप, प्लक्षद्वीप, शाल्मलिद्वीप, कुशद्वीप, क्रौंचद्वीप, शाकद्वीप और पुष्करद्वीप ये सात द्वीप हैं । जम्बूद्वीपके भीतर इलावृत्त, रम्यक, हिरण्य, कुरु हरि, किन्नर, भारत, भद्राश्व और केतुमालवर्ष ये ९ खण्ड जम्बूद्वीपके हैं और भारतवर्षके भीतर ही ९ विभाग हैं, जैसे :—इन्द्रद्वीप, केशेरु, ताम्रपर्णी, गभस्तिमान्, नागद्वीप, सौम्य, गन्धर्व वरुण और नवम यही भारतवर्ष है । इसी भारतवर्षमें वर्ण व्यवस्था है और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र आदिवर्ण अपने २ वर्णोचित कर्म करते और वेद शास्त्रोंकी मर्यादाका पालन करना अपना धर्म समझते हैं—यहां सृष्टिकी आदिसे क्षत्रियवर्णके चक्रवर्ती राजे होते आये इस समय भी बहुतसे स्वतन्त्र क्षत्रिय राजे हैं जिनका वर्णन क्रमशः आगे किया जावेगा ।

क्षत्रिय तथा उनके पर्यायवाचक शब्द

क्षत्रिय जाति के विषय में लोग अनर्गल शंकायें किया करते हैं कि क्षत्रिय व राजपूत भिन्न २ जाति हैं । यह उनकी नितान्त भूल है, क्योंकि वेद में क्षत्रिय के लिये राजन्य शब्द आया है और स्मृतियों में क्षत्रिय, बाहुज, राजपुत्रादि शब्द आये हैं । हिन्दी भाषा ग्रन्थों में ठाकुर, राजपूत और क्षत्री शब्द आते हैं । सबही शब्द क्षत्रिय जाति के पर्य्यायवाची हैं । इन सबोंका अर्थ क्षत्रिय जाति है इसके विरुद्ध नहीं ।



सूर्य्य वंश वर्णन

शास्त्र समुद्र के मथन करने से यह सिद्ध होता है कि प्राचीन समय में दोही महाप्रतापी राज वंश राज्य करते थे । उन्हीं दो राजवंशों का नाम सूर्य्यवंश व चन्द्रवंश रामायण, महाभारत एवं पुराणादि में है और इन्हीं सूर्य्य चन्द्र वंशों के नाम से इनकी प्रसिद्धि भी थी, आज जिसको स्थूल दृष्टि से देखनेसे पता चलता है कि रामायण, महाभारत आदि में जो सूर्य्यवंश व चन्द्रवंश का श्रृंखलाबद्ध कुर्सिनामा है, इसमें भ्रम होता है कि यह वंशावली परस्पर विरुद्ध है । जैसे किसी पुराण में पुरूरवा के पांच पुत्र हैं और किसी में इनके आठ पुत्रोंका वर्णन और किसी में सात हैं, और इसी प्रकार किसी पुराण में सरसठ पीढ़ी बाद विवस्वान से लेकर दशरथ होते हैं और किसी पुराण में विवस्वान से बासठवीं पीढी में दशरथ हैं, और रामायण के अनुसार विवस्वान से पैंतीस पीढी बाद दशरथजी होते हैं । इस विभिन्नता का मुख्य कारण यही प्रतीत होता है कि ग्रन्थकर्त्ता ने जहां जिनकी आवश्यकता देखी वहां उनको लिखा है । यह लेखकों का प्रमाद है, क्योंकि किसी पुराण में सतायु

है और किसी में सत्यायु लिखा है। मैं यहां प्रसंगवश विष्णु पुराण का कुर्सिनामा देता हूं जिससे पाठकों को विदित होगा कि सूर्य्यवंश में किस क्रम से महापुरुष गण प्रसिद्ध हुए हैं।

१ ब्रह्मा
२ दक्षप्रजापति
३ अदिती (कन्या)
४ सूर्य्य
५ मनु

मनु के पुत्र: १ इक्षाकु, २ नृग, ३ धृष्ट, ४ शर्याति, ५ नरिष्यन्त, ६ प्रांशु, ७ नभाग, ८ नेदिष्ट, ९ करुष, १० पृध्न, ११ इला (कन्या), १२ वुध

६ इक्षाकु — १ ७ विकुक्षी-, (शशाद); २ ३ ४ निमि—दन्त—शकुनी
- ७ विकुक्षी-, (शशाद) — ८ परञ्जय (कुकुत्स) — ९ अनेमा — १० पृथु — ११ विश्वगश्व — १२ आर्द्र — १३ युवनाश्व — १४ श्रावस्त — १५ बृहदश्व
- निमि — जनक (वैदेही मिथि) — ९ नन्दीवर्धन — १० सुकेतु — ११ देवरात — १२ बृहदुक्थ — १३ महावीर्य — १४ सत्यधृति — १५ धृष्टकेतु

शर्याति — सुकन्या (च्यवनपत्नी); आनर्त — रेवत — रैवत (कुकुदमी) — रेवती (बलदेवपत्नी)

नभाग — ७ नाभाग — ८ अम्बरीष — ९ विरूप — १० पृषदश्व — ११ रथीतर

नेदिष्ट — ७ नोभाग — ८ भलन्दन — ९ उदारकीर्ति — १० प्रजानि — ११ अविविंश — १२ विविंश

वुध — पुरुरवा

१५ बृहदश्व
|
१६ कुवलाश्व
(धुन्धुमार)

१७ दृढाश्व चन्द्राश्व
| कपिलाश्व
|
१८ वार्याश्व
|
१९ निकुम्भ
२० संहताश्व
|
२१ कुशाश्व
|
२२ प्रसेनजित
|
२३ युवनाश्व
|
२४ मान्धाता–बिन्दुमती
|१ |२ |३
२५ पुरुकुत्स, अम्बरीष, मूचुकुन्द
|
२६ त्रसदस्यू
|
२७– सन्तुत
|
२८ अनरण्य
|
२९ पृषदश्व
|
३० हर्यश्व
|
३१ सुमंत्र
|
३२ त्रिधन्वा

३३ त्र्य्यारुण
(सत्यव्रत)
|

१५ धृष्टकेतु
|
१६ हर्यश्व
|
१७ मरु
|
१८ प्रतिबन्धक
|
१९ कृतरथ
|
२० कृति
२१ विबुध
|
२२ महाधृति
|
२३ कृतिरार्थ
|
२४ महारोमा
|
२५ सवर्णरोमा
|३
२६ ह्रस्वरोमा
|
२७ शिरध्वज कुशध्वज
(जनक)
|
२८ भानुमान–सीता
|
२९ शतद्युम्न
|
३० शुचि
|
३१ उर्ध्यावह
|
३२ सत्यध्वज
|
३३ कूति
|
३४ अञ्जन
|

१२ विविश

१३ खनिनेत्र

१४ अतिविभूति
|
१५ करन्धम
|
१६ अविक्षि
|
१७ मरुत्त
१८ नरिष्यन्त
|
१९ दम
|
२० राजवर्धन
|
२१ सुधृति
|
२२ नर
|
२३ केवल
|
२४ बन्धूमान

२५ वेगमान
|
२६ बुध
|
२७ तृणबिन्दू
|
२८ विश्वबल-इलिलि (कन्या)
|
२९ हेमचंद्र
|
३० सुचन्द्र
|
३१ धूम्राश्व
|
३२ श्रीञ्जजय
|

३४ त्रिशङ्कू
|
३५ हरिश्चन्द्र
|
३६ रोहिताश्व
|
३७ हरित
|
३८ चंचु
|
३९ विजय-वसुदेव
|
४० रुरुक
|
४१ वृक
|
४२ बहु
|
४३ सगर
|
४४ असमञ्जय
|
४५ अंशुमान
|
४६ दिलीप
|
४७ भगीरथ
|
४८ श्रुत
|
४९ नाभाग
|
५० अम्बरीष
|
५१ सिन्धुद्वीप
|
५२ अयुताश्व
|

३५ ऋतुजित
|
३६ अरिष्टनेमि
|
३७ श्रुतायु
|
३८ सूर्य्याश्व
|
३९ सञ्जय
|
४० क्षेमारि
|
४१ अनेना
|
४२ मीनरथ
|
४३ सत्यरथ
|
४४ सत्यारथि
|
४५ उपगु
|
४६ श्रुत
|
४७ शश्वत
|
४८ सुधन्वा
|
४९ सुभाष
|
५० सुश्रुत
|
५१ जय
|
५२ विजय
|
५३ ऋत

३३ सहदेव
|
३४ कृशाश्व
|
३५ सोमदत्त
|
३६ जनमेजय
|
३७ सुमति

६५ अज
|
६६ दशरथ
|
६७ राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न
|
६८ कुश-लव | तक्ष-पुष्कर | अङ्गद-चन्द्रकेतु सुबाहु-शूरसेन
|
६९ अतिथि
|

५३ ऋतुपर्ण
५४ सर्वकाम
५५ सुदास
५६ सौदास (कल्माषपाद)
५७ अश्मक
५८ मूलक
५९ दशरथ
६० ईलि विलि
६१ अश्वसह
६२ दिलीप (खट्वांग)
६३ दीर्घबाहु
६४ रघु
६५ अज

५४ सनय
५५ वीतहव्य
५६ सञ्जय
५७ क्षेमाश्व
५८ धृति
५९ बहुलाश्व
६० कृति

७० निषध
७१ नल
७२ नभ
७३ पुण्डरीक
७४ क्षेमधन्वा
७५ देवानीक
७६ अहिनगु
७७ रूप
७८ रुरु
७९ पारियात्र
८० दल
८१ छल
८२ उक्थ

८३ वज्रनाभ
८४ शङ्खनाभ
८५ व्युथिताश्व
८६ विश्वसह
८७ हिरण्याक्ष
८८ पुष्य
८९ ध्रुवशक्ति

९८ विश्रुतवान
९९ बृहद्बल
१०० बृहद्क्षेण
१०१ गुरुक्षेप
१०२ वत्स
१०३ वत्सव्यूह
१०४ प्रतिव्योम
१०५ दिवाकर

११४ सुवर्ण
११५ कृमित्रजित
११६ बृहद्भ्राज
११७ धर्मी
११८ कृतञ्जय
११९ रणञ्जय
१२० सञ्जय
१२१ शाक्य

९० सुदर्शन
|
९१ अग्निवर्ण
|
९२ शीघ्र
|
९३ म०
|
९४ प्रसुश्रुत
|
९५ सुगन्धि
|
९६ अमर्ष
|
९७ महस्वान

|
१०६ सहदेव
|
१०७ बृहदश्व
|
१०८ भानुरथ
|
१०९ सुप्रतीक
|
११० मरुदेव
|
१११ सुनक्षत्र
|
११२ किन्नर
|
११३ अन्तरिक्ष

१२२ शुद्धोदन
|
१२३ रातुल
|
१२४ प्रसेनजित
|
१२५ क्षुद्र
|
१२६ कुन्डक
|
१२७ सुरथ
|
१२८ सुमित्र

× यहींसे गहलौत, कूशवाहा और राठौर क्षत्रिय हुये हैं जो आगे लिखा जायगा।

चन्द्रवंशवर्णन।

सूर्य्य व चंद्र वंश में परस्पर अविच्छिन्न सम्बन्ध है। इसमें सन्देह नहीं कि पुराण और इतिहासोंके देखनेसे पता चलता है कि वैवस्वत मनु की पुत्री इला से चन्द्रमाका सम्बन्ध हुआ जिससे वुध की उत्पत्ति हुई, और किसी २ पुराण का मत है कि इला वुधसे व्याही गयी और वुधका जन्म वृहस्पति की स्त्रीसे चन्द्रमाके संसर्ग होनेसे हुआ, इसमें विशेष सन्देह करना व्यर्थ प्रतीत होता है, इस लिये परस्पर भिन्न सा प्रतीत होता है। पुराणोंके अवलोकन करनेसे मालूम होता है कि सूर्य्य वंश की राजधानी जैसे अयोध्या थी उसी तरह चन्द्र वंश की राजधानी जो इलाके नाम पर प्रसिद्ध इलाहाबाद थी। इसी वंशमें, प्रख्यात राजा हस्ति के नाम पर हस्तिनापुर (दिल्ली) बसा। पुनः इस वंशमें कुरुके नाम पर कुरुक्षेत्र प्रसिद्ध हुआ, जिस स्थान में सबसे बड़ा युद्ध महाभारत हुआ था। फिर इस वंशमें काश्य राजाके नामसे बारानसी शहरसे बदल कर काशीपुरी प्रसिद्ध हुई। तत्पश्चात् इस वंशमें चेदी (मगध) का राजा शिशुपाल प्रसिद्ध बलवान हुआ जिसको स्वयं श्रीकृष्णचन्द्रने सुदर्शन चक्रसे मारा था। पुनः इस वंशमें प्रसिद्ध काशीपुरीका राजा दिवोदास महा धर्मात्मा हुये जिन्हें गहर्वरकी उपाधि मिली थी जिनके वंशज गहर्वार क्षत्रिय कहलाये (स्कन्ध पुराण काशी खण्ड अ० ४३)

पुनः राजा दुष्यन्तकी स्त्री शकुन्तलासे राजा भरतकी उत्पत्ति हुई जिनके नाम पर संसारका शिरमौर यह प्राचीन भारतवर्ष प्रसिद्ध है। इस बातको माननेके लिये सर्व देशवासी तैयार हैं।

अब मैं महाभारतके अनुसार इस चन्द्र वंशका कुर्सिनामा लिखता हूं, जिससे पाठकोंको विदित होगा किस क्रमसे चन्द्रवंशी राजा लोग हुये हैं।

१ (इला)
|
२ पुरुरवा
|

३ आयु, धीमान, अमावस्यु, दृढ़ायु, बलायु, शतायु।
|
४ नहुष, वृद्धशर्म्मा, रार्ज, गय, अनेना।
|
५ यति
|
६ ययाति, संयाति, अर्यति, अयति, ध्रुव।
|
७ यदु, तुर्वसु, द्रुह्यु, अनु, पुरु।
|
८ प्रवीर, ईश्वर, रौद्राश्व
|
९ मनस्यु
|
१० शक्त, संहनन, वाग्मी।
|
११ अङ्गभानु
|
१२ ऋचेयु (अनाधृष्ट)
|
मतिनार
|
१३ तस्यु—महाद्युति—अतिरथ—द्रुघ्नु
|
१४ इलिन
|
१५ दुष्यन्त—शूर—भीम——प्रवसु—वसु
|
१६ भरत
|
१७ भूमन्यु
|
१८ सुहोत्र—सुहोता—सुहवि—सुयजु—ऋचीक—दिविरथ
|
१९ अजमीढ़—सौमीढ़—पुरुमीढ़
|
२० ऋक्ष—दुष्यन्त—परमेष्ठी जह्नु जल-रूपिण
|
२१ स्वरण—तप्ती
|
२२ कुरु
|
२३ अविक्षित—अभिषत्—चैत्ररथ—मुनि—जनमेजय
| |

२४ परिक्षित–सरलाश्व–आदिराज–विराज–शाल्मलि–उच्चैश्रवा–भङ्गकार–जितारि

|

२५ कक्षसेन–उग्रसेन–वीर्यवान–चित्रसेन–इन्द्रसेन–सुसेन–भीमसेन

|

२६ जनमेजय

|

२७ धृतराष्ट्र–पाण्डु–बाह्लिक–निषध–जात्वुनद–कुण्डोदर–पदाति–वसति
| कुन्डिक–हस्ती–वितर्क–क्राथ–कुन्डीन हविश्रवा–इंद्राभ–भूमन्यु

|

२८ प्रतीप—धर्मनेत्र—सुनेत्र

|

२९ देवापि शान्तनु—वाह्लिक

|

३० विचित्रवीर्य—चित्राङ्गद (सत्यवतीसे)

|

३१ धृतराष्ट्र——पाण्डु——विदुर (दासीसे)

१ दुर्योधन २९ युधिष्ठिर भीम अर्जुन नकुल सहदेव

२ दुःशासन

३ विकर्ण यौधेय विन्ध्य घटोत्कच सर्वग शतानीक निरमित्र

४ चित्रसेन श्रुतकर्मा सुहोत्र

५ सुस्सह ६ दुःशल ७ जलसन्ध ८ सम ९ सह १० विन्दु
११ अनुविन्दु १२ दुर्धर्ष १३ सुबाहु १४ दुव्यधर्ण १५ दुमषर्ण
१६ दुर्मुव १७ दुष्कर्ण १८ कर्ण १९ विविंशति २० विकर्ण २१ शल
२२ सत्य २३ सुलोचन २४ चित्र २५ उपचित्र २६ चित्ररथ
२७ चारुचित्र २८ शरासन २९ दुर्मुख ३० दुर्विगाह ३१ विवत्सु
३२ विटानत ३३ उर्णनाभ ३४ सुनाभनन्द ३५ उपनन्द ३६ चित्रवाण ३७ चित्रवर्मा ३८ सुबर्म्मा ३९ दुविमोचन ४० अयोबाहु ४१ महाबाहु ४२ चित्राङ्ग ४३ चित्रकुण्डल ४४ भीमवेग ४५ भीमबल ४६ वलाकी ४७ वलवर्धन ४८ उग्रायु
४९ सुषेण ५० वृकोदर ५१ महोदर ५२ चित्रायुध ५३ निवङ्गी
५४ पाशी ५५वृन्दारक ५६ दृढबर्म्मा ५७ दृढक्षत्र ५८ सोमकीर्ति ५९ अनुदर ६० दृढसन्ध ६१ जरासन्ध ६२ सत्यधर्म
६३ सह ६४ सुवा ६५ उग्रश्रवा ६६ उग्रसेन ६७ सेनानी ६८ विशालाक्ष ६९ दुर्धर ७० दृढ़हस्त ७१ सुहस्त ७२ बातवेग
७३ सुवर्चा ७४ आदित्यकेतु ७५ वत्रहाशी ७६ नागदत्त ७७ अग्रपायी ७८ कवच ७९ क्रथन ८० कुण्डी ८१ कुण्डधार
८२ धनुर्धर ८३ उग्र ८४ भीमरथ ८५ वीरबाहु ८६ अलोलुप
८७ अभय ८८ रौद्रकर्म्मा ८९ अनाधृष्य ९० कुण्डभेदी ९१ वीरावी ९२ चित्रकन्व ९३ प्रमाथी ९४ दिर्घरोमा ९५ दीर्घबाहु ९६ कनकध्वज ९७ बिरजा..........
९८ दुश्शीला (कन्या)

२९ अर्जुन

३० अभिमन्यु

|

३१ परिक्षित

|

३२ जनमेजय

|

३३ शतानिक

|

३४ शंकुकर्ण

|

३५ अश्वमेधदत्त

अग्नि वंश वर्णन।

सूर्य और चन्द्रमासे जिस प्रकार चन्द्र और सूर्य्य वंश उत्पन्न हुए हैं। वैसे ही अग्नि वंश अग्निसे उत्पन्न हुआ है।

इनकी उत्पत्ति के सम्बन्धमें भिन्न २ प्रकार की बातें कहीं जाती हैं जिनमें मुख्य भविष्य पुराण तथा चन्दबरदाई कृत रासो ग्रन्थ हैं।

इन दोनों का कुछ प्रमाण उल्लेख किया जाता है :—

तब सुरिष्य वासिष्ठ, कुण्ड रोचन रचिता मह।
धरिय ध्यान यज्ञ होम, मध्य बंदी सुर सामह॥
तब प्रगटचो प्रतिहार, राज तिन ठौर सुधारिय।
पुनि प्रगटचो चालुक्य, ब्रह्मचारी व्रत धारिय॥
पवांर प्रगटचो वीरवर, कह्यो रिष्य परमार धन।
त्रय पुरुष जुद्ध कीनो अतुल, महप्पस पुद्दंत तन॥ (रासो ग्रंथसे)

श्लोक— एतस्मिन्नेव काले तु कान्यकुब्जो द्विजोत्तमः।
अर्वुदे शिखरं प्राप्य ब्रह्महोममथाकरोत्॥ ४५॥
वेदमंत्रप्रभावाच्च जाताश्चत्वारः क्षत्रियाः।
प्रमरस्सामवेदीच चपुहानियजुर्विदः ॥ ४६॥
त्रिवेदी च तथा शुक्लोऽथर्वा स परिहारकः।
ऐरावतकुले जातान्गजानारुह्यते पृथक्॥ ४७॥
अशोकं स्ववशं चक्रस्सर्वे बौद्धा विनाशिताः।
चतुर्लक्षाःस्मृता बौद्धा दिव्यशस्त्रैः प्रहारिताः॥ ४८॥
अवन्ते प्रमरो भूपश्चतुर्योजन—विस्तृताम्।
अवन्तीनाम पुरीमध्यास्य सुखितोऽभवत्॥ ४९॥
पु० प्र० प्र० २ अ० ६.

चित्रकूटगिरेर्देशे परिहारो महीपतिः।
कलिञ्जरपुरे रम्ये मक्रोशायतनं स्मृतम्॥ १॥
अध्यास्य ब्रह्महन्ता स सुखितोऽभवदर्जितः।
राजपुत्राख्यदेशे च चपुहानिर्महीपतिः॥ २॥
अजमेरपुरं रम्यं विधिशोभासमन्वितम्।
चातुर्वर्ण्ययुतं दिव्यमध्यास्य सुखितोऽभवत्॥ ३॥
शुक्लो नाम महीपालो गत आनर्त्तमण्डले।
द्वारका नाम नगरीमध्यास्य सुखितोऽभवत्॥ ४॥
३ भ० पु० प्र० प० ड अ ७

भाषा—कहते हैं जब भारतमें महाराजा अशोक के समय (२००० वर्ष हुए) जब वैदिक धर्म का सर्वनाश होने लगा था, और देशमें बौद्धों के कारण प्रजामें हाहाकार मची थी। ठीक उसी समय आबू पहाड पर एक कान्यकुब्ज ब्राह्मणने वेदविधिसे अग्निकुण्ड तयार कर वैदिक मंत्रोंसे हवन कुण्डमें ब्रह्म होम नामक यज्ञ किया था, जिसके प्रभावसे उस कुण्ड से चार आहुतियों द्वारा क्रमसे प्रमर, चपुहानि, परिहार, और शुक्लाङ्गी क्षत्रिय राजा उत्पन्न हुए। जिनमेंसे, प्रमार सामवेदी, चपुहानी यजुर्वेदी परिहार अथर्ववेदी और शुक्लाङ्गी त्रिवेदी हुए। इसके बाद

ऐरावती हाथी पर चारों वीरगण सवार हो महाराजा अशोकके पास जाकर इनको अपने वशमें किया, और ४ लाख बौद्धोंको अपने दिव्य अस्त्रोंसे संहार किया और राजा प्रमरने ४ योजन विस्तृत अम्बावती नगरकी प्रतिष्ठा की, और उसमें आप रहने लगे। परिहार राजाने चित्र-कूट गिरि पर कालिंजर नामक रमणीक स्थानमें अपना निवास किया। इसी प्रकार राजा चपुहानिने राजपुताना प्रदेश के अजमेर स्थानमें अपनी राजधानी स्थापित की और शुक्लाङ्गी राजाने आनर्त्तमण्डलके द्वारका नगरीमे अपनी राजधानी स्थापित की और वहीं रहने लगे।

गोत्र प्रवर निर्णय।

ऐसे तो आर्य शास्त्रोंमें चारों वर्णके लिये गोत्रका विधान आया है परन्तु द्विजोंके लिये ही गोत्र आवश्यक है, क्योंकि आर्य शास्त्रोंमें ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्योंहीके लिये श्रौत, स्मार्त कर्म्मोंका व्यवहार बतलाया गया है। इसी लिये द्विज मात्रमें अपने २ गोत्रके साथ प्रवर (१–२–३ और ५) का व्यवहार है क्योंकि शास्त्रकारोने सगोत्रीको कन्या देना वार्जित किया है। गौतमने लिखा है जिसके साथ प्रवर एक हो उसके कुलमें ब्याह सम्बन्ध नहीं करना चाहिये। इन सब विषयोंमें अडचन पडनेका मुख्य कारण द्विजोंको परंपरासे अपने २ गोत्रके साथ प्रवरोंका जानना आवश्यक है। शंकाका कारण गोत्र जान लेनेपर प्रवरका होता है, क्योंकि किसी द्विजकी यदि काश्यप गोत्र है और विवाह करनेके लिये काश्यप गोत्र वालेसे सम्बन्ध करना है तो यहाँ भेद जाननेवाला प्रवर ही होता है। जैसे एक काश्यप गोत्रवालेको ३ प्रवर है और दूसरेको ५ है तो संबन्ध करना आवश्यक है, यदि दोनोंके तीन ही तीन या पांचहीपांच पाया जाता है तो सम्बन्ध नहीं करना चाहिये, इसीलिये––

गोत्र प्रवर आवश्यक है। गोत्रके विषयमें प्रायः लोग यह समझते हैं कि जिन २ ऋषियोंसे जिस २ वर्णकी उत्पत्ति हुई, उस २ वर्णका वह २ गोत्र उन २ ऋषियोंके नामसे प्रसिद्ध है। शास्त्रानुसार यह बात ब्राह्मणोंके लिये तो ठीक है; परन्तु क्षत्रिय और वैश्योंके लिये ठीक नहीं है, जैसा कि शास्त्रोंमें लिखा है।

जमदग्नि, भरद्वाज, विश्वामित्र, अत्रि, गौतम, वशिष्ठ और अगस्त्य ये ऋषिगण गोत्रके प्रवर्त्तक हैं। इन मुनियोंके नाम और इनके पुत्र पौत्र प्रभृतिके नामसे ही गोत्र प्रसिद्ध हैं।

"प्रवर" शब्दका अर्थ माधवाचार्य्यने इस प्रकार किया है कि गोत्र प्रवर्त्तक ऋषियोंका परस्पर भेद उत्पादन करनेवाले ऋषियोंके नाम प्रवर हैं; जैसे कश्यप दो भिन्न २ व्यक्तियों और दो भिन्न २ गोत्रोंके प्रवर्त्तक हैं। सुतरां दोनो ही गोत्र काश्यप नामसे प्रसिद्ध हैं किन्तु एक काश्यप गोत्र वालेके तीन प्रवर हैं और दूसरेके पांच हैं। यहा दोनोंमें भेद जतलाने वाला प्रवर ही है, क्योकि एक कश्यप गोत्रीके ३, दूसरेके पांच प्रवर हैं।

जमदग्निर्भरद्वाजो विश्वामित्रोऽत्रिगौतमौ। वसिष्ठः काश्यपागस्त्यौ मुनयो गोत्रकारिणः॥ इतिस्मृतेः गोत्राणि तन्नामक गोत्रभागीति। वंशपरम्परा प्रसिद्ध पुरुष ब्राह्मणरूपं गोत्रम्। तेन काश्यपं गोत्रं यस्य स काश्यपगोत्रः। प्रवरस्तु गोत्रप्रवर्त्तकस्य मुनेर्व्यावर्त्तको मुनिगण इति माधवाचार्य्यः। एवं यद्यपि राजन्यविशांप्रातिस्विकगोत्राभानात् प्रवराभावः। तथापि पुरोहित-गोत्रप्रवरौ वेदितव्यौ तथा च "यजमानस्यार्षेयान् प्रवृणीते" त्युक्त्वा पौरोहित्यात् राजन्य-विशां प्रवृणीते आश्वलायनः। इति मिताक्षरा। अतएव असमानार्षगोत्रजामिनि ब्राह्मणादि-वर्णत्रयविषयमिति सम्बन्धविवेकः।

गोत्र और प्रवर की जैसी परिभाषा की गयी है इससे यद्यपि क्षत्रिय और वैश्योंको अपने २ गोत्रका अभाव होनेसे प्रवरका भी अभाव सिद्ध होता है। परन्तु तो भी क्षत्रिय और वैश्योंको अपने २ पैतृक पुरोहितोंके गोत्र और प्रवरके अनुसार अपना २ गोत्र प्रवर समझना चाहिये।

आश्वलायन सूत्रमें यह बात कही गई है। जैसे यज्ञादि कार्योंमें यजमानोंको गोत्र, प्रवरका प्रयोग करना चाहिये। इस भांति परस्पर क्षत्रिय और वैश्योंके यज्ञादि कार्योंमें उनके पुरोहित सम्बधी गोत्र और प्रवरका प्रयोग करें।

अतएव सम्बन्ध विवेककारने कहा है कि समान गोत्र और समान प्रवर उत्पन्न कन्याके साथ विवाह न करे। सो ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्योंके लिये ही यह नियम है न कि शूद्रोंके लिये। ऐसे तो इस पुस्तकमें मैंने प्रत्येक वंशके शाखा, सूत्र लिखे हैं किन्तु बहुधा ऐसा देखनेमें आता है कि किसी २ वंशके क्षत्रियोंके पुरोहितोंके गोत्रके अनुसार अपना गोत्र भी बदल गया है लेकिन प्रवरका बोध प्राय: उनको नहीं रहता है। इस लिये यहां पर गोत्र प्रवर प्रदर्शक चक्र देना आवश्यक समझा है; कि क्षत्रिय बन्धुवर्ग इसे देख कर लाभ उठावेंगे; तत्पश्चात् सूर्य्य वंशी और चन्द्र वंशी क्षत्रियोंको सह्याद्रि खण्डमें लिखे अनुसार गोत्रकी सूची देकर उनके प्रवर लिखेंगे।

गोत्र प्रवर प्रदर्शक चक्र।

	गोत्र ऋषि	प्रवर ऋषि।
१	शाण्डिल्य	शाण्डिल्य, असित देवल।
२	काश्यप	काश्यप, अवत्सार, नैध्रुव।
३	भारद्वाज	भारद्वाज, बार्हस्पत्य, अङ्गिरस।
४	अगस्त्य	अगस्त्य दधीचि, जैमिनि।
५	गौतम	गौतम, वशिष्ट, बार्हस्पत्य।
६	शुनक	शुनक, शौनक, गृत्समद।
७	कात्यायन	अत्रि, भृगु, वशिष्ठ।
८	वशिष्ठ	वशिष्ठ, अत्रि, सांकृति।
९	अत्रि	अत्रि, आत्रेय, शातातप।
१०	जामदग्न्य	जामदग्न्य, और्व्य, वशिष्ठ।
११	विश्वामित्र	विश्वामित्र, मरीची, कौशिक।
१२	अङ्गिरस	आङ्गिरस, वशिष्ठ बार्हस्पत्य।
१३	कौशिक	कौशिक, अत्रि, जामदग्नि।
१४	वासुकी	अक्षोभ्य, अनन्त, वासुकीराज।
१५	काञ्चन	अश्वत्थ, देवल, देवराज।
१६	सांकृति	सांकृति, अत्रि, अव्याहार।
१७	अनावृकाक्ष	गार्ग्य, गौतम, वशिष्ठ।
१८	सौंकालिन	सौकालिन, अङ्गिरस, बार्हस्पत्य।
१९	कौण्डिन्य	कौण्डिन्य, स्तिमिक, कौल।
२०	कृष्णात्रेय	कृष्णात्रेय, आत्रेय, व्यास।
२१	आत्रेय	आत्रेय, शातातप, सांख्य।

२२	वात्स्य	
२३	सावर्ण्य	और्व्य, च्यवन, भार्गव जाम-
२४	सोपायन	दग्न्य, अप्नुवान।
२५	मौद्गल्य	
२६	गौतम	गौतम, आङ्गिरस, अप्यसार, बार्हस्पत्य, नैध्रुव।
२७	शक्ति	
२८	पराशर	शक्ति, पराशर, वशिष्ठ।
२९	वृहस्पति	वृहस्पति, कपिल, पर्व्वण।
३०	विष्णु	विष्णु, वृद्धि, कौरव।
३१	कुशिक	कुशिक, कौशिक, विश्वामित्र।
३२	गर्ग	गार्ग्य, कौस्तुभ, माण्डव्य।
३३	वृद्धि	कुरु, आंगिरस, बार्हस्पत्य।
३४	अव्य	अव्य, वलि, सारस्वत।
३५	जैमिनि	जैमिनि, उतथ्य, सांकृति।
३६	काण्व	काण्व, अश्वत्थ, देवल।
३७	आलव्यायन	आलव्यायन, शालङ्कायन, धृत कौशिक।
३८	धृतकौशिक	धृतकौशिक, कुशिक, कौशिक।
३९	काण्वायन	काण्वायन; अंगिरस, बार्हस्पत्य, भारद्वाज, अजमीढ़।
४०	वैयाघ्रपद्य	सांकृति।
४१	वैयाघ्रप	सांकृति।
४२	रोहित	भार्गव, नीलोहित, रोहित।

सूर्य्यवंशी क्षत्रियोंका वर्णन।

गहलौत—सूर्य **वंशी**—**गोत्र**—गौतम, प्रवर तीन—गौतम, वशिष्ठ, बार्हस्पत्य, **कुलदेवी**—चण्डिका या वाणमाता, **गुरु**—वशिष्ठ, **ऋषि**—हारित, **इष्ट**—एकलिङ्गजी **वेद**—साम, **शाखा**—कौथुमी, **सूत्र**—गोभिल गृह्यसूत्र, **झण्डा**—लाल सुनहरी, सूर्य्यका चिह्न, **नदी**—सरयू।

इस वंशका निकास प्रातस्मरणीय मर्य्यादापुरुषोत्तम महाराज श्रीरामचन्द्रजीके बड़े पुत्र कुशके उनसठवीं पीढीके राजा सुमित्रसे है, जिसको इस वंशके माननीय पुरुष लोग मानते हैं। इस बारेमें अनेक मतभेद हैं कि कहीं कहीं लेखक लोगोंने लिखा है कि लवसे इस वंशका निकास है जो कि इतिहासके विरुद्ध जान पड़ता है, क्योंकि खड्गविलास प्रेसकी छपी "टाड-राजस्थान" के पांचवें प्रकरणकी टिप्पणीमें रायबहादुर पण्डित गौरीचन्द्र हीरा झा जीने कुश हीसे इसका निकास लिखा है। जो हो इतिहासोंमें परस्पर विरुद्ध भलेही हो परन्तु राणा खान-दानका निकास अवश्यही श्रीरामचन्द्रके पुत्र कुशके वंशसे है। कहा जाता है, कि इस वंशके प्रथम पुरुष कनकसेन लाहौरसे कठियावाड़ आके प्रमर वंशके राजाको जीतकर विक्रम संवत् १९९ में बीर नगर बसाया। इन कनकसेनकी चौथी पीढीमें विजयसेन हुए जिन्होंने विजय नगर बसाया (वर्तमान धोलागीर)। इसके सिवाय विदर्भ और बलभीपुरको बसाया। विजयसेनकी राज-धानी बलभीपुरमें थी। सं. ५८१ में वह शिलादित्य राजा थे जिनपर विदेशी शत्रुओंने आक्र-

मण किया और छलसे धोखा देकर उनको मार डाला उनकी रानियां सब सती हो गयीं परन्तु एक रानी बच रही थी जो उस समय अपने पिताके यहां पुत्रार्थ देवी दर्शनको गयी हुई थी जब वहांसे लौटी हुई आरही थी तो मार्गमें यह शोक समाचार किसीके द्वारा पाकर अधीर होकर रोने लगी और सती होनेके लिये उद्यत हो गई, परन्तु वीरनगरकी एक ब्राह्मणी कन्याके सात्वना देनेसे अपने पतिके वंशको कायम रखनेके लिये प्रसवकालतक रहना स्वीकार किया। तत् पश्चात् मलिया प्रान्तके पहाडी गुफामें वह रहने लगी। कुछ दिनके उपरान्त उसके गर्भसे एक बालक पैदा हुआ जिसका नाम **केशवादित्य** पड़ा। गिरि गुफामें रक्षणार्थ रहनेके कारण इसका नाम **गहलौत** पड़ा। इस वंशमें **राहपजीका वंशज सिसोदिया** कहलाये। इस वंशमें बडे २ प्रतापी राजा हुये हैं, जिनकी उच्च कीर्त्तिका गान करना सूर्य्यको दीपक दिखाना है। इस वंशके मुकाबले राजस्थानमें कोई भी क्षत्रिय गौरवशाली नहीं है। इस वंशकी उज्ज्वल कीर्तिका गान सारे भारतवासी क्षत्रियवंश तथा हिन्दू जाति करती है।

इस **गहलौत** राजवंशकी २४ शाखा तथा अनेक प्रशाखायें हैं। जिन्हें विस्तार भयसे नहीं लिखते। शाखा उसे कहते हैं जो प्रसिद्ध पुरुष या प्रसिद्ध स्थानोंके नामसे हुआ करती है। इस वंशकी शाखा प्रशाखाओंका गोत्र कहीं २ इस प्रकार है, जैसे वैजपायण-प्रवर तीन-कच, भज, मेष और कहीं काश्यप भी कहते हैं।

२४ शाखा इस प्रकार हैं:--

	नाम		स्थान		नाम		स्थान
१	अहाड़िया	..	डुंगरपुर।	११	सांगवत	..	देवगढ़ करेड ठिकाना
२	माङ्गलिया	..	मरुभूमि।	१२	क्षेमावत	..	राणा मोकलजी से देवलिया प्रतापगढ।
३	शिसोदिया	..	मेवारमें।	१३	सहावत	..	सुहाके-धमोधर देवलि के खाप में।
४	पिपांड़ा	..	माड़वार।	१४	जगमालोत	..	जगमालकेजालपुरमें।
५	चन्द्रावत	..	रामपुरराव।	१५	कन्हावत	..	कान्हजीके अमरगढ़।
६	गोरखा (मलोजीकेवंश)		(नेपाल)	१६	शक्तावत	..	शक्ति सिंहके भिंडर आदि ठिकाना है। आदि ठिकाना है।
७	लुसावा	..	......	१७	राणावत	..	नाथजी के जोला वास में।
८	चूडावत	..	(राणालाखाजीके) चितौड़।				
९	कृष्णावत	..	चुण्डावतोंमें मुख्य सळुवर।				
१०	जगावत	..	पतोजी इस खापमें हुये।				

१८ राणावत भीमसिंहके रणमंजोरके पास टोडाका राजा। ....

१९ राणावत सूरजमलके। शाहपुराके राजधिराज हैं।

२० राणावत संग्राम सिहोत अर्जुनसिंह के, शिव रत्तीमें जो वर्तमान महाराजा फतहसिंह जी देव के, सी. आई. उदयपुर की गद्दीपर १८८१ में विराजे थे।

२१ रुद्रोत रुद्रसिंह के सिरोही के सेन वास में।

२२ नगराजोत नगराजके मालवाके रोल ग्राममें।

२३ विरमदेवोत वीरमदेवके। सन वाड हमीरगढ़ और खैराबाद।

२४ रणमलोत शिसोदिया-कल्याणपुर (प्रतापगढ़)।

अब हम इनकी मुख्य शाखाओंका व्याह सम्बन्ध लिखते हैं। गहलोत सिसोदिया, पीपाड़ा आदिका।

राजपुतानेमें राठौर, पड़िहार, कछवाहा, चाहव, चौभान, वगैरेहकी कन्या लेते देते हैं—और अलीगढ़ में या आगरा, मथुरा वगैरेरहमें कछवाहा, सुलंकी, पंवार, चौहान, राठौड़, वड़गूजर कटहरिआ, पुण्डीर, सिकरवार वगैरहमें कन्या लेते देते हैं।

कछबाहा—गोत्र-गौतम, **प्रवर**-तीन, गौतम, वशिष्ठ, बार्हस्पत्य, **कुलदेवी** चंडिका या जमधायमाता, सूर्य्य वंश वेश, वेद-साम, शाखा-कौथुमी, सूत्र गोभिल गृह्य इष्ट श्रीरामचन्दजी, **झण्डा**-पञ्च रंगा।

इस श्रेष्ठ वंशका निकास मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जीके वंशज सुमित्र से है। कुशके उन्सठ पीढी बाद राजा सुमित्र हुये जिनके कई पुत्र थे, जिनमें एक लड़केका नाम कूर्म जी था और इनसे कच्छपजी हुए उस राजा के नामके कारण कछवाहा संज्ञा हुई। इस वंशमें क्रमशः बडे २ प्रसिद्ध राजे महाराजे होते आये हैं जिनमें एक राजाका नाम सूर्य्यदेव था जिन्हें लोक में सुनहपाल नाम से कहा करते थे। इन्होंने ही प्रसिद्ध ग्वालियर का दुर्ग बनवाया था, जो परिहारोंसे युद्ध के कारण इनके हाथसे चला गया। कछवाहा का अपभ्रंश कुशवाहा है जो वर्तमान जम्ब राजमें रहते हैं। ऐसी प्रसिद्धि है कि इनका राज्य रोहतास गढ़ था।वहांसे फिर कुछ काल व्यतीत होनेपर नरवरका प्रसिद्ध दुर्ग राजा नलका बनवाया हुआ है जो प्रसिद्ध राजा नल विक्रम सम्वत् ३४३ में राजगद्दी पर थे। विक्रम सम्वत् १०२३ में सोढ देव हुए जिनके समयमें इस कछवाहा वंश की कुलदेवी जमवाय माता हुई। इसी वंशमें सवाई जयसिंह हुए जिन्होंने जयपुर का जीर्णोद्धार कराया और काशीजीमें प्रसिद्ध ज्योतिष विद्याका भवन बनवाया जो इस संसारमें प्रसिद्ध है। जयपुर शहरके मुकाबले किसी भी राजधानी की इमारत भारतवर्षमें नहीं पाई जाती है। यह द्वितीय 'पेरिस' समझा जाता है। इस उच्च वंशकी प्रसिद्ध २ शाखा इस प्रकार राजस्थान में वर्णित हैं:—

१ नरवरके कछवाहे या नरुके कछवाहेका अलवर ठिकाना है।
२ ग्वालियरके कछवाहे जयपुरमें पाये जाते हैं।
३ दुबकुन्डाके कछवाहे जो १६ मील दक्षिण पश्चिम ग्यालियरमें पाया जाता है।
४ मन कोटिया कछवाहे—मनकोटके राजा होने से।
५ जस रोटिया कछवाहे—जसरोटके राजा होनेसे।
६ भाऊ ७ सेमियाल ८ सल्हाथिया ९ दलपतिया १० ताराणिये चिनासिये ११ वीरपुरिये १२ मनहास।

प्रशाखा।

१ झाड़ी जयपुरके कछवाहे २ जम्बूवाल कछवाहे, जम्बू-काशमीर रहनेसे।
३ धारके कछवाहे। यह नरवर ग्वालियरके कछवाहे नरेशोंके वंशज हैं।
४ गढ़ **अमेठिया** के कछवाहे इन्द्रमणिके वंशज हें। गड़ अमेठी राज्य जिला सुलतानपुर अवधमें है।
५ विकल पोता कछवाहे—रामगढ़ आमेरके महाराज विकल जी के वंशज हैं जो लाहौर, बहार, मछड (ग्वालियरमें) गोपालपुर, रामपुर जिला जालौनमें पाये जाते हैं।

६ कुन्डल कछवाहे ग्रामके नामसे प्रसिद्ध हैं।

७ देहलणोत डागीं कछवाहे—यह काकलजीके पुत्र देहलजीके वंशज हैं और ग्वालियर राज्यमें पाये जाते हैं।

८ तालचिरके कछवाहे—आमेरके महाराज विजलजीके ३२ पुत्र थे। उनमेंसे तीन भाई, जगदीशपुरी उड़िसामें संयोगवस गए। इनके नाम ये हैं :—बाबूजी, नरसीजी, भोलोजी। इन लोगोंने जगदीशपुरी से लौटते समय कटकसे आगे निकलकर जंगली जातियोंसे युद्ध करके अपना राज्य स्थापित कर लिया। इन्हींके वंशज तालचिर के राजा हैं।

९ जसवन्त कछवाहे राजा किल्हणजीके पुत्र जलराजसे है।

१० भाखरोत कछवाहे—राजा कुन्तलजीके वंशधर हैं। इनकी शाखायें हैं—कन्यावत, टोंगां, सखनपोता, सुजेपाता।

११ कंभाणी कछवाहे—आंमेरके राजा जणसीजीके पुत्र कुभानीके वंशज हैं। ठिकाना बाश खोह है।

१२ सिंधादेका कछवाहे—राजा सिंधजीके वंशज है।

१३ श्योब्रह्म पोत्रा कछवाहे—राजा उदयकर्णजीके पुत्र श्योब्रह्मजीके वंशधर हैं—निदर ठिकाना है।

१४ सेखावत कछवाहे—राजा उदयकर्णजी हुए। उनके पुत्र बालाजी और बालाके मोकल जी हुए। कहते हैं कि इन दोनोंको संतान नहीं होती थी, तो एक मुसलिम फकीर शेख-भानकी ईश्वर-प्रार्थनासे एक पुत्र हुआ जिसका नाम शेखाजी हुआ। यह बहुत प्रतापी और वीर हुये। उक्त नामके कारण शेखावत संज्ञा हुई, जिनके नामपर राजपुतानामें एक प्रगना है।

१५ मधुपुरके शेखावत कछवाहे—उग्र ग्रामके नामसे प्रसिद्ध हुए।

१६ विहट विरमके शेखावत कछवाहे—जिला सीतापुरमें हैं। (अवधमें) आमदनी राज्य की २००००० है। गवर्नमेन्ट को रेवन्यू ३०००० देते हैं। अवधमें उच्च दरजेके क्षत्रिय हैं।

१८ बांकावत कछवाहे—भगवानदासजी को बाकाकी उपाधि थी।

१९ मान सिहोत १९ दर्जन सिहोत २० कल्याण सिहोत २१ मान सिहोत राजावत ठिकाना झलाया। इस प्रसिद्ध वंश की शाखा प्रशाखायें इतनी ही हैं।

राठौड़—सूर्य्य वंश, **गोत्र**—गौतम **प्रवर तीन**—गौतम, वशिष्ठ, बार्हस्पत्य, **कुलदेवी**—पंखनी, **वेद**—सामवेद, **शाखा**—कौथुमी, **सूत्र**—गोभिल गृह्यसूत्र, **गुरु**—शुक्राचार्य हैं।

इस वंशका निकास महाराजा रामचन्द्रसे है। वर्तमान राठौड़ लोग अपने को कुश वंशीय मानते हैं, जो श्रीरामचन्द्रजीके ज्येष्ठ पुत्र थे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह सूर्य्यवंशसे है जिनकी वीरताकी ख्याति सारे भूमंडलमें प्रकट है। कन्नौज बसानेवाले कुशके वंशधर राजा हर्षवर्धन बहुत प्रतापी हुए हैं, जिनका इतिहास साक्षी है। इसी वंशमें नामी राजा जयचन्द हुए हैं, जो महमूद गोरीसे हारकर बारहवीं शताब्दीके लगभग गंगामें डूब मरे। बाद इनके पुत्र सियाजी दक्षिणके तरफ जाकर ठहरे और गोहिलोंसे खेड़का मुल्क छीन लिया। इस वंशकी कीर्तिका बहुत विस्तार है। उक्त सियाके वंशज वर्तमान समयमें कई एक राजे हैं जिनका नाम इस प्रकार है :—

जोधपुर, बिकानेर, किशनगढ़, ईडर, रतलाम, सीतामऊ, सैलाना आदि रियासतें हैं। इनकी निम्नलिखित २४ शाखायें हैं :—

१ मैरतिया—राजधानी जयमल राजाकी विजनौर है।
२ चन्दावत—राजचन्दके वंशवाले स्थान सालुम्बर है।
३ जगावत—राजधानी फैलवाड़।
४ धोंदुल—की उपशाखा १ धूल, २ धूपर, ३ पखु।
५ भदेल, ६ चक्कित ७ दुहुरिया ८ खौकरा ९ रामदेव १० मालावत ११ गोगदेव
१२ जयसिंहा १३ श्राविया १४ जोबसिया १५ जोरा रापोत १६ सुन्दू १७ कटेचा
१८ हुटूदिया १९ दगजिरा २० मुरसिया २१ बदुरा २२ मुहोली २३ महेचा २४ कवरिया आदि हैं।

इस वंशकी शाखासे प्रशाखायें बहुत हैं, विस्तारभयसे नहीं लिखी गई।

प्राचीन कालमें इस वंशकी संज्ञा राष्ट्रकूट थी जो ताम्रपत्र व शिला लेखोंसे तथा हस्तलिखित पुस्तकोंसे प्रतीत होता है। इस बातको राठौड़ वैंशके मान्य व्यक्ति लोग मानते हैं कि सूर्य्य वंश राष्ट्रकूट संज्ञासे स्थानोंके हेर फेरके कारण राठौड़ संज्ञा पडी। राजा जयचन्दके पूर्वजोंका उनके ताम्रपत्र आदिमें सूर्य्यवंशी होना लिखा है। इस श्रेष्ठ वंशका विवाह सम्बन्ध प्रसिद्ध २ क्षत्रियोंमें होता है।

निकुम्भ—सूर्य्य वंश, **गोत्र**—वशिष्ठ, **प्रवर तीन**—वशिष्ठ, अत्रि सांकृति, **कुलदेवी**—कालिकाबन्दी, **वेद**—यजुर्वेद, **शाखा**—वाजन्यी, **सूत्र**—पारस्कर गृह्य सूत्र, अग्नि गार्हस्पत्य, **राजधानी**—अभानेर, **राज्य**—मण्डलगढ़।

निकुम्भ वंशकी प्रसिद्धि सूर्य्यवंशी राजानिकुम्भकेगामसे हुई, जो इक्ष्वाकु के १३ वंशधर थे। इन्हींके नामपर इस वंशकी निकुम्भ संज्ञा हुई। प्राचीन वंश होनेके कारण इस वंशकी ख्याति सारे इतिहासमें प्रसिद्ध है। गहलौतोंसे पहले मण्डलगढ़के स्वामी निकुम्भ ही थे। (टाड् 'राजस्थान' पृष्ठ ३०९ प्रकरण सांतवांकी टिप्पणी देखो) निकुम्भ सूर्य्यवंशी राजपूत हैं। इनकी उत्पत्ति सूर्य्यवशी राजा निकुम्भसे है। निकुम्भवंशी राजा बाहुभान थे। वह हयहय (कलचुरी) वंशी राजासे हारकर सिन्धु नदीकी तटपर जा बसने लगे और एक ऋषिकी कृपासे अपना गया हुवा राज्य फिर प्राप्त किया जिसका उल्लेख मिलता है। खान देश जिलेके (बम्वई हातेमें) पारण गांवसे मिले हुए दो लेखोंमें जो शक संवत् १०७५ विक्रम संवत् १२१०, इसवी सन् ११५३, और ११२८; १२६३, १२०७ हैं। उसमें निकुंभ वंशियोंका वृतान्त इस तरह मिलता है :—

सूर्य्यवंशमें राजा निकुंभ हुए जिसके वंशमें मांधाता, सगर, भागीरथ, अज, रघु, दशरथ और रामचन्द्र आदि हुए।

उसीवंशमें नीचे लिखे राजा हुए :—

१ कृष्णराज २ गोवन (नं. १ का पुत्र) गोविन्दराज (नं. २ का पुत्र) ४ गोवन दूसरा (नं. ३ का पुत्र) ५ कृष्णराज (नं. ४ का पुत्र) ६ इन्द्रराजा (नं. ५ का पुत्र) इसकी राणी श्रीदेवी राजा सगरके वंशकी थी और इसका प्रधान चंगदेव था। ७ गोवन तीसरा (नं. ६ का पुत्र) शक १०७५ विक्रम सं. १२१० ई. ११५३) में विद्यमान था ८ सोई देव है (न. ७ का पुत्र १)। यह देवगिरिके यादवोंका सामन्त और ११०० गांवोंका स्वामी था। इसने चंग देवकी स्थापित्त की हुई ज्योतिषकी पाठशालाकी सहायताके लिये बहुतसे रुपये भूमि भेंट की थी। चंगदेव शांडिल्य

गोत्रके त्रिविक्रम भट्ट नामी कवीश्वरका, जिसको उज्जैनके राजा भोजने विद्यापतिकी पदवी दी थी और जिसने दमयन्ति कथाकी रचना की थी, वंशज था। त्रिविक्रमका पुत्र भास्कर भट्ट, उसका पुत्र मनोहर भट्ट और उसका महेश्वराचार्य हुआ जिसका पुत्र 'सिद्धान्त शिरोमणि' का कर्त्ता प्रसिद्ध भास्कराचार्य हुआ और भास्कराचार्यका पुत्र लक्ष्मीधर हुआ जिसका पुत्र यह चंगदेव गिरिके यादव राजा सिंघणके दरबारका मुख्य ज्योतिषी था। चंगदेवने अपनेदादाके सिद्धान्तका प्रचार करानेके लिये ज्योतिषकी एक पाठशाला स्थापित की थी। सोई देवका छोटा भाई हेमाद्रिदेव था जो अपने भाईका उत्तराधिकारी हुआ।

खानदेशके अतिरिक्त राजपुतानामें भी मण्डलगढ़, अलवर और उत्तरी जयपुर का किला इसी निकुम्भ राजा के बनवाये हुए हैं। और यहां से इनकी इलाका मुसलमानों ने छीन लिया, तौभी ये अलवर की तरफ के स्वामी बने रहे, परन्तु लोदियों के समय में इनका अलवर का इ इलाका भी मुसलमानों के हाथ में चला गया। अब इनका कोई बड़ा राज्य नहीं है, केवल जमी-न्दारी रह गई है। हरदोई इलाके में इनका एक ठिकाना है, जहां के जमीन्दार अपना मूल स्थान अलवर का इलाका बतलाते हैं।

अवध के तालुकेदारों में से भी एक निकुम्भ वंशी है। अवध में इनको रघुवंशी कहते हैं। गोरखपुर आजमगढ में ४२ गावों जौनपुर, गाजीपुर, बलियां, मुजफ्फरनगर, मुजफ्फरपुर, आदि जिलों में बहुतायत से जमीन्दारी पायी जाती है, और इनकी शाखा सिरनेत नामसे प्रसिद्ध है। कहीं २ अपना गोत्र भारद्वाज भी बतलाते हैं। शाखा २ हैं सिरनेत, और कठहरिया। ब्याह संबंध श्रेष्ठ क्षत्रियोंमें स्थान भेदसे हुआ करता है।

श्रीनेत—सूर्य्यवंश, निकुम्भकी शाखा है। **गोत्र**—भारद्वाज, **कुलदेवी** चण्डिका **प्रवर तीन**—भारद्वाज बार्हस्पत्य, अङ्गिरस, **वेद**—सामवेद, **शाखा**—कौथुमी **सूत्र**—गोभिल गृह्यसूत्र।

यह प्रसिद्ध वंश निकुम्भकी एक शाखा है, और ये लोग कबूल भी करते हैं कि गोरखपुरके उत्तरमें एक कपिलवस्तु नामकी रियासत थी। वहांके राजा दीर्घबाहू थे, जो कौशलपुरके राजा बाहुसुकेतके समकालीन थे। इस राजाने कपिलवस्तु राज्यको जीत कर अपने में मिला लिया। तत्पश्चात्, राजा अशोकने इस सूर्य्यवंशी राजाको १९७ वर्ष विक्रमी सम्वत्से पहिले चढ़ाई करके निकाल दिया और ये लोग तितर बितर होकर जहां तहां जा बसे। उस समय वशिष्ठजी बद्रीनारायणमें थे, इस वंशके लोग भाग कर हिमालयकी तराईमें चले गये जो वर्त्तमान टेहरीराज कहलाता है, जिसकी राजधानी श्रीनगर है। कहा जाता है कि इस वंशके राजा ने दिल्ली दरबारमें कभी अपना शिर नहीं झुकाया जिस वजह से इल वंश की उपाधि शिरनेत या श्रीनेत हुई। कप्तान विलंगे साहब लिखते हैं कि श्रीनेत शब्द उपाधि सम्बन्धी है। दीर्घबाहू राजा की पची-सवीं पीढ़ी में सतयुद्ध नाम का राजा हुआ जिनके श्रेष्ठ पुत्र का नाम सकुन देव था। राजा मझौली दिग्विजयसेन ने अपनी लड़की चन्द्रप्रभा से इसको विवाह दिया और दायज में १५० डेढ सौ कोस का राज्य देकर रुद्रपुर के पास सिंहासन पर बिठला दिया। बाद इनके दो लड़के अमरजीत और जयजीत नाम के हुये। अमरजीत रुद्रपुर के राजा हुये, और जयजीत श्रीनगर की गद्दी पर चले गये क्योंकि वहां के राजा लावल्द मर गये थे। अमरजीत की छबीसवीं पीढ़ी में लबंगदेव राजा हुये। इनके तीन लड़के हुये— १ महिमा, २ महिलोचन और चन्द्रमाल ३। फिर श्रीनगर की गद्दी खाली हुई तो महिमा मय अपने छोटे भाई चन्द्रमाल के श्रीनगर चले गये। और महि-लोचन रुद्रपुर के राजा हुये। इनकी बीसवीं पीढ़ी में भगवन्तसिंह राजा हुये। इनको भी तीन

लड़के हुये और १५० डेढ़ सौ कोसका राज्य इस प्रकार तकसीम किया गया– १रणधीरसिंह ८७ कोसका राजा जो सतासीके नामसे प्रसिद्ध है, २ जयसिंह ४२ कोस बांसी, ३ जगधीर सिंह २१ कोस उनवल। फिर कई पीढी बाद चन्द्रमालके वंशज मकरन्दसिंह, श्रीनगरसे गोरखपुर किसी कारणवश आये और इन रियासतोंमें विचरते रहे। बादमें उनकी रियासतसे बहुतसे गांव मिले और जब इनका खानदान बढा तो और भी गांव जबर्दस्ती दखल कर लिये। यही लोग बांस गांवके बाबूके नामसे वर्त्तमान समयमें मशहूर हैं। श्रेष्ठ पुत्र जो सतासीके राजा थे उनका राज्य १८५७ ई० के गदरमें राजद्रोहके कारण जाता रहा। इस वंशकी रियासत बांसी बस्ती जिलेमें व उन्नौला गोरखपुर जिलेमें और छोटे २ तालुकेदार अवध जिलेमें पाये जाते हैं। व्याह, सम्बन्ध बरांबर जोड़के प्रसिद्ध क्षत्रियोंके साथ हरेक प्रान्तोंमें हुआ करता है।

कटहरिया–सूर्य्य वंशी निकुम्भ की शाखा है। **गोत्र**-वसिष्ठ, **प्रवर तीन**-वशिष्ठ, अत्रि सांकृति, **वेद**-यजुर्वेद, **शाखा**-वाजसनेयी, **सूत्र**-पारस्करगृह्यसूत्र ध्वजापर गरुड़का चिह्न, **नदी**-सरयू, **कुलदेवी**-कालिकामाता, **धर्म**-शाक्त, **इष्ट**-रामचन्द्र।

इस वंश वाले अपनेको निकुम्भ वंशकी शाखा बतलाते हैं जो सही है। कटहरिया कटहर देशमें रहनेके कारण कटहरिया नामसे प्रसिद्ध हुये। इस वंशकी शाखा सूत्र गोत्र प्रवर इत्यादि निकुम्भ की भांति है। इस वंशकी रियासत नहील (जिला-शाहजहांपुर) में है। व्याह सम्बन्ध प्रायः स्थानभेदसे क्षत्रियोंमें होता है। इस वंशके क्षत्रिय संयुक्त प्रान्तमें और राजपुतानेमें पाये जाते हैं।

बड़गूजर–सूर्य्य वंशी है **गोत्र**–वशिष्ठ, **प्रवर तीन**–वशिष्ठ, अत्रि, सांकृति **वेद**–यजुर्वेद, **शाखा**–वाजसनेयी, **सूत्र**–पारस्करगृह्यसूत्र, **कुलदेवी**–कालिका माता, **धर्म**–शाक्त, **इष्ट**–रामचन्द्रजी।

विजयादशमीको राजपुतानेमें तलवार (शस्त्र) का पूजन होता है।

इस उच्च वंशका निकास मर्य्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजीके कनिष्ठ पुत्र लवसे है। राजपुतानेमें बड़गूजरोंकी कोई शाखा नहीं है। इनके बड़े २ इलाके ढुढाड़में थे, जयपुर, अम्बेर, माचेडी ढुढाड़में शामिल थे और माचेड़ी के राज्यमें राजोर की पहाड़ी किला उनकी राजधानी थी। राजगढ़, अलवर भी इनके इलाके थे जिन्हें कछवाहोंने युद्धमें परास्त कर ले लिये। इस वंशके एक सामूहिक दलने गंगा किनारे जाकर अनूपशहर बसाया और वहीं रहने लगे। वर्त्तमान समयमें इस वंशकी कोई रियासत वगैरह नहीं है। ये हिन्दुस्तानमें प्रायः राजपूताना, संयुक्त-प्रान्त और विहारमें पाये जाते हैं। व्याह संबन्ध प्रत्येक प्रसिद्ध क्षत्रियोंमें होता है।

रैकवार–सूर्य्य वंशकी शाखा है। **गोत्र**–भारद्वाज, **प्रवर तीन**–भारद्वाज बार्हस्पत्य, आङ्गिरस, **वेद**–यजुर्वेद, **शाखा**–वाजसनेयी, **सूत्र**–पारस्करगृह्य सूत्र, **कुलदेवी**–चंडिका, **धर्म**–शाक्त, **इष्ट**–महादेवजी है।

इनका निकास श्रीभरतजीके पुत्रसे माना जाता है। वाल्मिकीय रामायणमें लिखा है कि मर्य्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्रजीने भरतजीके कनिष्ठ पुत्र पुष्कलको पुष्कलावतीका राज्य दिया था। फिर इस देशके राजा सुबल और शकुनी हुये, जिनका इतिहास महाभारतमें वर्णित है। फिर इस वंशमें रैकवारनामक राजा हुआ जिसने जम्बूके निकट रैकागढ़ बसाया। उक्त नाम

और स्थानोंकी प्रसिद्धिसे इस वंशकी रैंकावर संज्ञा हुई। य राठोड़से ३०० वर्ष पूर्व कनौज से निकले और १५०० सौ शताब्दीमें अवधमें गये। ये लोग नीमकी दातौन नहीं करते हैं। राजपुतानाकी भांति विवाह सम्बन्धमें शान रखते हैं। इस वंशके ताळुकेदार बौंडी, रहवा, पलवारी, मल्लापुर, रामनगर, घमेंडी रामपुर, मथुडा, कलां आदि हैं। राजपुताना, संयुक्त-प्रान्त और विहारमें पाये जाते हैं। व्याह सम्बन्ध स्थान भेद से जोड़के क्षत्रियोंमें होता है।

गौड़—सूर्य्य वंशकी शाखा मानी जाती है। गोत्र—भारद्वाज, प्रवर तीन—भारद्वाज, बार्हस्पत्य, आङ्गिरस, **वेद**—जयजुर्वेद, **शाखा**—वाजसनेयी, सूत्र—पारस्करगृह्य सूत्र, **कुलदेवी**—महाकाली, **इष्ट**—रुद्र, **धर्म**—शाक्त है।

गौड क्षत्रिय भरतजीके पुत्रके वंशज हैं। वाल्मीकीय रामायणमें तक्षकको तक्षशिलाका राज्य देना लिखा है। महाभारतके समय सिंध देशका राजा जयद्रथ इसी वंशका थ.। फिर इस वंशकी राजधानी थानेश्वरमें रही। वहांसे सिंहादित्य गौड देशमें, आये, उक्त स्थानमें वसनेके कारण गौड़ इनकी संज्ञा हुई। महाराज गोपीचन्द गौड़ इस वंशमें प्रसिद्ध पुरुष हुए हैं। रायबहादुर पण्डित गौरीचन्द हीरा झा लिखते हैं कि गौड़ इस समय राजपूताने में अजमेरमें राजगढ़में ही हैं। परन्तु पहले अजमेरके आसपासके वहुतसे इलाके इसी वंशके आधीन थे जिसे राठौड़ने क्रशमः छीन लिया। मारवाड़में जो मारोठका परगना है वह अबतक गोड़ारी कही जाती है, उसे भी राठौड़ोंने छीन लिया था। अवधमें शिवगढ रियासत है। शाखा—१ गौड़, २ चमगौड़, ३ बभनगौड़, ४ भटगोड़, अमैठिया और गौड़ाहर है। व्याह सम्बन्ध सब क्षत्रियोंमें होता है। भारतके एक दो प्रान्तोंमें अल्पसंख्यक पाये जाते हैं।

दीक्षित—या दृगवंशी सूर्य्यवंशकी शाखा है। **गोत्र**—कश्यप, **प्रवर तीन**—काश्यप, अप्सार, नैध्रुव, **वेद**—सामवेद, **शाखा**—कौथुमी, **सूत्र**—गोभिल गृह्यसूत्र **कुलदेवी**—दुर्गा, **इष्ट**—रामचन्द्रजी, **धर्म**—शाक्त है।

इस वंशके राजा दुर्गबाहु अयोध्यासे गुजरात गये। वहां उनकी 'दुर्ग' संज्ञा हुई और उनके वंश सूर्य्यवंशी कल्याणसिंह (कल्याणशाह) नामक सामन्त थे। इन्हींके वंशज बलभद्रसिंहजी गुर्जर देशके अणहील पाटनके सिद्धराज जयसिंहके सामन्त थे। राजा सिद्धराज जयसिंहके देहान्त होनेके बाद कुमारपालका अभिषेक विक्रम सं० ११९८ मंगसर बदी ४ पुष्य नक्षत्रमें हुआ। इस राजाने जैनाचार्य्य हेमचन्द्र सूरीसे दीक्षा ली। इसी समय इस दरबारके सामन्त सबोंने भी दीक्षा लेली थी, इससे इस वंशकी शाखा—बल खेरिया दृगवंशीने भी स्थानोंके भेदसे नाम प्राप्त की, परन्तु अब इस वंशके तालुकेदार राजे नहीं हैं। छोटी रियासतें इस प्रकार हैं:—परेन्दा, राजा बाजार, उमेरी, फुलबरिया आदि हैं। संयुक्त-प्रान्तमें अल्प संख्यक पाये जाते हैं। व्याह सम्बन्ध सब क्षत्रियोंमें होता है।

किनवार—सूर्य्यवंश दीक्षितकी शाखा है। **गोत्र**—कश्यप, **प्रवर तीन**—काश्यप, अप्यसार, नैध्रुव, **वेद**—सामवेद, **शाखा**—कौथुमी, **सूत्र**—गोभिलगृह्यसूत्र, **कुलदेवी**—इष्ट दुर्गा,—रामचन्द्रजी: **धर्म**—शाक्त है।

यह अपनेको दीक्षितकी शाखा बतलाते हैं। राजा मानदीक्षितने कर्णाटकके पद्मपुरमें राजधानी बनाई। उनके वंशज दो वीर क्षत्रियोंमेंसे एकने बनारसके गहरवार राजाके यहांनौकरी की—

और दूसरेने गौतम भूमिहार ब्राह्मणकी नौकरी की। बनारसमें रहनेसे इनके वंशज किनवार प्रसिद्ध हुए। व्याह सम्बन्ध क्षत्रियोंमें होता है। गाजीपुर, बिलिया और उत्तरी विहारमें पाये जाते हैं।

रघुवंशी–सूर्य्य वंशकी शाखा है। **गोत्र**–वशिष्ठ, **प्रवर तीन**–वशिष्ठ, अत्रि, सांकृति, **वेद**–यजुर्वेद, **शाखा**–वाजसनेयी, **सूत्र**––पारस्करगृह्यसूत्र, **कुलदेवी**–कालिका, **नदी**–सरयू, **धर्म**–शाक्त, विजयादशमीको खड्ग पूजन होता है।

यह प्राचीन राजवंश सूर्य्यवंशी दशरथजीसे पहले महाप्रभावशाली वीर राजा रघुसे हुए। इन्हींके वंशज रघुवंशी कहलाये। रामायणमें लिखा है कि जिस समय (श्रीरामचन्द्रजी जनकपुर विदेह राजा जनककी रंगभूमिमें वैठे थे, उस समय राजा जनकजीने आकुल हो कहा कि धनुषका तोड़ना तो अलग रहा, तिलभर धरती भी नहीं किसीने छुड़ायी, अब हमें पूर्ण विश्वास हो गया कि पृथ्वी मण्डल भरमें कोई वीर नहीं दीख पड़ता है इस कठोर मर्मवेधी बातको सुनकर लक्ष्मण-जीने कहा:—

चौपाई–रघुवंशिन महँ जहँ कोउ होई। तेहि समाज अस कहो न कोई।।
कही जनक जस अनुचित बानी। विद्यमान रघुकुलमणि जानी।।

इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि श्रीरामचन्द्रजीके समकालीन सूर्य्यवंशी क्षत्रिय गण अपने-को रघुवंशीही कहकर सम्बोधन करते थे। काल क्रमसे इस वंशका इतिहास लुप्त हो गया। रघुवंशियोंकी रियासत बुंदेलखण्डमें बरोद कोचरके राजा इसी वंशके हैं। रघुवंशी परगना गोतीगिर (अवध) में इनकी रियासत है। व्याह सम्नवध प्रत्येक उच्च वंशके क्षत्रियोंमें हुआ करता है, विहार और संयुक्त प्रान्तमें और कुछ राजपुतानेमें पाये जाते हैं।

सूर्य्यवंशी–क्षत्रिय, **गोत्र**–काश्यप, **प्रवर तीन**–कश्यप, अप्सार, नैध्रुव, **वेद**–यजुर्वेद, **शाखा**–वाजसनेयी, **सूत्र**–पारस्करगृह्यसूत्र, **कुलदेवी**–चण्डिका, **नदी**–सरयू **गुरु**–वशिष्ठ, **इष्ट**–महादेवजी हैं।

यह प्राचीन वंश होनेके कारण उतना प्रसिद्ध नहीं है क्योंकि इस वंशवाले कहीं राजा महा-राजा या रियासतदार नहीं ह। इनका व्याह सम्बन्ध अच्छे क्षत्रियों में हुआ करता है। ये प्राय: संयुक्त प्रान्त में पाये जाते हैं।

निमीवंश–सूर्य्य वंश की शाखा है। **गोत्र**–वाशिष्ठ, **प्रवर तीन**–वाशिष्ठ, अत्रि, सांकृति, **वेद**–यजुर्वेद, **शाखा**–वाजसनेयी, **सूत्र**–पारस्करगृह्यसूत्र, **कुलदेवी**–चण्डिका, **गुरु**–गौत्तम।

यह निमी वंश या निमुड़ी इक्ष्व कु के पुत्र निमी से हैं। इन्हीं के नामसे इस वंशकी प्रसिद्धि हुई। इसी वंशमें विदेह राजा जनक हुये हैं। अब ये लोग पंजाब और विहार में पाये जाते हैं। व्याह सम्बन्ध प्राय: प्रत्येक क्षत्रियोंमें होता है।

बैस–सूर्य्य वंशकी शाखा है। **गोत्र**–भारद्वाज, **प्रवर तीन**–भारद्वाज, बार्हस्पत्य, आङ्गिरस, **वेद**–यजुर्वेद, **शाखा**–वाजसनेयी, **सूत्र**–पारस्करगृह्यसूत्र, **कुलदेवी**–कालिका, **इष्ट**–शिवजी हैं।

इस जाति के लोग अपने को सूर्य्यवंशकी शाखा मानते हैं। इस वंशको ३६ राजकुलों में स्थान मिला है। यह सूर्य्य वंशकी शाखा मानी जाती है। बीकानेर की वंशावली में भी इनको

सूर्य्यवंशी माना है। इसके असंख्य मनुष्य पाये जाते हैं। गंगा यमुना के बीच इनके नामका प्रदेश एक वैसवाड़ा प्रसिद्ध है। 'जाती भास्कर, में भी सूर्य्यवंश की शाखा मानी है। संबंध १३१२ साल की छपी राजावली बङ्गला इतिहासमें लिखा है कि जब विक्रमपाल संन्यासी दिल्लीकी गद्दी पर राज्य कर रहा था तिलोकचन्द्र नामक एक वैस राजाने कई वर्षों तक कर नहीं दिया। तब दिल्ली का राजा विक्रमपाल सेना साथ लेकर प्रतिष्ठानपुर राजा तिलोकचन्द्र पर चढ़ आया। युद्धमें दिल्लीकी सब सेना मारी गई, और दिल्ली तिलोकचन्द्र की दखलमें आगयी जो इस प्रकार राज्य किया :—

१	तिलोकचन्द्र राज्य किया	२	वर्ष	०	महीना
२	विक्रमचन्द्र	२२	,, ...	३	,,
३	कार्तिकचन्द्र	४	,, ...	३	,,
४	रामचन्द्र	१४	,, ...	११	,,
५	अधरचन्द्र	१८	,, ...	२	,,
६	कल्याणचन्द्र	११	,, ...	७	,,
७	भीमचन्द्र	१८	,, ...	३	,,
८	बोधचन्द्र	२६	,, ...	६	,,
९	गोविन्दचन्द्र	२२	,, ...	२	,,
१०	प्रेमदेवी	१	,, ...	०	,,
		१३८	वर्ष	३७	महीना

इस वंशका राज्य रहा। गोविन्दचन्द्र के निःस्सन्तान मरने पर मंत्रियों ने प्रेमदेवी को राजसिंहासन पर बिठलाया, परन्तु यह एकही वर्ष राज शासन करने पायी कि मर गयी। टाड राजस्थान के सातवें प्रकरणी टिप्पणी २४७ पृष्ठ ४८४ में लिखा है कि वैसवंशी राजाओं के ताम्र–पत्र बाणभट्ट रचित 'श्रीहर्ष चरित' और चीनी ह्युतसंग के सफरनामेंसे मिलता है। उसमें इस क्रमसे पाया जाता है :–(१ पुष्यभूति–यह श्रीकंठ प्रदेश (थानेश्वर) का राजा था और परम शिवभक्त था, (२) नरवर्द्धन (नं० १ का पुत्र) (३) राज्यवर्द्धन (नं० २ का पुत्र) यह सूर्य्यका भक्त था, (४) आदित्यवर्द्धन (नं० ३ का पुत्र), (५) प्रभाकरवर्द्धन (नं० ४ का पुत्र), '(६) राज्यवर्द्धन (नं० ५ का पुत्र), (७) हर्षवर्द्धन (नं० ६ का छोटा भाई)। हर्षवर्द्धन के बाद इस वंशका कोई इतिहास नहीं मिलता है। यह प्रतापी राजा था और सारे हिन्दुस्तानको विजय किया था। इसने अपने आधीन ६०००० हाथी और १००००० सवारों की सेना इकट्ठी करली थी। हिन्दुस्तान फतह होनेके बाद इसने बौद्ध धर्मका काम अपने हाथमें लिया। बाद इसके मरनेके इसका कोई इतिहास नहीं मिलता। बौद्ध धर्म धारण करनेही के कारण इस वैसवंश की प्रतिष्ठा कम हो गयी थी। ये लोग शुद्ध क्षत्रिय हैं और सनातनधर्मावलम्बी होते हुये व्याह सम्बन्ध प्रायः शुद्ध क्षत्रियोंमें करते हैं। वैसकी शाखा ४ हैं :—(१) तिलोकचन्दी, (२) प्रतिष्ठानपुरी (३) कुम्भी और (४) नरवरिया है। भाले सुलतान तिलोकचन्दी की शाखा है। इस समय इस वंशके तालुकेदार इस प्रकार पाये जाते हैं—मुरारमऊ, खजुरः गांव कुर्रीसुदौली, कोड़िहर, सतांव, पाहु, पिलखा, नरेन्द्र, चरहुर, कसो, देवगांव, गोरा, कसहटी, कटवर, गौड़ा, सीमरी, उड़हर, हसनपुर, थानगांव, कान्हमऊ, वशीड़ आदि अवधप्रान्तमें, कुवा आदि आजमगढ़ जिलेमें हैं।

विश्वेन—सूर्य्य वंशकी शाखा है। **गोत्र**–पराशर, **प्रवर तीन**–पराशर, शक्ति, वशिष्ठ **वेद**–सामवेद, **शाखा**–कौथुमी, **सूत्र** गोभिलगृह्यसूत्र, **कुलदेवी** दुर्गा है।

यह सूर्य्यवंशी क्षत्रिय हैं। इसमें सन्देह नहीं कि इनकी बदनामी कई वंशावलिवालोंने असत्य कल्पना की है। यह बहुत वीर साहसी और दानी थे। जो क्षत्रियोचित लक्षण है वे कुल इस वंशके क्षत्रियोंमें विद्यमान पाये जाते हैं। विश्वेन—कुलभूषण मझौलीके महाराजकुमार लालखड्ग-बहादुर मल्लने अपनी विश्वेन वाटिका नामक ग्रन्थ में अपनेको सूर्य्यवंशी लिखा है जो सर्वांश सत्य प्रतीत होता है। यह प्राचीन राजवंश है। वर्त्तमान काल में भी कई एक रियासत मौजूद हैं जो इस प्रकार हैं:—(१) मझौली (जिला गोरखपुर), भिनगा (जिला बहराइच) मनकापुर (जिला गोन्डा) काला कांकड़ व भदरी (जिला प्रतपागढ़) व कई छोटे २ ताळुकेदार हैं। इस वंशका व्याह सम्बन्ध प्रत्येक क्षत्रियोंमें होता है। ये संयुक्त-प्रान्त व बिहारमें पाये जाते हैं।

काकन क्षत्रिय–सूर्य्य वंशकी शाखा है। **गोत्र**–भार्गव, **प्रवर तीन**—भार्गव, नीलोहित, रोहित, **कुलदेवी**–दुर्गा, **वेद**—यजुर्वेद, **शाखा**–वाजसनेयी, **सूत्र**–पारस्करगृह्यसूत्र है।

यह अपनेको क्षत्रिय बताते हैं और इनका व्याह सम्बन्धीभी अच्छे क्षत्रियों में होता है। बिहार व संयुक्त-प्रान्तके पूर्व भागमें इस वंशके क्षत्रिय पाये जाते हैं। इनके पूर्वज युक्तप्रदेशमें मऊसे आये थे विकानेरकी वंशावलीमें भी इनका वर्णन किया है और सूर्य्यवंशी लिखा है।

गोहिल—सूर्य्यवंश गहलौत की शाखा है, **गोत्र**–काश्यप, **प्रवर तीन**–काश्यप, अप्सार, **नैध्रुव**, **वेद**—यजुर्वेद, **शाखा**–वाजसनेयी, **सूत्र**–पारस्करगृह्यसूत्र, **कुलदेवी**–वाणमाता, **धर्म**–शाक्त, **इष्ट**–महादेव हैं।

रावल बापाके पांच पुत्रोंमें से एक पुत्रीकी संतान हैं। यह अपनेको सूर्य्यवंशी कहते हैं, और, मण्डलीक काव्यमें लिखा कि यह सूर्य्यवंशी हैं। प्रत्येक वंशावलियोंके छत्तीस राजवंशोंमें २० वां स्थान मिलता है। इस वंशवाले प्रायः वाणिज्य करते हुये पाये जाते हैं।

सिकरवाल—सूर्य्यवंशकी शाखामें है। **गोत्र**–भारद्वाज, **प्रवर तीन**–भारद्वाज, बार्हस्पत्य आङ्गिरस, **वेद**–सामवेद, **शाखा**–कौथुमी, **सूत्र**–गोभिलगृह्यसूत्र, **कुलदेवी**–दुर्गा, **देवता**–विष्णु हैं।

यह अपनेको सूर्य्यवंशी महाराजा रामचन्द्रजी के पुत्र लवकी संतान बतलाते हैं टाड राजस्थान पृ० ३०७ प्रकरण सातवेंमें लिखा है कि सिकरवाल ऐसा जान पड़ता है कि यह वंश भी उपरोक्त वंशकी नाई राजस्थानके राजाओं के मध्य कभी नामवर न हुआ, और न इस जातिका एकभी स्वतंत्र राजा अवशेष है। यद्यपि एक छोटासा इलाका चम्बलके दाहिने किनारे पर यदुवारी से मिलता हुआ है उनके नाम से सिकरवार कहलाता है। और यह भी अब यदुवारीकी नाईं सेंधियाके राज्यान्तर्गत ग्वालियरके इलाकेमें मिल गया है। उनका यह नाम सिकरी नगर (फतेहपुर) से पड़ा है, जो पूर्व कालमें एक स्वतंत्र राज्य था। इनका व्याह सम्बन्ध प्रायः क्षत्रियोंमें होता है।

निमुड़ी–सूर्य्यवंशकी शाखा, **गोत्र**–काश्यप, **प्रवर तीन** काश्यप, अप्यसार, **नैध्रुव**, **कुलदेवी**-प्रभावती, **वेद**–यजुर्वेद, **शा**[illegible] [illegible]गृह्य सूत्र है।

सूर्य्यवंशमें महाराजा इक्ष्वाकु हुये, उनसे निमी राजा हुये जिनके नामसे निमुड़ी **संज्ञा हुई। यह प्राचीन राजवंश है**, परंतु इस समय इनकी कोई राजधानी नहीं है, इसलिये **मानकी दृष्टिसे नहीं देखे जाते हैं।** इस वंशका व्याह सम्बन्ध स्थानभेदसे क्षत्रियोंमें होता है। ये लोग **प्रायः संयुक्तप्रान्तके** कई एक जिलोंमें पाये जाते हैं, और कुछ बिहार प्रान्तमें भी हैं।

गौतम–गोत्र गौतम, **प्रवर पांच**–गौतम, आङ्गिरस, अप्सार, बार्हस्पत्य, ध्रुव, **कुलदेवी**–चामुण्डा, **देवता**–महादेव योगेश्वर हैं। **वेद**-यजुर्वेद, **शाखा**–वाजसनेयी, **सूत्र**–पारस्करगृह्यसूत्र है।

इस वंशको वंशभास्करमें सूर्य्यवंश लिखा है, और इस वंशवाले अपनेको सूर्य्यवंशी क्षत्रिय मानते भी हैं। फतहपुरके निकट अरगला प्रसिद्ध ग्राम है। यहीं पर इस वंशमें गौतम नामका जागीरदार हुआ है, जिनकी ख्याति इतिहासोंमें पाई जाती है कि इस राजाने मुसलमानोंके छक्के छुड़ाये थे और इनकी राणीने भी अपना मान व प्रतिष्ठा बचानेके लिये अति वीरता दिखलाई थी। इस वंशके इतने घराने हैं :–राजा राणा, राव, रावत आदि। इस वंशका व्याह सम्बन्ध प्रत्येक क्षत्रियोंमें होता है। इस वंशके क्षत्रिय संयुक्त प्रान्तमें हैं और बिहार प्रान्तके छपरा और कुछ मुजफ्फरपुरमें पाये जाते हैं। इस वंशको कहीं २ चन्द्रवंशी और कहीं २ ब्रह्मवंशी क्षत्रिय भी मानते हैं, परंतु यह क्लिष्ट कल्पना है।

बमटेला–सूर्य्यवंशकी शाखा मानी जाती है। **गोत्र**–शांडिल्य, **प्रवर तीन**–शांडिल्य, अशित, दवल, **वेद**–सामवेद, **शाखा**–कौथुमी, **सूत्र**–गोभिलगृह्यसूत्र, **धर्म**–शाक्त, व वैष्णव, **देवता**–विष्णु व शिव हैं।

यह अपनेको सूर्य्यवंशी मानते हैं और विश्वेन क्षत्रियसे निकास बतलाते हैं। व्याह सम्बन्ध प्रत्येक क्षत्रियोंमें होता है। इस वंशवाले हरदोई, फर्रुखाबाद व शाहाबाद, जिलोंमें पाये जाते हैं।

सिंघेल–सूर्य्यवंशकी शाखा है। **गोत्र**–काश्यप, **प्रवर तीन**–काश्यप, अप्सार, नैध्रुव, **कुलदेवी**–पंखनी, **धर्म**–वैष्णव है।

ये अपनेको सूर्य्यवंशी बतलाते हैं। व्याह संबंध प्रायः क्षत्रियोंमें होता है इस वंशवाले आजमगढ व छपरामें पाये जाते हैं।

धाकर–सूर्य्यवंशकी शाखा है। **गोत्र**–भारद्वाज, **प्रवर तीन**–भारद्वाज, बार्हस्पत्य, आङ्गिरस, **कुलदेवी**–कालिका है। **वेद**–यजुर्वेद, **शाखा**–वाजसनेयी **सूत्र**–पारस्करगृह्यसूत्र और **धर्म**–वैष्णव है।

ये लोग अपनेको सूर्य्यवंशी कहते हैं और व्याह सम्बन्ध क्षत्रियोंमें होता है। इस वंशवाले संयुक्तप्रान्त व बिहारके शाहबाद जिलेमें पाये जाते हैं।

लोहतमिया—सूर्य्यवंशकी शाखा है। **गोत्र**–भारद्वाज, **प्रवर तीन**–भारद्वाज, बार्हस्पत्य, नैध्रुव, **कुलदेवी**–चण्डी, **वेद**–सामवेद, **शाखा**–कौथुमीसूत्रगोभिलगृह्य **सूत्र**– है।

यह अपनेको लवकी संतान बतलाते हैं, जैसा कि नृपवंशावलीमें लिखा है कि :—

राजा राम के तनय द्वे । लव कुश नृपति सुजान ।।
लवते क्षत्रिय प्रगटेउ । नृप लोह थम प्रमाण ।।

ये लोग बलिया, गाजीपुर शाहाबाद जिलोंमें बहुसंख्यक पाये जाते हैं। इस वंशका **व्याह सम्बन्ध प्रायः दोनबार, काकन, कर्मवीर, ढेकहा, सुलंकी, आदिको कन्या देते हैं और दोनवार ढकहाकी कन्या लेते हैं।**

नन्दबक—सूर्य्यवंशकी शाखा—**गोत्र**—काश्यप, **प्रवर तीन**—काश्यप, अप्सार, नैध्रुव, **वेद**—यजुर्वेद, **शाखा**—वाजसनेयी, **सूत्र**—पारस्करगृह्यसूत्र, **कुलदेवी**—दुर्गा, **धर्म**—शाक्त है।

यह अपनेको नरराव (अलवरके) कछवाहोंके वंशज मानते हैं। जौनपुर, आजमगढ़, बलिया, मिर्जापुर आदि जिलोंमें पाये जाते हैं। व्याह सम्बन्ध प्रत्येक क्षत्रियोंमें स्थान भेदसे होता है।

मौर्य्य—सूर्य्यवंशकी शाखा है। **गोत्र**—गौतम, **प्रवर तीन**—गौतम, वशिष्ठ, बार्हस्पत्य, **वेद**—यजुर्वेद, **शाखा**—वाजशनेयी, **सूत्र**—पारस्करगृह्यसूत्र, **कुलदेवता**—खण्डेराव, **गद्दी**—काश्मीर **लग्न कार्यमें** —देवक मोरके पंख। विजयदशमीको कटार पूजन होता है। धर्म पहले बौद्ध था परन्तु अब वैष्णव या शाक्त है।

इस वंशके विषयमें लेख मिलता है कि इसी वंशमें बुद्धदेवका जन्म हुआ था, इसीसे मौर्य्यका शाक्यवंशी अर्थात् सूर्य्यवंशी होना पाया जाता है। बौद्ध ग्रन्थोंमें लिखा है कि चन्द्रगुप्तका पिता हिमालय प्रदेशके एक छोटासा राज्यका स्वामी था। क्षत्रियोंके विरुद्ध मौर्य्योंमें मोर पक्षी खानेका रिवाज अधिकतासे पाया जाताहै, जो उक्त नामको पुष्ट करता है। अशोकने हिंसा बन्द कर दी थी, लेकिन ये लोग बौद्ध होते हुए भी अपने निःकृष्ट आचरण को नहीं छोड़ा था, ऐसा उनके ग्रंथसे प्रकट होता है। जान पड़ता है कि मौर्य्य लोगोंकी वीरताकी कहानी सारे इतिहासमें वर्णित है और द्वीपांतरोंमें राजा अशोक और चन्द्रगुप्तकी ख्याति फैल रही है। कर्नल टाड साहेबने इस वंशको पंवारकी शाखा बतलायी है जो सर्वथा विश्वासयोग्य नहीं जचती क्योंकि टाड महोदयने तो कितने ही राजपूतोंको कलंकसे आभूषित किया है और कितनोंको निष्कलंक भी किया है। मुख्य तात्पर्य यह है कि कहीं तो उक्त महोदयने तर्क करके जैसे तैसे गढन्त किया है, और कहीं कहानी सुनके लिख दिया है, जैसा कि कुछ इतिहास वेत्ताओंने इस मौर्य्यवंशी क्षत्रियोंको कलंक लगाया है। वैसा तो नहीं है, परन्तु बौद्ध हो जानेके कारण क्षत्रियलोग इनको नीच दृष्टिसे देखते थे। अब इन लोगोंने बौद्धधर्मको छोड़ दिया और जो निकृष्ट कर्म इन पक्षीखानेका था उसे भी त्याग दिया। इन लोगोंकी आबादी जिला मथुरा, फतहपुर, सीकरी व आगरे उज्जैनादिमें पायी जाती है व्याह सम्बन्ध क्षत्रियोंमें होता है।

सूरवार—सूर्य्यवंशकी शाखा है। **गोत्र**—गार्ग्य, **प्रवर तीन**—गार्ग्य, कौस्तुभ, माण्डव्य, **वेद**—यजुर्वेद, **शाखा**—वाजसनेयी, **सूत्र**—पारस्करगृह्यसूत्र, **देवता**—विष्णु, **धर्म**—वैष्णव है।

ये लोग अपनेको सूर्य्यवंशी करार देते हैं जैसे कि आजमगढ़के राजा रणजोरसिंह निर्मित क्षत्रियकुल वंशावलीमें इस वंशको शत्रुघ्नके पुत्र श्रुतसेनका वंशधर होना लिखा है। जो हो परन्तु ये लोग शुद्ध क्षत्रियवंशी हैं। इसमें सन्देह नहीं, इनका व्याह सम्बन्ध क्षत्रियोंमें होता है। ठिकाना चैनपुर राज्य रियासतरंका आदि है। इस वंशके क्षत्रिय विशेषतः संयुक्त—प्रान्त व उत्तरी विहारमें पाये जाते हैं।

पुण्डीर क्षत्रिय—सूर्य्यवंशी हैं। **गोत्र**—पुलस्त और कहीं २ भारद्वाज **प्रवर तीन**—भारद्वाज, बार्हस्पत्य, आंगिरस, **कुलदेवी**—दधीमथी देवी, जिनका प्राचीन मन्दिर गोठमांगलोद परगने नागौरमें है। **वेद**—यजुर्वेद, **शाखा** वाजसनेयी, **सूत्र** पारस्करगृह्य सूत्र है।

ये लोग महाराजा पृथ्वीराजके समय प्रसिद्ध सामन्त थे पूर्व पंजाबमें अब ये लोग पाये जाते हैं। व्याह सम्बन्ध क्षत्रियोंमें स्थान भेदसे होता है।पृथ्वीराजके रासो ग्रन्थमें इस वंशका कुछ

वृत्तान्त मिलता है। संभव है कि ये दाहिमा क्षत्रियोंसे निकले हों। पुण्डीर नामक एकवीर पुरुष इस वंशमें बारहवीं शताब्दीके लगभग थे जिनके नामके वजह उक्त संज्ञा हुई है।

कलुवाल क्षत्रिय–सूर्य्य वंश पुण्डीरकी शाखा मानी जाती है। गोत्र–पुलस्त्य। इनका क्रम (सिलसिला) मायापुरके राजग्रामसे मिलता है। राज्य सतोडा व्याह सम्बन्ध क्षत्रियोंमें होता है।

उदमतिया–सूर्य्य वंशकी शाखा है। **गोत्र**–वत्स, प्रवर पांच–और्व्य, च्यमन, भार्गव, जामदग्न्य, अप्नुवान, **कुलदेवी**–कालिका हैं।

कहते हैं कि जब परशुरामजीका भय सारे क्षत्रियोंको व्यस्तकर रहा था ठीक उसी समय उदालक मुनिने इस वंश की रक्षा की थी। उसी समय से उदमतिया इनकी संज्ञा हुई। इन्होंने उदयपुर से ३०० सौ वर्ष पहले मुसलमानोंकी चाकरी की। अब बिहार प्रान्तमें हैं।

काकतीय वंश–सूर्य्यवंशी की शाखा है। **गोत्र**–भारद्वाज, **प्रवर तीन**–भारद्वाज, बार्हस्पत्य, आङ्गिरश, **वेद**–यजुर्वेद, **शाखा**–वाजसनेयी, **सूत्र**–पारस्करगृह्यसूत्र, **धर्म**–शाक्त, **कुलदेवी**–चण्डी है।

इस वंश को प्रातःस्मरणीय महाराजा रामचन्द्र जी की सन्तान लिखा है। मध्य प्रदेश में वस्तर के राजा इसी वंश के हैं। यह राज्य मध्य प्रान्त में है, दन्तेश्वरी के मन्दिर के लेख से ज्ञात होता है कि १७६० ई० में इनको चन्द्र वंशी लिखा है। इसका विरोध का मुख्य कारण दूसरी जगह से आना सम्भव हो। इस वंश का व्याह सम्बन्ध क्षत्रियों में होता है, और इनका आचरण भी पवित्र है।

लिच्छवी वंश––सूर्य्यवंशकी शाखा है। द्वितीय दशरथ इस वंशमें हुए थे। इसी वंशमें लिच्छवी नाम का एक पुरुष हुआ जिसके नामसे उक्त संज्ञा हुई। इसी वंश का प्राचीन शहर पाटलीपुत्र है जिसे आज पटना कहते हैं। यहांका राजा सुपुष्य हुआ था और गुप्तवंशका राजा चन्द्रगुप्तका विवाह भी इसी वंश में हुआ था। इनका गोत्र ज्ञात नहीं है और न इस वंश का पता ही किसी स्थान में लगता है।

ठाकरिया–यह वंश कच्छ देश में था, परन्तु कोई २ लोग इनको ठाकुरी वंश सूर्य्य वंश की शाखा बतलाते हैं जो नेपाल के इतिहासमें लिखा है कि इस वंशवाले यहांके राजा हो चुके हैं। विशेष ज्ञात नहीं।

जायस–यह अपने को सूर्य्य वंश करार देते हैं। संभवतः यह राठौरसे निकले हुये जान पड़ते है। व्याह सम्बन्ध क्षत्रियोंमें होता है। कहते हैं कि रायबरेली के जायस ग्राममें रहनेसे जायस नाम हुआ।

चन्दौसिया–**गोत्र**–भारद्वाज, **प्रवर तीन**–भारद्वाज, बार्हस्पत्य आङ्गिरस, **वेद**–सामवेद, **शाखा**–कौथुमी, **सूत्र**–गोभिलगृह्यसूत्र, **कुलदेवी**–दुर्गा, **धर्म**–वैष्णव।

ये लोग अपनेको बैस क्षत्रियोंसे निकला हुआ बतलाते हैं। इस वंशके ठाकुर उदयबुद्धिसिंह हुये हैं जो बैसवाड़ेसे चन्दौर ग्राम सुलतापुर जिलामें जा बसे जिससे चन्दौसिया कहलाये। व्याह सम्बन्ध इनका प्रत्येक क्षत्रियों में होता है।

जोतियाना–**गोत्र**–कश्यप, **प्रवर तीन**–कश्यप, अप्सार नैध्रुव **वेद**–सामवेद, **शाखा**–कौथुमी, **सूत्र**–गोभिलगृह्यसूत्र है।

यह वंश अपनेको कछवाहोंकी शाखामें बतलाता है।

चन्द्रवंशी क्षत्रियोंका वर्णन।

सोमवंशीय क्षत्रिय–चन्द्रवंशीय हैं। **गोत्र**–अत्रि, **प्रवर तीन**–अत्रि, आत्रेय, शातातप **वेद**–यजुर्वेद, **शाखा**–वाजसनेयी, **सूत्र**–पारस्करगृह्यसूत्र, **कुलदेवी**–महालक्ष्मी, **नदी**–त्रिवेणी है।

प्राचीन संस्कृत ग्रन्थोंमें चन्द्रको सोम और इन्दु करके लिखा है जो चन्द्र ही के पर्य्यायवाची शब्द हैं। इसी चन्द्रवंशका नाम सोमवंश है। ये लोग पंजाब, विहार, संयुक्त प्रान्तमें पाये जाते हैं। इनका व्याह सम्वन्ध प्राय: सभी क्षत्रियोंमें होता है।

यादव–चन्द्रवंशकी शाखा है, **गोत्र**–कौण्डिन्य, **प्रवर तीन**–कौण्डिन्य, स्तिमिक, कौत्स, **कुलदेवी**–योगेश्वरी, **वेद**–यजुर्वेद, **शाखा**–वाजसनेयी, **सूत्र**–पारस्करगृह्यसूत्र, **गुरु**–दुर्वासा, **वृक्ष**–पीपल व कदम्व, **नदी**–यमुना, झन्डापीला, विजय दशमीको खड्गपूजन होता है।

इस वंशमें प्रथम पुरुष महाराजा ययाति हुये जिनका जन्म चन्द्रवंशमें हुआ था। उन्हीके पांच पुत्रोंमेंसे श्रेष्ठ पुत्रका नाम यदु था जिनके नामसे इस यादववंशकी प्रतिष्ठा हुई, और इन्हींके नामसे यादववंशी प्रसिद्ध हुये। इस वंशमें अनेक प्रतिष्ठित पुरुष होते आये हैं। इस वंशके समान वीर क्षत्रिय किसी वंशमें न हुये। प्रतिष्ठित महापुरुष जैसे शूरसेन, उग्रसेन, बलराम, कृष्णचन्द्र जो नीतिके भण्डार और बलके समुद्र थे, जिनकी सारगर्भित गीता आज भी सारे संसारमें शिरोधार्य हो रही है इसी वंशमें हुये थे। एक समय ऐसा था कि इस यादव वंशके सामने किसीका लोहा नहीं उठता था। इस वंशका इतिहास लिखना क्या है सूर्य्यको दीपक दिखाना है। जहां वेदव्यास ऐसे वेदज्ञ और गणेश जी ऐसे लेखक की कलम रुक गई वहां साधारण पुरुषोंकी गिन्ती ही क्या है? मर्य्यादापुरुषोत्तम श्रीकृष्णचन्द्रके समय इस वंशवाले असंख्य परिमाणोंमें थे। कालकी कराल गति है जिसने कृष्णचन्द्रके पीछे यादव वंशियोंका अभाव कर डाला, परंतु तो भी वर्तमान समयमें भारतके अनेक स्थानोंमें असंख्य प्रमाणोंमें कई एक शाखा प्रशाखाओंमें विभक्त पाये जाते हैं।

यादव वंशियोंकी मुख्य आठ शाखायें प्रसिद्ध हैं:—

(१) यदु—करोलके राजा जिनकी मथुरा जागीर है।

(२) भट्टी—जैसलमेरके राजा।

(३) जाड़ेज या जोड़जा कच्छभुजके राजा जोड़जा जाति अपनेको साम्बका पुत्र कहते हैं। इनका रहन सहन क्षत्रिय जातिके लिये प्रशंसित है। यह शिकार तथा खेलके बडे शौकिन हैं। इनका छोटासा राज्य जाम कहलाता है।

(४) जादौन, (५) शम्र (६) विन्धी और समेचा सिंधके निवासी कहे जाते हैं और इस वंशकी अनेक शाखायें मुसलमान होगयीं। कुछ प्रशाखायें मिलती भी हैं जिन्हें विस्तारभयसे नहीं लिखा। इस वंशकी रियासत या स्वतन्त्र राज्य जैसे करौली, जैसलमेर, राजपूतानामें; मैसूर दक्षिणमें; भूज, राजकोट, मोरवी, जामनगर, गोन्डाल और कच्छ काठियावारमें है। व्याह सम्वन्ध प्राय: प्रत्येक क्षत्रियों में होता है।

तंवर या तोवर–चन्द्रवंशी राजा परीक्षित के वंशज हैं। **गोत्र**–गार्ग, **प्रवर तीन**–गार्ग, कौस्तुभ, माण्डव्य, **वेद**–यजुर्वेद, **शाखा**–वाजसनेयी, **सूत्र**–पारस्करगृह्यसूत्र, **कुलदेवी**–योगेश्वरी, **निशान**–हरा, **नदी**–तुङ्गभद्रा है।

यह तोमर क्षत्रिय वंश भी यादवों की शाखा मानी जाती है। इनको ३६ राजकुलोंमें स्थान मिला है, चन्द्रवरदाई ने इसे पांडव के वंश में बतलाया है। महाराजा विक्रमादित्य इसी वंश में प्रकट हुये हैं और इसी वंश के अनंगपाल तंवर ने सम्वत् ८४८ में उजड़ी हुई दिल्लीको पुनः बसाया था। इसकी बीसवीं पीढी में दूसरा अनंगपाल हुये जिन्होंने निःसंतान मरने के कारण चौभान कुलभूषण नाती को गद्दी पर बिठलाया; परन्तु राजावली में लिखा है कि पृथ्वीराज ने राज्य छीन लिया था। राय बहादुर पं० गौरीचन्द्र हीरा झा जी लिखते हैं कि कई एक शिला लेखोंसे पता चलता है कि चौभानों ने विक्रम सम्वत् १२२०में अपने बाहुबलोंसे, राज्य छीन लिया था (टाड राजस्थान की टिम्प्पणी ४० पृ० ३४९ देखो) इस समय इनके अधिकारका ठिकाना तुअरगढ का इलाका है जो चमल नदी के दाहिने किनारे पर जमुना के संगम की ओर स्थित है, तथा जयपुर राज्यमें पाटन तुअर बाटी की छोटीसी जागीर है जहां का जागीरदार अपने को दिल्ली के प्राचीन सम्राटों का वंशधर मानता है। तोमरवंशियोंकी शाखा इस प्रकार है :–तोमर, २ जट ३ जंघारा, ४ सोमबाल, ४ बीरबाल, (बरुआर), ६ रैकवाल, ७ मुबोल, ८ तरार ९ पलिवार आदि है जिनमें कई एक जातिच्युत हो गयी हैं। व्याह सम्बन्ध क्षत्रियों में स्थान भेदसे होता है।

बेरुआर–तोमर की शाखा चन्द्रवंशी है। **गोत्र**–कश्यप, **प्रवर तीन**–कश्यप अप्यसार नैध्रुव, **वेद**–यजुर्वेद, **शाखा**–वाजसनेयी, **सूत्र**–पारस्करगृह्यसूत्र, **कुलदेवी**–चण्डिका है।

यह पवित्र क्षत्रियवंशी बहुत साहसी और बीर प्रकृतिके होते हैं। इस वंशके क्षत्रिय गण बलिया, गाजीपुर, बनारस, मुजफ्फरपुर आदि जिलों में पाये जाते हैं। व्याह सम्बन्ध श्रेष्ठ क्षत्रियोंमें होता है।

पैलवार–चंद्रवंश तोमर की शाखा है। **गोत्र**–व्याघ्र, **कुलदेवी**–चण्डी, **शाखा**–कौथुमी, **सूत्र**–गोभिलगृह्यसूत्र है।

कहते हैं कि गोरखपुर जिलेमें पालिवार स्थानके अदल बदल के कारण यह नाम पड़ गया है। इनका गोत्र भी तोमरके विरुद्ध व्याघ्र पुरोहितोंके बदलने से हो गया है। व्याह सम्बन्ध प्रत्येक क्षत्रियों में होता है और ये लोग अल्पसंख्यक पाये जाते हैं।

गहरवार–औठ कर्मवार चन्द्रवंशकी शाखामें हैं। **गोत्र**–कश्यप, **प्रवर तीन**–कश्यप, अप्यसार, नैध्रुव, **वेद**–सामवेद, **शाखा**–कोथुमी, **सूत्र**–गोभिलगृह्यसूत्र, **कुलदेवी**–अन्नपूर्णा, **देवता**–महादेव, **नदी**–गंगा, **धर्म**–शैव्य **बृक्ष**–अक्षयवट है।

यह प्रसिद्ध गहरवार क्षत्रिय चन्द्रवंश की शाखा मानी जाती है, जिसकी कीर्ति सारे संसार में विख्यात है। इस वंशमें बडे २ बीर पराक्रमी व साहसी पुरुष होते आये हैं। प्राचीन समयका इतिहास है कि चन्द्रमा के वंशमें अनेना हुये, जिनके वंशमें तेरहवां वंशधर काश्य राजा हुये, जिनके नाम से काशीपुरी विख्यात है, और १८ वां वंशधर दिवोदास हुये जो प्राचीन राजाओंमें अतिन्यायी और धर्मात्मा थे। इन्हींको श्रेष्ठ ग्रहकी उपाधि मिली थी जिससे इस चन्द्रवंशकी गहरवार संज्ञा हुई। यह स्कन्दपुराण काशी खण्ड अ० ४३ में लिखा है। गहरवार वंशमें एक पंचम सिंह हुये थे, जिन्होंने विन्ध्यवासिनी देवीको प्रसन्न करनेके हेतु अपना सिर खड़से काटकर हवन कुण्डमें चढाया। उस रुधिरसे एक सुन्दर बालक उत्पन्न हुआ। रुधिरकी बुन्दसे उत्पन्न होनेके कारण बुन्देला संज्ञा पडी जो एक विख्यात शाखा इस वंश की है। इसी शाखाके नामसे भारतमें बुन्देलखण्ड प्रसिद्ध हुआ, और इस वंशका राज्य इस समय चरखारी, अजयगढ़, विजावर, पन्ना राज्य

(जहांसे सोना चालान होता है), ओर्छा, दतिया, समथर राज्य हैं। बावनी, सरेला, जेतपुर, टीकमगढ़, सरीला और जिगनी ठिकाने हैं। ये लोग शिकार के बडे शौकीन होते हैं। झटके से कटा हुआ मांस खाना पसन्द करते हैं। इस गहरवार वंशके बारे में इतिहास वेत्ताओंने किसी २ ग्रंथ में लिखा है कि यह राठौड़की पुरानी शाखा है जो क्लिष्ट जान पडता है, क्योंकि राठौड़ क्षत्रिय सूर्य्यवंशी माने जाते हैं और वे इसे कबूल भी करते हैं और न राठौड़ की शाखा फिरिस्त में है। यह हो सकता है कि कनौजमें गोद जानेके कारण सूर्य्यवंश व राठौड़की शाखा करार दिये गये हों, परन्तु राठौड़की शाखा नहीं हैं। इस उच्च वंशज गहरवार क्षत्रियोंने छत्तीस राजकुलों में स्थान पाया है। व्याह सम्बन्ध प्रत्येक क्षत्रियोंमें स्थान भेदसे होता है।

चन्देल – चन्द्रवंशी क्षत्रिय। गोत्र–पराशर, प्रवर तीन–पराशर, शक्ति, वशिष्ठ, कुल **देवी** – महालक्ष्मी, तीर्थ–नर्मदा नदी. वेद–यजुर्वेद, शाखा–वाजससनेयी, सूत्र–पारस्करगृह्यसूत्र है, और बिहार प्रान्तमें चन्द्रायण, गोत्र बतलाते हैं।

यह चन्देलक्षत्रिय प्रसिद्ध चन्द्रवंशी राजा यदुसे तीसवां वंशधर 'हय' से हुये जिनके नामसे हइहोवंशी क्षत्रिय कहलाये। चेदीका राजा शिशुपाल इसी वंशमें हुआ था जिसके नामपर चेदी मुल्क हुआ और इसी वंशमें प्रसिद्ध पुरुष चन्द्रवर्मा हुये जिनके नामसे चन्द्रवंशी चन्देल क्षत्रिय कहलाये। हमीरपुर के निकट चन्देरीका दुर्ग है जो पहले चन्देलोका राज्य था। एक समयका जिक्र है कि ८०० सौ खृष्टाब्दमें यहांके राजा ससैन्य मोहवा पर चढ आये और परिहार राजाको परास्त करके मोहवाको बेदखल कर स्वयं राज्य करने लगे। वहां से फिर मुसलमान लोगों से पीडित हो मददके विना लडना पसन्द नहीं किया, और चन्देरी मोहवाको छोड कालिंजरका प्रसिद्ध किला दखल कर रहने लगे। इस वंशमें बडे वीर साहसी और पराक्रमी लोग होते आये हैं। इस वंशके पुरुषोंने अनेक क्षत्रिय राजाओंको परास्त करके उनकी लडकियोंसे विवाह किया था। चन्देल राजा परिमालके अधीन दो बड़े लड़ाके बनाफर वीर सेनापति थे जिनकी सहायता से पृथ्वीराजकी लडकी बेलासे अपने पुत्र ब्रह्माका व्याह किया था, और जब गौनाके लिये पुन: दिल्ली को अपने पुत्रको भेजा, तो वहां उन्होंने घमासान युद्ध किया और खेतकाम आये। इस शोक समाचारको सुन राजा परिमाल गंगामें डूबमरे जिनका इतिहास आल्हाछन्दमें वर्णित है। मुख्य यही कारण है कि पृथ्वीराजका नामी कवि चन्दवरदाईने इस पवित्र वंशको अपने रासो ग्रंथमें लिखा है कि काशी के राजाके पुरोहितकी कन्या हेमवती जो विधवा थी उससे व चन्द्रमाके संसर्गसे चन्देलकी उत्पत्ति हुई है, जो स्पष्ट द्वेषभावको प्रगट करता है। यह कवि का जातीय स्वभावका असर था जिन्होंने दरबारमें चौभान राजाको सन्तुष्ट करनेके लिये यह कल्पित आख्यायिका लिखी थी। आज तक जितने इतिहासवेत्ता होते आये हैं, कुछ महात्माओंने एक चन्देल वंशही नहीं बल्कि प्रत्येक क्षत्रिय पर कलंक लगानेमें प्रचुर शक्ति लगादी है, परन्तु क्षत्रिय मात्रकी उज्ज्वल कीर्ति सारे संसारके सामने आदर्श हो रही है। किसी २ का लिखना हैं कि चन्देलोंका व्याह–सम्वंध प्राय: जंगली व भार लोगोंके साथ होता है जो विलकुल मिथ्या है। क्योंकि प्राचीन इतिहासमें लिखा है कि मंडलगढ के निकुम्भ राजा वीरशाहसे परिमालकी लड़की दुर्गावतीका व्याह था, और ऐसा कोई राजघराना कुलीन क्षत्रिय नहीं था जिनका सम्बंध इस चन्देल वंशसे न हुआ हो। इस समय भी भारतके अधिकांश प्रान्तोंमें इनकी संख्या प्रबल है, जैसे प्राचीन रियासत गिद्धौर जो बिहार प्रांतके मुंगेर जिलाके अन्तर्गत है और सपई जिला कानपुरमें नालागढ, अगौरी, बरहर, विजयगढ़, काशीपुर, आदि संयुक्त प्रान्तमें भी जमीन्दार और जागीरदार पाये जाते हैं। इस वंशका व्याह सम्वंध प्रत्येक जाति क्षत्रियमें होता है।

हैहो क्षत्रिय चन्द्रवंशी हैं। **गोत्र**–कृष्णात्रेय, **प्रवर** तीन–कृष्णात्रेय, आत्रेय, व्यास, **कुलदेवी**–दुर्गा, **देवता**–शिवजी, **वेद**–यजुर्वेद, **शाखा**–वाजसनेयी **सूत्र**–पारस्करगृह्यसूत्र, **गढ़**–खडीचा (जिला वलिया), **नदी**–नर्मदा, **झण्डा**–नील, **पूजन** –कटार, **वृक्ष**–पीपल है।

यह प्राचीन वंश चन्द्रमाके वंशज यदुसे सहस्रद, सहस्रदसे हय है राजा हुए जिनके नामसे हैहो वंश प्रसिद्ध हुआ। यहहै कि नवम वंशधर कार्तवीर्य्य अर्जुन हुये जो अति धर्मात्मा थे जिनको परशुरामजीने घमासान युद्ध करके मार डाला। तत्पश्चात् इनके वंशज यत्र तत्र छिपके दूसरे रूपमें रहने लगे। इन्हींके वंशजोंकी कालक्रमसे एक प्रसिद्ध शाखा हुई जिसे कलचुरि वा करचौलिया कहते हैं। इस समय इस वंशवाले छोटे २ ताल्लुकेदार पाये जाते हैं जो संयुक्त प्रान्तमें अधिकतर हैं। व्याह–सम्वंध प्रत्येक क्षत्रियोंमें होता है।

कलचुरी वा करचौलिया–चन्द्रवंश है। **गोत्र**–कश्यप, **प्रवर तीन**–कश्यप, अप्सार, नैध्रुव, **वेद**–सामवेद, **शाखा**–कौथुमी **सूत्र**–गोभिलगृह्यसूत्र **कुलदेवी**–विन्ध्यवासिनी **देवता**–विष्णुजी हैं।

यह हैहो वंशकी शाखा मानी जाती है जब परशुरामजीसे पीड़ित हो इस हैहोवंशके क्षत्रियगणने देखा कि सिवाय नाम बदलने व अपना भेष बदलनेके दूसरा कुछ प्रयत्न नहीं है तो झट नाम, गोत्र, वेद बदलकर जिस स्थानपर रक्षा होती देखी वहीं रहने लगे। अब इस वंशके क्षत्रियगण संयुक्त–प्रान्तके कई जिलोंमें पाये जाते हैं, और कुछ विहार प्रान्तके मुजफ्फरपुर, पटना, दरभंगा आदि जिलोंमें भी पाये जाते हैं। व्याह सम्बंध प्रायः क्षत्रियोंमें होता आया है और होता भी है।

कौशिक–क्षत्रिय चन्द्रवंशी हैं। **गोत्र**–कौशिक, **प्रवर तीन**–कौशिक, अत्रि, जमदग्नि, **कुल-देवी**–योगेश्वरी, **देवता**–शिव, वेद यजुर्वेद, **शाखा**–वाजसनेयी, **सूत्र**–पारस्करगृह्यसूत्र, **नदी**–काशी है।

इस वंशकी उत्पत्ति चन्द्रवंशसे है। कहते हैं कि पुरूरवा राजा इस वंशमें हुए, जिनके पुत्र विजयके वंशमें कौशिक राजा हुए। इन्हींके वंशज कौशिक क्षत्रिय करके प्रसिद्ध हुए। यह प्राचीन राजवंश है। गोरखपुर जिलेमें गोपालपुर ठिकाना है। इस वंशके क्षत्रिय अल्पसंख्यक पाये जाते हैं। व्याह संबन्ध क्षत्रियोंमें होता है।

सेंगर–क्षत्रिय चन्द्रवंशी हैं। **गोत्र**–गौतम, **प्रवर तीन**– गौतम, वशिष्ठ, वार्हस्पत्य, **वेद**–यजुर्वेद, **शाखा** – वाजसनेयी, **सूत्र**–पारस्करगृह्यसूत्र **कुलदेवी**–विन्ध्यवासिनी हैं।

पुराणोंमें देखने से पता चलता है कि यह सेंगर वंश चन्द्रवंशियोंमेंसे है। महाराजा अनुके भ्राता यदु हुये उनके नामसे प्रथम अनुवंशी कहलाये। महाराज अनुके वंशमें अंग हुये जिनके नामसे अंग देश प्रसिद्ध हुआ। और उनका वंश अंगवंशी कहलाया। इनकी राजधानी अंग देश में चम्पा नगरी थी। अंग देशके राजा रोमपाद (या लोमपाद) अयोध्या के राजा दशरथके मित्र थे। उन्होंने शान्ता जो दशरथजीकी कन्या थी उसे लेकर कश्यप (विभाण्डक ऋषि) के पुत्र शृङ्गी मुनिसे विवाह कर दिया और उनसे उत्पन्न अपने दौहित्र महाराजा चतुरंगको अपना अधिकारी बनाया। महाराजा चतुरंगके पिता और माता दोनों कश्यप सूर्य्यवंशी थे न कि चन्द्रवंशी किन्तु शृंगाधियोंकी चन्द्रवंशी गद्दी परमहाराजा रोमपादके पुत्र होकर विराजमान होनेके कारण पुराणों में चन्द्रवंशियोंमें ही गणना की गयी है। अंग देशके राजाओंकी दो शाखायें हो गयीं बड़ी शाखा वाले कर्णके पुत्र विकर्ण आदि सौ पुत्र हुये और अंग देशके स्वामी बने रहे जिनको कुरुवंशी दुर्योधन ने धिगांधिगीसे अंग देशकी गद्दी देदी थी। विकर्ण आदि सौ पुत्रोंने गंगा जमुनाके दक्षिण गंगासागर से चम्बल नदी तकके देश पर अधिकार जमाया। इन्हीं सौ पुत्रोंमेंसे शतकर्णी थे जिनके नामके

अपभ्रंशसे सेंगर संज्ञा हुई। अंग देशके छूटनेके बाद राट (कर्ण, स्वर्ण) सिंघलद्वीप, दक्षिण मुंगेर गुजरात, डहार (डाहल), कनार आदि देशोंपर सेंगरोंका राज्य था। महाराजा जगमोडनपुर सेंगर वंशके टिकाई राजा हैं और इटावा जिलेमें महाराजा भरेह राजा रूरू, राव, कखावत, राव-भिखरा, रावतकुर्शी और लाल मल्हौसी जिला जालौनमें राजा हरदोई, दीवान, सरावण और राव राणियां रीवां राज्यमें राजा विछरहट्टा ठाकुर नई गद्दी जिला उन्नावमें, ठाकुर कंथा और जिला बलियामें लखनेसर (रसड़ा) युक्त प्रदेश मध्य भारत राजपुतानेमें मेंगर प्रतिष्ठाकी दृष्टिसे देखे जाते हैं। कप्तान बिगले साहब विदेशी होने परभी निष्पक्ष होकर अपनी पुस्तकमें सेंगरोंकी वीरोचित गुणोंकी प्रशंसा की है। सेंगरोंमें शाखा नहीं है, ठिकानोंके नाम प्रतिष्ठित हैं—जैसे जगमोहनपुरके सेंगर भरेहके सेंगर इत्यादि। यह भारतके अधिकांश प्रान्तोंमें बहुसंख्यक पाये जाते हैं। व्याह सम्बन्ध प्रत्येक क्षत्रियोंमें होता है।

झाला—चन्द्र वंशकी शाखा है। **गोत्र—**कश्यप **प्रवर तीन—**कश्यप, अप्सार, नैध्रुव, **वेद—**सामवेद, **शाखा—**कौथुमी, **सूत्र—**गोभिलगृह्यसूत्र है। **कुलदेवी—**कालिका, **इष्ट—**महादेवजी, **धर्म—**वैष्णव है।

टाड साहेब लिखते हैं कि झाला जाति तो न सूर्य्य वंशमें न चन्द्र वंशमें और न अग्नि वंशमें गिनी जाती है, परन्तु ई० सन्के १५ वीं शताब्दीमें गांधार कविने मंडलिक काव्य बनाया था उसके छठें सर्गमें झालोंका चन्द्रवंशी होना लिखा है। मेवाड़के राणा प्रतापसिंह पर अकबरने चढाई की थी, उस समय नहीं बल्कि राणा सांगा व बाबरमें बयानाके पास लड़ाई हुई थी, ठीक उसी समय झाला सर्दार अज्जाने राणा सांगाका आसन ग्रहण कर युद्धनायक बन उक्त राणाकी जान बचाई और आप खेत काम आये। उसी समय यादगारमें मेवाड़के अन्तर्गत झाला वंशियोंको बहुत प्रतिष्ठा मिली थी। झालोंके अधीन वर्त्तमान समयमें ध्रांगध्रा, लीमड़ी, बढ़वान, बांकानेर आदि काठियाबार राज्य और राजपुतानामें झालवाडका राज्य तथा मेवाड़में सादड़ी, देलवाड़ा, गोगुन्दा वगैरह तथा कोटा राज्यमें कोटारीका ठिकाना है। रायबहादुर पं. गौरीचन्द हीरा झा के टाड राजस्थान ७ वें प्रकरणकी टीप्पणी २२१ से २२३ तकमें लिखा है:—झाला क्षत्रियोंका कहीं २ गोत्र मरीची भी है और कुलदेवी बाणमाता और इनकी १३ शाखाये हैं जिनमें मकबाणा एक प्रसिद्ध है। झाला वंशी क्षत्रिय ३६ राज वंशोंमें १८ वां प्रसिद्ध है। कई एक मुसलमानी युद्धमें राणा वंशका साथ दे बडा नाम प्राप्त किया है। व्याह सम्बन्धमें ये अपनी कन्या राठौड़ कछवाहा क्षत्रियोंको देते हैं और यदुवंशी और राठौड़की कन्या लेते हैं। इस वंशवाले प्राय: राजपुताना और दक्षिण भारतमें पाये जाते ह।

गंगा वंश—चन्द्रवंशकी शाखा है। **गोत्र—**काण्वायन, **प्रवर दो—**काराव, अश्वत्थ, **कुलदेवी—**योगेश्वरी, **वेद—**सामवेद, **शाखा—**कौथुमी, **सूत्र—**गोभिलगृह्यसूत्र है।

इस वंशका निकास चन्द्रवंशसे माना जाता है जो विशेषत: गोत्रसे अनुमान होता है। कहते है कि चन्द्रवंशी क्षत्रियमें एक प्रसिद्ध पुरुषका नाम गंगा था; जिसके नाम से उक्त वंश प्रख्यात हुआ। इसी राजाने जगन्नाथपुरीका प्रसिद्ध मंदिर बनवाया था, जो भारतमें एक है। मध्य प्रदेशमें कालाहेडीका राजा इस वंशके हैं। वर्त्तमान समय में इनका रहन सहन कैसा है हमें ज्ञात नहीं।

कलहंस—चन्द्रवंशकी शाखा है। **गोत्र—**अंगिरस, **प्रवर तीन—**आंगिरस, वशिष्ट, बार्हस्पत्य, **कुलदेवी—**योगेश्वरी, **वेद—**सामवेद, **शाखा—**कौथुमी, **सूत्र—**गोभिलगृह्यसूत्र है।

इस वंशकी उत्पत्तिका लगाव चन्द्रवंशी राजा जरासन्धसे माना जाता है और इस वंशवाले अपनेको चन्द्रवंशी मानते भी हैं। इस वंशका व्याह सम्बन्ध प्रसिद्ध क्षत्रियों में होता है। इस वंशके

क्षत्रियगण संयुक्त प्रान्त व कुछ विहारके छपरा भागलपुर जिलोंमें पाये जाते हैं। कहीं २ इनको परिहारकी १२ शाखाओं में माना है जो गलत है।

जनवार—क्षत्रिय चंद्रवंशकी शाखा है गोत्र—कौशिक, प्रवर तीन—कौशिक, अत्रि, जमदग्नि, **कुलदेवी**—चण्डिका, वेद—यजुर्वेद, शाखा—वाजसनेयी, सूत्र—पारस्करगृह्यसूत्र, धर्म—अब वैष्णव मानते हैं।

इस सर्वश्रेष्ठ कुलकी उत्पत्ति वरि और शाह चंद्रवंशीय वीरशिरोमणि तृतीय अर्जुनके प्रपौत्र महाराजा जनमेजयके वंशधरसे माना जाता है न कि सुलंकी वंश से। इस वंशकी जनवार संज्ञा गुजरातमें जपानेड़ उर्फ पावागढ़ स्थानसे प्रसिद्ध हुई। इस समय इस वंशका ठिकाना बलरामपुर, गोन्डा, बहराईच, प्रतापगढ़ आदिमें हैं। व्याह सम्बन्ध सभी क्षत्रियोंमें होता है। इस वंशवाले अल्पसंख्यक पाये जाते हैं। इनके पूर्वजोंने जबसे जैन धर्मकी दीक्षा ग्रहण की तबसे इनका नाम जैनवार या जनवार हुआ। यह भी प्रसिद्ध वंश है।

पलवार—चन्द्रवंशकी शाखा, **गोत्र**—वैयाघ्र, **प्रवर** दो—वैयाघ्र, सांकृति, **वेद**—सामवेद, **शाखा**—कौथुमी, **सूत्र**—गोभिलगृह्यसूत्र, है। श्रावणमें नागोंकी पूजा करते हैं।

ये लोग अपनेको चन्द्रवंशी मानते हैं। व्याहसम्बन्ध प्रायः सभी क्षत्रियोंमें होता है। गोरखपुर, आजमगढ़ फैजाबाद, जिलोंमें पाये जाते हैं।

विलोदरिया—चन्द्रवंशकी शाखा, **गोत्र**—अत्रि, **प्रवर तीन**—अत्रि, आत्रेय, शातातप, **कुलदेवी**—योगेश्वरी, **वेद**—यजुर्वेद, **शाखा**—वाजसनेयी, **सूत्र**—पारस्कर—गृह्यसूत्र, **धर्म**—शाक्त, अब वैष्णव है।

इस वंशवालोंका कहना है कि राज्य वसोली और द्रुपदमें विश्वामित्र और बाह्लिकका वंश पृथक् हुआ है। तुंगपालसे तोमर हुये और इस वंशके राजा भोजपाल विलादर स्थानमें आये तबसे उक्त नामके कारण विलादरिया संज्ञा हुई। व्याह सम्बन्ध सभी क्षत्रियोंमें होता है। ये लोग क्षत्रियोचित कर्म करते हैं और संख्यामें अल्प मालूम होते हैं। इस वंशके क्षत्रियगण संयुक्त-प्रान्तमें पाये जाते हैं।

बनाफर—चन्द्रवंशकी शाखा—**गोत्र**—कौण्डिल्य, **प्रवर तीन**—कौण्डिल्य, स्तिमिक, कौत्स, **कुलदेवी**—शारदा, **वेद**—यजुर्वेद, **शाखा**—वाजसनेयी, **सूत्र**—पारस्करगृह्यसूत्र, **गुरु**—गोरख, विजय दशमीको खड्ग पूजन होता है। **धर्म**—शाक्त व वैष्णव है।

यह बनाकर क्षत्रियवंशके विषयमें लिखा है कि —

दोहा—रहत किते दिन जब भये, ता काननके धाम।
पुत्र हिडम्बाके भयो, धरश्च धरूका नाम॥ } जातिभास्कर।

दोहा—भीम धुरन्धरको तनय, नाम धरूका मानि।
तिन्हते क्षत्रिय प्रकट भौ, जाति बनाफर खानि॥ } नृप वंशावली

स्कन्द पुराणके माहेश्वर खण्ड अध्याय ६० में घटोत्कचने श्रीकृष्णजीसे अपने वर्णके बारेमें पूछा कि मैं कौन हूं तो वासुदेवने कहा कि तुम क्षत्रियवीर्यसे हो इस लिये क्षत्रिय हो, प्रथम देवीकी आराधना करो, कर्म विधिपूर्वक करनेसे बल प्राप्त होगा और पंचयज्ञ को मत छोडो। इस वंशमें बडे पराक्रमी वीर दक्ष राजा और बछराजे हुये जिनके वीरपुत्रश्रेष्ठ आल्हा ऊदल मलखान, सुलखान, हुये हैं जिनकी ख्याति भविष्य पुराण आल्हा छन्दमें लिखी है। इनका व्याह सम्बन्ध क्षत्रियों में होता है और संयुक्तप्रान्तमें पाये जाते हैं।

खाति–चंद्रवंशकी शाखा, **गोत्र**–अत्रि, **प्रवर तीन**–अत्रि, आत्रेय, शतातप, **कुलदेवी**–कालिका, **वेद**–यजुर्वेद, **शाखा**–वाजसनेयी, **सूत्र**–पारस्कर गृह्यसूत्र है। विजयदशमीको खड्ग पूजन होता है, **धर्म**–शाक्त है।

खाति कोई तीनसौ वर्ष हुये कि यह जाति कमाऊं की सिलौड़ पट्टी में आकर बसी। यह आगरा प्रान्तके तुवार वंश से निकली हुई है। जैसराज केसरसिंह व छंलु, यह तीन पुरुष गढ़वालमें आकर बसे थे। वहांसे मुजफ्फर पुर जिला अन्तर्गत रूपसे जो एक भारी परगना है वहां आकर बसे। ये लोग बडे धर्मनिष्ठ व साहसी होते आये हैं। इसी रूपसके वर्तमान प्रसिद्ध पुरुष अयोध्यासिंहने अयोध्यानगर पुरणिया जिला कुरसेला स्टेशनके पास बसाया। इस वंशके क्षत्रियगण प्रायः रूपस ७ कोसके अन्तर्गत बसे हुए हैं। यह उक्त बाबू साहबकी जमीन्दारी पायी जाती है। ये लोग विहार प्रान्तमें अच्छी नजरसे देखे जाते हैं।

भारद्वाज–चन्द्रवंशकी शाखा है। **गोत्र**–भारद्वाज, **प्रवर तीन**–भारद्वाज, बार्हस्पत्य, आंगिरस, **वेद**–यजुर्वेद, **शाखा**–वाजसनेयी, **सूत्र**–पारस्करगृह्यसूत्र, **कुलदेवी**–शारदा, **धर्म**–शाक्त है।

ये लोग अपनेको चन्द्रवंशी राजा पुरुके घरानेमें होना बतलाते हैं। पंजाब और कुछ संयुक्त न्तप्रामें ये पाये जाते हैं। इन लोगोंका कहना है कि हम लोगोंको चन्द्रवंशीसे नाम बदलकर भारद्वाज वंशी पड़नेका मुख्य कारण परशुरामजीके भयसे भारद्वाजकी शरण रहनेसे हुआ। ब्याह सम्बंध क्षत्रियोंमें होता है।

ऋथ–चन्द्रवंशकी शाखा है। विदर्भ राजाके पुत्रसे यह वंश चला।

लोमपाद–चन्द्रवंशी राजा यदुके घरानेमें राजा विदर्भके पुत्रसे वंश चला। संयुक्तप्रान्तमें अल्पसंख्यक पाये जाते है। व्याह सम्बंध क्षत्रियों में होता है।

दोनवार–चन्द्रवंशकी शाखा है। **गोत्र**–कश्यप, और कहीं २ वत्स गोत्र भी है।

क्षत्रिय लोग इनको क्षत्रिय माननेमें संदेह करते हैं। परन्तु ब्याहसम्बंध क्षत्रियोंमें होता है। ये लोग संयुक्तप्रान्तमें पाये जाते हैं।

जैसवार–यदुवंशकी शाखा है। **गोत्र**–काश्यप, **प्रवर तीन**–काश्यत, अप्सार, नैध्रुव, **इष्ट**–महादेवी, **वेद**–सामवेद, **शाखा**–कौथुमी, **सूत्र**–गोभिलगृह्यसूत्र है।

यह अपनेको ययाति राजाकी देवयानीकी सन्तान बतलाते हैं। चन्द्रवंशमें जशध्वल नामक राजा हुआ। इसी जशध्वलके तीन पुत्र मल, मण्डल और सेलिग हुआ। इस जशध्वलके वंशज जैसवार कहलाये। संयुक्त प्रान्तमें पाये जाते है। व्याह सम्बंध इने गिने क्षत्रियों में होता है।

मौखरी–चन्द्रवंश है। यह वंश क्षत्रियोंमें शिरोमणि है। इसका वर्णन हर्ष चरित्र लिखा है। अब इस वंशके क्षत्रिय नहीं मिलते हैं, न जाने किस वंशमें मिल गये।

काण्व–चन्द्रवंशमें कण्व नामक ऋषि हो गये हैं, उन्हींके नामानुसार यह वंश चला है। मौर्य्यवंशी अन्तितम पुरुषका नाम पुष्यमित्र था उसको कण्ववंशी राजाने हराकर काण्व राज्यकी स्थापना की जो ४५ वर्ष राजा रहे। वर्तमान समयमें इस वंशवाले कहीं नहीं पाये जाते हैं।

द्रहयु–चन्द्रवंशी हैं। राजा द्रहयुसे इस प्राचीन वंशकी उत्पति है। इस वंशके त्रिपुरा राजा (बंगाल प्रान्तमें) हैं।

हरद्वार–चन्द्रवंशकी शाखा है। **गोत्र**–भार्गव, **प्रवर तीन**–भार्गव, नीलोहित, रोहित, **देवता**–शिवजी, **धर्म**–वैष्णव है।

ये अपनेको चन्द्रवंशी मानते हैं और हरद्वारमें रहनेसे इनका नाम हरद्वार पड़ा है। ये लोग प्रायः आजमगढ़में पाये जाते हैं। व्याह सम्बंध क्षत्रियोंमें होता है।

चौपट खम्भ–गोत्र–काश्यप, **प्रवर तीन**–काश्यप, अप्सार, नैध्रुव, **वेद**–सामवेद, **शाखा**–कौथुमी, **सूत्र**–गोभिलगृह्यसूत्र, **धर्म**–वैष्णव, देवता–विष्णु हैं ।

ये लोग प्रायः जौनपुर, फैजाबादमें पाये जाते हैं और अपनेको चन्द्रवंशी कहते हैं । व्याह सम्बंध क्षत्रियोंमें होता है ।

तिलोता–गोत्र–काश्यप, **प्रवर तीन**–काश्यप, अप्सार, नैध्रुव, कुलदेवी–दुर्गा, **वेद**–सामवेद, **शाखा**–कौथुमी, **सूत्र**–गोभिलगृह्यसूत्र है ।

यह आरा जिला (बिहार प्रान्त) में पाये जाते हैं । यह अपनेको तंवर क्षत्रियसे निकास बतलाते हैं । व्याह सम्बंधमें अपनी कन्या चौभान क्षत्रियोंको देते हैं और लोहतमिया व ठेकहा आदिकी कन्या लेते हैं ।

जरौलिया–ये अपनेको तंवरवंशसे निकला हुआ बतलाते हैं । बुलन्दशहरमें पाये जाते हैं । इनका व्याह सम्बंध क्षत्रियोंमें होता है ।

जसावट–ये अपनेको क्षत्रिय कहते हैं और व्याह सम्बन्ध क्षत्रियोंमें होता है, परन्तु इनको अपने इतिहासका कुछ भी पता नहीं है । मथुरा व आगरेमें पाये जाते हैं । अल्प संख्यक जान पड़ते हैं, क्योंकि किसी भी सरकारी रिपोर्टमें इनका जिक्र नहीं पाया जाता है ।

लधिया–राजपूत चन्द्रवंश राजा कर्णकी संतान हैं । यथार्थ नाम वसुखीन था । सूर्य्यके उपासक होनेके कारण जो ये लोग अपनेको सूर्य्यवंशी समझते हैं यह भ्रम है । ये लोग काश्मीर प्रान्तमें पाये जाते हैं ।

खलोरिया–चन्द्र वंश, राज्य चनाहन कमाऊं, त्रिलासपुर, हिंडोर, नालागढ़, पंजाबमें पाये जाते हैं ।

धनवस्त क्षत्रिय–यह अपनेको क्षत्रिय कहते हैं । इनका विवाह सम्बन्ध भी क्षत्रियोंमें होता है । जौनपुर, बनारस व आजमगढ़में ये लोग पाये जाते हैं । अपनी कन्या ननवग, बसू व चदेल क्षत्रियोंको देते हैं और गहलौत व वैसोंकी कन्या विवाहते हैं ।

अथरब क्षत्रिय–यह अपनेको क्षत्रिय कहते हैं और विवाह सम्वन्ध भी क्षत्रियोंमें पाया जाता है । ये लोग मोतिहार जिलेमें पाये जाते हैं ।

वरहिया क्षत्रिय–यह अपनेको क्षत्रिय कहते हैं और अपना निकास चन्द्रवंशसे मानते हैं मुंगेर जिले के बरहिया स्थानसे मुजफ्फरपुर आये तबसे उक्त संज्ञा हुई । विवाह सम्बन्ध क्षत्रियोंमें होता है ।

अग्निवंशी क्षत्रियोंका वर्णन ।

चौहान–अग्निवंश, गोत्र–वत्स, **प्रवर पांच**–और्व्य, च्यमन, भार्गव, जामदग्न्य, अप्नुवान है । **वेद** सामवेद, **शाखा**–कौथुमी, **सूत्र**–गोभिलगृह्यसूत्र, **कुलदेवी**–आशापुरी, **गुरु**–वशिष्ठ, **ऋषि**–शांडिल्य, **निशान**–पीला, भृगु, **धर्म**–वैष्णव, व शाक्त, **नदी**–चन्द्रभागा, **इष्ट**–अचलेश्वरमहादेवजी, **कुलदेवता**-श्रीकृष्णजी, **शस्त्र**–तलवार, **ध्वजा**–गरुर रक्षक ।

इस प्रसिद्ध वंशकी उत्पत्ति अग्नि कुण्डसे बतलायी है, इसी वीर कुलकी अग्निकुण्डसे वे तीन क्षत्रियोंसे प्रथम भगवान विष्णुने दुर्वादलकी बनी हुई पुतलीको अग्निकुण्डमें मंत्रद्वारा डाल दिया । तो उस कुण्डसे एक तेजस्वी वीर पुरुष चार हाथ युक्त साक्षात् विष्णुका अंश स्वरूप निकल

पड़ा जिनको चार हाथ होनेके कारण चौहान नाम हुआ। उस पुरुषके हाथमें बड़ा धनुष होनेसे ऋषियोंने चापुहानि भी कहा। उस समय उस वीर पुरुषका गोत्र वशिष्ठ व वेद यजुर्वेद, शाखा वाजसनेयी, सूत्र पारस्करगृह्यसूत्र था। लेकिन कालक्रम से व स्थानोंके अदल बदलसे वर्त्तमान इस वंशकी वेद, शाखा सूत्र, व गोत्र वगैरह ऊपर लिखे अनुसार हैं। इस वंशवाले अपनेको विशेषत: अग्निवंशीही मानते आरहे हैं, जिसके प्रमाण भविष्य पुराण व चन्दवरदाई का रासोग्रन्थ है। पहले पहल जब आबू पर्वतसे शत्रुओंको परास्त कर ऐरावत हाथी पर सवार होकर उन देवताओं और ऋषियों द्वारा आशिर्वाद वो आज्ञा पाकर राजपुताना प्रदेशके मुख्य अजमेर नगरीकी प्रतिष्ठा की। क्रमश: अनेक स्थानोंमें इनके वंशज फैलने लगे और अनेक शाखा उपशाखामें विभक्त हो गये। इसी अजमेर नगरी से महाराजा पृथ्वीराजने तोमर वंशियोंके तीसरे महाराज अनंगपालकी अनुपस्थितिमें उनकी सेनाको परास्त कर अपने अग्निवंशजोंके साथ दिल्लीकी गद्दी पर विराजमान हुये। यह चौभान कुलभूषण अस्त्र विद्याके अद्वितीय जानकार थे। इनके बारेमें एक इतिहास है कि अनंगपाल राजाकी दो लड़कियां थीं जिनमें बडी लड़कीका व्याह जिसका नाम कमलावती था अजमेरके राजा सोमेश्वरसे हुआ था इसी कमलावतीके गर्भसे पृथ्वीराजका जन्म हुआ था। इनके जन्मके बाद जब ज्योतिषियोंको बुलाकर राजा अनंगपालने पूछा कि इस बालकका लक्षण कैसा है, तो पण्डितोंने बतलाया कि यह अपने नानाकी गद्दीका अधिकारी होगा और भारतवर्षमें अद्वितीय वीर कहलायेगा। इन सब बातोंको सुन राजा अनंगपालने अपनी लड़की को मरवा डाला और पृथ्वीराज जो तीन वर्षका हो चुका था उसे उसी अवस्थामें अजमेरके जंगली कुएंमें डलवा दिया। अकस्मात् यहां पर दैवी इच्छासे चिरजीवी द्रोण पुत्र अश्वत्थामाजी आ पहुंचे। उन्होंने देखा कि एक बालक बहुत करुण स्वरसे रोरहा है तो झट उन्होंने उस बालकको निकाला और अपने साथ रखकर धनुर्विद्याकी अच्छी शिक्षा दी। बाद उन्होंने वर्णोचित शिक्षा देकर छोड दिया। उनके पाससे पृथ्वीराज अजमेर आकर जब सुना कि अनंगपाल मगधके राजासे युद्धार्थ राजगृही गये हुये हैं तो शीघ्र उन्होंने अपनी फौज और चाचा कान्ह देवको साथ लेकर दिल्ली पर चढाई करदी और जो सेना गढ़की रक्षा करती थी उसे परास्त कर आप राजगद्दी पर सं० १२२३ में बैठ गये। इस समाचारको सुनकर अनंगपालने पृथ्वीराजसे युद्ध करना पसन्द नहीं किया क्योंकि वे अपुत्र थे। बाद वे जंगलको चले गये। अनंगपालकी दूसरी लड़की जो कमलावतीसे छोटी थी जिसका व्याह कन्नौजके राजासे था इन्हीं अनंगपाल राजाके छोटे नाती जयचन्द थे, जो पृथ्वीराजको दिल्ली तख्त पर बैठा हुआ देख सदा देषभाव रखने लगे। जयचन्द राजाको कोई लड़की नहीं थी तो उन्होंने एक मेलेमें एक सुन्दरी लडकी पायी जिसका नाम संयोगिता रखा। उसीके स्वयम्बरमें भारतके कोने २ के क्षत्रिय राजे आये थे। एक पृथ्वीराज नहीं आये जिनके प्रतिनिधि स्वरूप यज्ञशालाके द्वार पर एक स्वर्णकी मूर्ति बना रक्खी गयी। वहां संयोगिता माला लेकर गयी और सब राजाओं को छोड उसी प्रतिनिधि मूर्तिके गलेमें माला पहरादी। यह शुभ समाचार पृथ्वीराजको एक दूतसे जो संयोगिताका भेजा हुआ था मिला। तब पृथ्वीराज घोर युद्ध कर उस लड़कीको दिल्ली ले गये। इन सब घटनाओंसे जयचन्दका गुस्सा दिनदिन बढता गया, और जब अपनेसे पृथ्वीराजको कुछभी खलल नहीं पहुंचा तो अरब के मुसलमान महमूदगोरीको खबर दे बुलवाया जो कई बार इनसे हार खाकर लौट गया था। इस बार जयचन्दके बताये हुये छल छन्दसे राजाको हार खानी पडी और दिल्लीके तख्त पर गोरीका शासन हुआ। पृथ्वीराज बंदी हो अरबको भेजे गये। ऐसा दुर्भाग्य केवल चौहान वंशियोंका ही नहीं बल्कि सारे हिन्दुस्तानियोंका गौरव सूर्य्य डूब गया। वहांसे चौहान

लोग अनेक शाखा प्रशासखाओंमें विभक्त हो अनेक स्थलोंमें जा बसे जिनमें चौबीस शाखा इस प्रकार प्रसिद्ध हैं :—

शाखा नाम स्थान ।

१ **हाड़ा**—बुंदी और कोटाका राज्यवंश जो हड़ौतीके नामसे प्रसिद्ध है ।

२ **खीची**—अनडका उपनाम खीची दुर्भिक्षके समय खीची खिलानेसे ।

३ **भदोरिया**—स्थानके नामसे ।

४ **सोनगन**—स्वर्ण गिरि पर्वत पर रहनेसे ।

५ **देवड़ा**—उक्त नामके राजासे । ६ **पाविया**—पावा गढके नामसे । ७ संचोरा । ८ गयलवाल । ९ निर्वाण । १० मालानी । ११ पूर्विया । १२ सूरा । १३ नादडेचा । १४ संक्रेचा । १५ भुरेचा । १६ बालेचा—वालेस, वालेस नाम नगर बसाया । १७ तस्सेरा । १८ चाचेरा । १९ रोसिया । २० चान्दू—चदानाया—चादनी—लोदरगढ़ । २१ भावर । २२ वंकट । २३ मोपले । २४ धनारिया ।

इसके वाद प्रशाखायें हैं जिनमें निमराणा अलवरका वच्छगोती मैनपुरका ठिकाना कुरवार है, और जो है विस्तारभयसे नहीं लिखा गया । इनके **रियासत** :—छोटा उदयपुर, वरिया, डेडरिया, हमीरका बूंदी, कोटा, (हाड़ा) सिरोही (देवरा), भदावर, हलदौर, राघोगढ़ खीचांका राज है । पूर्वमें मैनपुरी, प्रतापनगर, राजोर, एटा, खमसेपुर, भदावर, बलरामपुर वडे ठिकाने हैं । व्या।ह सम्वंध प्रत्येक क्षत्रियोंमें होता है और सारे भारतमें एक बंगाल प्रान्तको छोड कर बहुसंख्यक पाये जाते हैं ।

प्रमार—या पंवार अग्नि वंश, **गोत्र**—वशिष्ठ, **प्रवर तीन** वशिष्ठ, अत्रि, सांकृति, **कुलदेवी**—सिचीय माता, **पश्चिममें** —दुर्गा, **कालीदेवी राजपुतामें** गजाननमाता, **वेद**—यजुर्वेद, **शाखा**—वाजसनेयी, **सूत्र**—पारस्करगृह्यसूत्र, विजयदशमीको तलवार पूज्न, **निसान**—पीला, **गादी** पायगढ़ **वृक्ष**—कदंब, **धर्म**-शाक्त है ।

इस श्रेष्ठवंशकी उत्पत्ति लिखी जा चुकी है कि अग्निवंशी हैं । यज्ञ कुण्डसे यह अग्नि वंशियों में बहुत प्रभावशाली हुआ । अबतक कहावत है कि पृथ्वी पंबारोंकी है । यह पुरानी कथा है कि सतलजसे लेकर समुद्रतक इनका देश किसी समय था इनके स्थान माहेश्वर, धार,मांडु, उज्जैन, चन्द्रभागा, चित्तौर, आबू, चन्द्रावती, मऊ, मैदान, प्रभावत्ती, अमरकोट, मैशुर, लोद्रवा, पट्टन, प्रसिद्ध हैं । इस वंशमें स्थानोंके हेर फेरसे अनेक शाखा प्रशाखायें और गोत्र भी बदल गये हैं जो स्थान और ब्राह्मण पुरोहितोंके बदलनेसे भेद पड़ता है । इनकी रियासत नरसिंह गढ, राजगढ, मालबेमें धार, देवास, दक्षिणमें सूँथ, डुमराव, पूर्वोत्तर भारतमें विजोलियाका ठिकाना मेवाड़के उमरावमें होता है । शाखा २५ हैं ।

नाम शाखा स्थान

१ उजैनिया – पवांरोंकी शाखा डुमरावकी रियासत है, कानपुरके उजैनके राजा शूरशाह की सन्तानसे माने जाते हैं ।

२ भोजपुरिया – पवांरकी शाखा है, विहार प्रान्तके शाहाबाद जिले में ।

३ कहम, ४ मोनको ५ उड़िया ६ बकछाहा ७ खरैत – इनकी राजधानी कैराड़ । ८ चारटे ९ मेपाती, मेवाड़में बिजौलियाके वर्त्तमान जागीरदार हैं । १० बलहार—उत्तरीय मरुभूमि में । ११ काबा सौराष्ट्र देशमें प्रसिद्ध और सिरोहीमें पाये जाते हैं । १२ उम्मत—मालवा प्रदेशमें उस वंशके राजा प्रसिद्ध हैं । १३ रैहार, १४ सौराठिया, १५ हरेरा, १६ चावड़ा, १७ सुगड़ा, १८

बरकोटा, १९ सम्पल, २० कालपुर, २१ कालामोह २२ (?) २३ कोहला, २४ पुसया, २५ धुन्धदेवा, २६ धुंता. २७ गन्धवारया, उत्तरी बिहार भागलपुर जिलेमें अधिकांश हैं, २८ राडीक, २९ सौदा, ३० सांकला, ३१ खैर, ३२ उमता, ३३ सुमरा, ३४ बेहील, ३५ मेयावत है और अनेक प्रशाखायें हैं व्याह सम्बंध प्रत्येक क्षत्रियोंमें होता है। ये भारतके अधिकांश प्रान्तोंमें पाये जाते हैं।

सोलंकी–अग्निवंश गोत्र–भारद्वाज, प्रवर तीन–भारद्वाज, बार्हस्पत्य, आंगिरस; वेद–यजुर्वेद, शाखा–वाजसनेयी, सूत्र–पारस्कर गृह्यसूत्र, कुलदेवी–चामुंडा देवता–विष्णुभगवान, सरस्वती, धर्म–वैष्णव, विजयदशमीको तलवार पूजन होता है।

सोलंकी क्षत्रियकी उत्पत्तिके बारेमें लिखा जा चुका है कि ये अग्निवंशी हैं। इनके प्रथम पुरुष चालुक सुकलांकी हुये जिनके वंशज अपनेको सुलंकी कहके विख्यात किये। इस वंशकी १६ शाखायें और अनेक प्रशाखायें भी विद्यमान हैं। इनकी रियासत इस प्रकार है–रीवां राज बघेलखण्डमें लुनावाड़ा गुजरातमें है वे बघेल कहलाते हैं। घराद, देवदर, पेथापुर, भादरबाघरी, पोरिइछा, छालियर, गुजरातमें जीतवाड़ा, रूपनगर, मेवाड़में कोट, माड़वारमें पगारां, बूंदी रियासतमें पीपलो है, छोटे २ ठिकाने जैसे बिहार प्रान्तमें पोहियार ८५ हजारकी आय है। इस पोहियारके परिवारमें बा० चन्द्रदीपनारायणसिंह जातिहितैषी बडेधीर धर्मातमा और मिलनसार है। आपने अपनी ३५ वर्षकी उमरसे राज्यको बहुत वढ़ाया, एवं दरबारकी प्रतिष्ठा वढाई। आप क्ष० उ० म० सभाके सदस्य हैं।

१ बघेल–या बाघेला या व्याघ्रराजकी संतान रीवां रियासत पितापुर, घेराद, अदलजके राव हैं।

२ बीरपुरा लूनावारके राव।

३ बेहील–मेवाड़ान्तर्गत कल्यानपुरके जागीरदार राव उपाधियुक्त है।

४ भुरेता – }
५ कालेचा } जैसलमेरान्तर्गत बारुटैंकरा और चाहीर में।

६ लंघा– मुसलमानके निकट रहने वाले।

७ तोगरु – }
८ विक्र – } अब इन दोनों शाखाओंका व्याह सम्बंध क्षत्रियोंमें नहीं होता क्योंकि स्वधर्म भ्रष्ट हो गये हैं।

९ सोलके–दक्षिणमें इनका धर्म क्षत्रियोचित है।

१० सिरवरिया–स्वराष्ट्र देशान्तर्गत गिरनारमें रहने वाले।

११ रावका–जयपुरमें टोडाके इलाके रहने वाले, इस शाखामें तारावाई एक वीर क्षत्राणीकी अनुपम वीरता देखो इति।

१२ राणकरा–मेवाड़के अन्तर्गत देसूरीमें रहने वाले।

१३ स्वरूरा–मालवा देशान्तर्गत आलोट और जायराके निवासी।

१४ तांतिया–या टेटिहा चन्द-भर सकुन बरी (बदनोर में)।

१५ अलमचा–भूमिहीन, व्यापारसे जीवन निर्वाह करते हैं।

१६ कालमोर–गुजरात निवासी अब और स्थानोंमें भी हैं।

इस सुलंकी क्षत्रिय कुलका व्याह सम्बन्ध प्रत्येक क्षत्रियोंमें होता है, परन्तु कुछ शाखायें जातिच्युत समझी जाती हैं, क्योंकि स्वधर्मभ्रष्ट हो गयी हैं। इन सब शाखाओंमें बघेला प्रसिद्ध है और आदरकी दृष्टीसे देखी जाती है, परन्तु स्थानोंके अदल बदलसे गोत्र, कुलदेवता, आदि बदले गये हैं। ये लोग राजपुताना, मध्यप्रदेश, गुजरात, मैसूर और बिहार प्रान्तोंमें पाये जाते हैं।

पड़िहार—गोत्र—कश्यप, प्रवर तीन—कश्यप, अप्सार, नैध्रुव, वेद—यजुर्वेद, शाखा—वाजसनेयी, सूत्र—पारस्कर गृह्यसूत्र, कुलदेवी—चामुण्डा, इष्ट—विष्णु भगवान, गुरु—वशिष्ठजी हैं।

इस वंशकी उत्पत्ति अग्नि कुण्डसे है जो प्रथम लिखी जा चुकी है। इस वंशके विषयमें अनेक मतभेद हैं कि यह सूर्य्यवंशी है, परन्तु न तो इस वंशवाले अपनेको सूर्य्यवंशी कहते हैं न कोई धार्मिक ग्रन्थोंमें इनका वर्णन है। ये लोग स्पष्ट अपनेको अग्निवंशी बतलाते हैं, और भविष्य पुराण तथा रासो ग्रन्थ जो चन्द्रवरदाई कृत है उसमें भी अग्निवंशही लिखा है। इस वंशवाले १२ शाखाओंमें विभक्त हैं रियासत मालाजनी (झटावामें), नागोद, जिगनी, अलीपुर आदि है। शाखा इस प्रकार है, यद्यपि शाखा कहीं १२, कहीं १६ और कहीं १७ भी हैं।

नाम शाखा :—

१ लुल्लरा—लुल्लरका राजा अमायक नाथ रावसे पांच पुस्त पीछे।
२ सूरावत—सूराका—इनको भट्ट लोग मंडवरा कहते हैं।
३ रामटा—रामटाकी संतान।
४ वधखेलिया—खीसीके पुत्र बुधकी संतान पूर्वमें हैं।
५ इन्दा—सोधकके पुत्र इन्दाकी संतान है।
६ खोक्खरा—खुक्खरकी संतान हैं।
७ चन्द्रावत—चन्द्रकी ३ शाखा किलोलिया, चन्द्रायण, चोहन्ना—चुहनका।
८ धीराण—मालदेवके बेटे माहप के पौत्र धोराणका।
९ धान्धिला—धारकी संतान।
१० सिन्धू—खीरके पुत्र सिन्धूसे।
११ डोराणा—डुंगरके पुत्र डोराणकी संतान है।
१२ सुवराणा—सुवरकी संतान है।
१३ पहराना—प्रथम पंडहर राजा हुआ उसकी जाति कहलाई।
१४ सुन्ध्या—दीपसिंहकी संतान ग्वालियर, आगरा आदिमें।
१५ पड़िहारमीणा—गुजरमल हमीरके भाई राजपुतानेमें सोम नाहड रावोत के लिखे हैं, ये लोग खैराडमें हैं।
१६ केशवोत—केशवदासका।
१७ सोणपालोत—सोनपलाका।
१८ नागोद राजवंश—किशनदासके पुत्र भीमका।
१९ पड़ीहाड़ इन्दा—नाडरावके माड़वारमें पाये जाते हैं।

देशान्तरोंके इतिहासोंमे प्राप्त शाखायें :-

१ भटीयाल महता—भटियाल ठाकुर जमीदार हैं।
२ नाघट—कप्तान विंगलेसाहबने लिखा है।
३ तखी पड़िहार—पंजाबमें हैं गोत्र कोशल, ये लोग कहते हैं कि नागवंशी हम लोग हैं सर्पका विष नही चढता।
४ भद—तखी पड़िहार है स्थान भदाणेसें नाम पड़ा है।
५ बलखरिया पड़िहार —। ६ तेगसहिया पड़िहार ७ वडगया पड़िहार।
८ धुवेला पढ़िहार—ये लोग अपना गोत्र कोशल मानते हैं।

व्याह सम्बन्ध क्षत्रियोंमें स्थानभेदसे होता है। ये लोग राजपुताना, दक्षिण भारत, संयुक्त-प्रदेश और बिहारमें पाये जाते हैं

डोडिया – जिस समय अग्निकुण्ड से अग्निवंश प्रकट हुआ था, उसी समय उस स्थानपर केला गड़ा हुआ था। उस केलेसे एक पुरुष प्रकट हुआ जो डोडिया कहलाया। इनका गोत्र पमारों की भांति है। रियासत मालबामें पिपलोदा राज्य है, मेवाड़में सरदारगढ़ है। व्याह क्षत्रियोंमें होता है। ये लोग रापुताना व काश्मीरमें पाये जाते हैं।

चावडा–(चापोत्कट) वंश अग्निवंशी परमारकी शाखा है। **गोत्र**–कश्यप, **प्रवर तीन**–कश्यप अप्यसार नैध्रुव **कुलदेवी**–प्रभावती **इष्ट** –सोमनाथ महादेव।

यह अपनेको परमावंशकी शाखा वतलाते हैं जिनकी ख्याति सारे वंशावलियोंमें ३६ राजवंशोंके अन्दर १२ वां स्थान पाया है, जैसा कि इस कवित्तसे स्पष्ट होता है (टांड राजस्थान टिप्पणी १५१ में लिखा है) —

प्रथम चाल जडेश शव्दगण सेण सुनायो।
अरवुद दिधी प्राण हेम ओतर दिशि आयो।।
पर वरियो परमारवास भिन माल बसायो।
तव कोटिनेत्र खेत जागणो खसायो।।
भोगवे भोग शत्रु भणो रणायत तणो राखियो संग।
वण राज कुवेर वासियो दसमो अण हिलपुर दुर्ग।।

(प्राचीन पद्य) इस कवित्तमें भी चावड़ों का परमार होना लिखा है, जैसा कि वे बयान करते है। वनराज के वंशजों ने अर्थात् चावड़ोंने अन हिल वाडे पर वि. सं. ८२१ से १०१७ तक अर्थात् १९६ वर्ष राज्य किया था *। उपर्युक्त चापवंशी धरणी वराह के ताम्रपत्र में उक्त वंश की उत्पत्ति के विषय में लिखा है कि पृथ्वी ने शंकर को प्रणाम कर निवेदन किया कि हे प्रभो ! आप जब ध्यानमें निमग्न होते हैं उस समय असुर मुझको दुख देते हैं जो मुझसे सहन नहीं हो सकता। इस पर शंकरने अपने चापसे पृथ्वीकी रक्षा करने योग्य एक पुरुष उत्पन्न किया जो चाप कहलाया और उसका वंश उसी नामसे प्रसिद्ध हुआ। इस कथासे हम यही अनुमान करते हैं कि चावड़ोंके मूल पुरुषका नाम चाप (चापा) हो और उसीके नामसे इस वंशका नाम चावड़ा पड़ा हो। इस समय महीकान्त इलाके (गुजरात) माणसा और बड़सोड़ा, रेवाकान्त इलाके, (गुजरात) में भी लोडीया और रामपुर, काठियावाड़में आकड़िया, और मेवाड़में अर्ज्या, और कलड़वास चावड़ोंके ठिकाने हैं। इनका व्याह सम्बन्ध पहले मेवाडके साथ होनेका प्रमाण पाया जाता है।

बरगयां–चौभान अग्निवंशकी शाखा है। **गोत्र**–वत्स, **प्रवर पांच**–औव्र्य च्यवन, भार्गव-जामदग्न्य, अप्नुवान, **कुलदेवी**–आशापूर्णा, **वेद**–सामवेद, **शाखा**–कौथुमी, **सूत्र**–गोभिलगृह्य सूत्र है, **धर्म**–वैष्णव मानते हैं।

इस वंशके प्रतिष्ठित पुरुषोंने बड़ा काम किया जिससे बड़गयां नामसे प्रख्यात हुए। ये लोग अपना निकास मैनपुरीसे मानते हैं। गाजीपुर और छपरामें बहुतायतसे पाये जाते हैं। इन दो जिलोंके सिवाय और कहीं भारतके अन्दर नहीं पाये जाते। इनकी दो शाखायें गाई और दोगाई नामसे प्रसिद्ध हैं। व्याह सम्बन्ध प्रत्येक क्षत्रियोंमें स्थानभेदसे होता है।

---

* नोट—प्रवन्ध चितामणि में वनराजका विक्रम सं. ८२१ में अनहिल वाडा पाटनमें राज्य करना लिखा है।

गांई–अग्निवंशकी प्रशाखा, **गोत्र**–वत्स, **प्रवर पांच**–और्व्य, च्यवन, भार्गव, जामदग्न्य, अप्नुवान, **कुलदेवी**–कालिका, **वेद**–सामवेद, शाखा–कौथुमी, **सूत्र**–गोभिलगृह्यसूत्र ।

इस वंशके बारे में प्रथम लिखा जा चुका है कि यह बरगयां अग्निवंशकी शाखा है । व्याह सम्बन्ध स्थानभेदसे क्षत्रियोंमें होता है । इस वंशवाले शाहाबाद, छपरा आदि जिलोंमें पाय जाते हैं ।

×**दोगांई**–अग्निवंशकी प्रशाखा, **गोत्र** –वत्स, **प्रवर** पांच–और्व्य, च्यवन, भार्गव जामदग्न्य, अप्नुवान, **कुलदेवी**–सोखाजी, **वेद**–यजुर्वेद, शाखा–वाजसनेयी, **सूत्र**–पारस्करगृह्य सूत्र, **धर्म**–वैष्णव है ।

इस वंशके बारेमें पहि लिखाले जा चुका है कि यह बड़गयां अग्निवंशी चौहानकी शाखा है । वर्त्तमान समयमें मुजफ्फरपुर जिलान्तर्गत पाये जाते हैं । व्याह सम्बन्धमें ये अपनी कन्या निकुम्भ, चन्देल, पंवार, वैस राठौड़, महरौड़ आदिको देते हैं और टेटिहा, वैस, राठौड़, निसान आदिकी कन्या लेते हैं ।

ढ़ेकहा––अग्निवंशकी शाखा, **गोत्र** –कश्यप, **प्रवर तीन**–कश्यप, अप्सारा नैध्रुव, **कुलदेव**–महादेवजी, **वेद**–सामवेद, **शाखा**–कौथुमी, **सूत्र**–गोभिलगृह्यसूत्र है ।

यह अपनेको पंवार क्षत्रियोंसे निकास बतलाते हैं और राजा भोज के समय दिल्ली आना बतलाते हैं । विहार प्रान्त के शाहाबाद, पटना आदि जिलोंमें पाये जाते हैं । व्याह संवंध क्षत्रियोंमें होता है ।

महरौड़–अग्निवंशकी शाखा, **गोत्र**–वत्स, **प्रवर पांच**–और्व्य, च्यवन, भार्गव, जामदग्न्य, अप्नुवान, **वेद**–सामवेद, **शाखा**–कौथुली, **सूत्र**–गोभिलगृह्यसूत्र और ते **धर्म**–वैष्णव मान हैं ।

बिहार प्रान्त के कई जिलोंमें महरौड़ क्षत्रिय पाये जाते हैं, विवाह संवंध क्षत्रियोंमें पाया जाता है परन्तु लोक में इनके संवन्ध में कुछ बदनामी चली आती है जिसका मूल-बिकानेर की छपी क्षत्रिय सूची पृ. १३२ में लिखा पाया जाता है कि राजा तिलोकचन्द की कहारी में महरा लोग सवारी लेकर युद्ध क्षेत्र में राजाको ले गये थे । राजा ने रणविजय की खुशीमें इनको जागीर दी जिससे ये लोग थोडे दिनोंके वाद अपनेको महरौड़ क्षत्रिय मशहूर करने लगे इत्यादि । परन्तु ये लोग अपनेको राठौर से निकला हुआ बतलाते हैं । और इनका व्याह संबंभ भी प्रत्येक क्षत्रियोंमें पाया जाता है । उक्त वंशके बारेमें जो दोषारोपण किया जाता है यह एक देशी है ।

सरबिया–इस वंश के विषय में इतना ही पता लगता है कि भाट्ट लोगों ने अपनी कविता में क्षत्रिय करार दिया है और इनको छत्तीस राजकुलों में स्थान मिला है, परन्तु अब ये लोग प्राय: लुप्त से हो गये ।

सिलार–यह क्षत्रिय जाति में किसी समय प्रसिद्ध था । अनहिलवाड़ा के इतिहास में लिखा है कि सिद्धराज जयसिंह ने इस जाति को अपने राज से निर्मूल कर दिया था । अब ये लोग वैश्य वृत्ति के पाये जाते हैं और व्याह संवंध इनका क्षत्रियों में नहीं होता है ।

धावी देवी––या दावी, यह जाति किसी समय प्रसिद्ध थी, लेकिन अब इस वंश का पता नहीं चलता, केवल छत्तीस राज वंशोंमें इनको स्थान मिला है और भट्ट लोगोंने इनको यदुवंश की शाखा में होना माना है ।

× नोट––एक प्राचीन इतिहासमें लिखा है कि मालवा देशसे चौहान वंशी बहुतसे क्षत्रिय राजे विहार, तिर्हुत आदि पूर्वके देशोंमें आये जिनमें राजा गाङ्गेय और दिग्गाङ्गेय । इन्ही गांगेयसे और दिगगांगेयसे दोगांई क्षत्रिय हुए ।

दहिया–इस जाति का निकास सिन्धुके किनारे सतलजके संग पर था। यद्यपि जैसलमेरके भाटियोंके इतिहासमें इनका वर्णन है और छत्तीस राजकुलों में स्थान पाया है, परन्तु अब ये लोग नहीं पाये जाते हैं।

जोहिया––यह भी दहियों के समीप रहते थे। प्राचीन इतिहासों में ये जंगल देशके स्वामी कहे गये हैं, जिसके भीतर हरियाणा, भटनेर और नागोर थे। इस जाति के इतिहासोंमें छत्तीस राजकुलों में स्थान प्राप्त हैं, परन्तु अब ये नहीं पाये जाते हैं।

मोहिल–बिकानेरके वर्तमान राज्यके स्थापित होनेके समय तक ये लोग बडे प्रदेशमें बसे थे। राठौड़ों ने इस जातिको विध्वंस किया। और इस वंशको भी छत्तीस राजकुलोंमें स्थान प्राप्त है, परन्तु अब ये नहीं पाये जाते हैं।

रजापाली–इसका उल्लेख वंशावली लिखने वालोंने राजपालिक वा पालीक नाम से लिखा है। टाड साहेबने पालीकका अर्थ गड़ेड़िया किया है जो ठीक नहीं है, क्योंकि बंगाल के पाल वंशियों से इनका सम्बन्ध मिलता है। अब ये लोग नहीं पाये जाते।

दाहिमा–एक बडी प्रबल राजपूत जाति थी। सात आठ शताब्दी बाद ऐसी जाति का प्राय: लोप हो गया। यद्यपि इन लोगोंने छत्तीस राजकुलोंमें स्थान प्राप्त किया है, परन्तु अब इस जातिका पता नहीं है।

खीची क्षत्रिय–गोत्र–वत्स, प्रवर पांच (औंर्व्य, च्यवन, भार्गव, जामदग्न, आप्नुवान्) सामवेद, शाखा–कौथुमी, सूत्र–गोभिल गृह्य सूत्र, कुलदेवी–रक्तदन्ता भगवती है। शिवनाथ भाष्कर के अनुसार दुर्भिक्ष के समय शरण आये क्षत्रिय राजाओं को खींच खिलाकर रखने के उक्त नाम से विख्यात हुए। गोपाल कवि ने भी अपनी पुस्तक में खीचियों को वत्स ग्रोत्री–चौहान की दूसरी शाखा माना है। राजपूताने और मध्य भारत के बीच का एक भूभाग खीचीवाडा कहलाता है। इनकी प्राचीन राजधानी गढ़ गागरौन थी, यहीं से खीची क्षत्रियगण खिलचीपुर मध्यभारत में राघव गढ़, मक सूदन गढ़, असोथर राज जि० फतेह पुर उ. प्र. में तथा और भी कुछ जिलों में आये हैं। इस खीची वंश के असोथर राज में भगवन्त इन्द्रदेव सिंह बड़े वीर तथा प्रसिद्ध पुरुष हो चके हैं, जो स्वयं कवि तथा अन्य कवियों के आश्रय दाता भी थे।

मौनस–गोत्र मानव है। क्षत्रिय हैं इनका कथन है कि हमारे पूर्वज आमेरसे ६०० वर्ष पूर्व सगरराय आये उनके पोता योधराज शाहजहां बादशाहके समयमें थे, विशेष ज्ञात नहीं।

निसान–गोत्र वत्स है। इनका व्याह सम्बंध क्षत्रियोंमें होता है। और बिहार प्रान्तके मुजफ्फरपुर, पटना आदिमें पाये जाते हैं।

नरौनी–ये लोग अपनेको श्रीनेतकी शाखा बतलाते हैं। बलिया, गाजीपुर, गोरखपुर आदिमें पाये जाते हैं। व्याह सम्वंध क्षत्रियोंमें होता है।

नेवतनी–दीक्षितकी शाखा है। **गोत्र**–शांडिल्य, **प्रवर तीन**–शांडिल्य, असित, देवल, **कुलदेवी**–अम्बिका भवानी, **इष्ट**–रामचन्द्रजी। व्याह सम्वंध क्षत्रियोंमें स्थानभेदसे होता है और बिहार प्रान्तमें अल्पसंख्यक पाये जाते हैं।

सरनिहा–करमवारकी शाखा है। बिहार प्रान्तके अन्दर छपरा जिला है जिसका दूसरा नाम सारन है। उक्त स्थानके कारण इनका सरनिहा नाम पड़ा। व्याह सम्वंध स्थानभेदसे क्षत्रियोंमें होता है।

कण्डवार–गौतमकी शाखा, बिहार प्रान्तके छपरा जिलान्तर्गत बहुसंख्यक पाये जाते हैं। व्याह सम्वन्ध क्षत्रियोंमें होता है।

कछनिया–गोत्र–शाण्डिल्य, प्रवर तीन–शाण्डिल्य, असित, देवल, वेद–सामवेद, शाखा–कौथुमी, सूत्र–गोभिलगृह्यसूत्र, धर्म–वैष्णव, कुलदेवी–दुर्गा, है। यह अपनेको क्षत्रिय करार देते हैं। व्याह सम्वंध क्षत्रियोंमें होता है।

शुङ्गवंश–यह मित्रका मुख्य वंश है। मौर्य्यवंशी राजा बृहद्रथको मार कर उसका सेना पति पुष्यमित्र राज्यका मालिक बन वैठा, इसीसे यह शुंग वंश कहलाया। इस वंशका वृत्तान्त पुराणोंमें भी है। इस राजाने अश्वमेध यज्ञ भी किया था। अब इस वंशका कुछ भी वृत्तान्त नहीं मिलता।

कदम्बवंशी–गोत्र–मानव, ब्राह्मण हारितपुत्रके आश्रमके पास कदम्बका वृक्ष था, वहां रहनेसे इनका नाम कदम्बवंश विख्यात हुआ, संभव है कि कदम्ब नामक कोई प्रसिद्ध पुरुषके नामसे हुआ हो। यह वंश दक्षिण भारत्तमें विद्यमान है।

टावरी–राजपूत और माहेश्वरी साहुकार दोनों पाये जाते हैं। राज जैसलमेरमें राव मालदेव झालाके बडे पुत्र हमीरजीके महेश्वरी' हुए, छोटे अनाडीके राजपूत रहे। टाबर के गांवसे टाबरी संज्ञा हुई। राजपुतानामें कुछ पाये जाते हैं।

इतिहास प्रसिद्ध ३६ राजवंशोंकी सूची।

टाड राजस्थानसे		मतिरामकृत नृपवंशावली	
१ सूर्य्यवंशी	२ चन्द्रवंशी	१ सूर्य्य वंश	२ पैलवार
३ गहलौत	४ यदुवंशी	३ राठौड़	४ लोहथम्भ
५ तोमर	६ राठौड़	५ रघुवंशी	६ कछबाहा
७ कछबाहा	८ चौहान	७ शिरमौर	८ गोहलौत
९ चौहान	१० सुलंकी	९ बघेल	१० कावा
११ परिहार	१२ चावड़ावंश	११ सिरनेत	१२ निकुम्भ
१३ तक्षक	१४ जाट	१३ कौशिक	१४ चन्देल
१५ हुणा	१६ कठीया काठी	१५ यदु वंश	१६ भांटी
१७ बल्ला	१८ झाला	१७ तोमर	१८ बनाफर
१९ जेठता जेठवा	२० गोहिल	१९ काकन	२० वंश
२१ सरधिया या (सेर)	२२ सिलार	२१ गहरवर	२२ करमवार
२३ धावी (देवी)	२४ गौर	२३ रैकवार	२४ चन्द्र वंशी
२५ दोदा या दोर	२६ गहरवार	२५ शकरवार	२६ गौर
२७ बड़ गुजर	२८ सेंगर	२७ दीक्षित	२८ बड़ बलिया
२९ सिकर बार	३० बैस	२९ विश्वेन	३० गौतम
३१ दाहील	३२ जोहिया	३१ सेंगर	३२ उदवतिथा
३३ मोहिया	३४ निकुम्प या निकुम्भ	३३ चौहान	३४ पड़िहार
३५ राजपाली	३६ दाहिमा	३५ सुलंकी	३६ परमार

चन्द्रवरदाईके रासोग्रन्थसे

१ रवि वा सूर्य्य	२ शशि व सोम	२१ पोतक	२२ दधिखट्ट
३ यदु	४ ककुत्थ	२३ कारट्टपाल	२४ कोटपाल
५ परमार	६ चौहान	२५ हुल (हुण)	२६ गौड़
७ चालुक्य	८ प्रतिहार	२७ निकुम्प या निकुंभ	२८ राजपगलिक
९ छिन्दक	१० सिलार	२९ कनिव	३० कलचुरक वा कलचुरी
११ अभिर	१२ मकवाना	३१ सदावर	
१३ गोहिल	१४ कापोत्कट	३२ दोयमत्र	३३ गोहिलपुत
१५ परिहार	१६ राठौड़	३४ हरितट	३५ कमाष
१७ देवलां	१८ टाक	३६ मट (जट)	३७ धान्यपालक
१९ सिन्धु	२० अनंग		

अब मैं उन छत्तिस राज वंशोंके विषयका जो पूर्व सूचीमें आया है स्पष्टीकरण करता हूं।

जैसे न. १३ तक्षक, १४ जाट, १५. हूण, १६ कठी या काठी, १७ वल्ला, १८ जट या जेठवा आदि। यद्यपि टाड राजस्थान तथा अन्यान्य पुस्तकों में उक्त नम्बरों की जातियों का इतिहास तथा स्थान प्राप्त देखा है, तथापि इन जातियों की रीति रिवाज चालचलन रहनसहन क्षत्रियों से विलग ज्ञात होता है, क्योंकि न तो इन लोगोंका व्याह सम्बन्ध क्षत्रियोंका सा पाया जाता है, न वेदविहित कर्म ये लोग करते हैं। ऐसे तो क्षत्रियों के सिवाय अन्य जाति भी राज्य करती आयी है, इसलिये राजवंशी कही जा सकता है, न कि ये लोग क्षत्रिय जाति के अन्दर माने जा सकते। पुनः देखिये इन उमीदवार जातियों की भिन्न २ सुमार हरेक दश वर्ष बाद की जाति है, जिससे आप अनुमान कर सकते हैं कि ये जातियां क्षत्रिय हैं या अन्य। उदाहरणार्थ जैसे मुख्य सूर्य्यवंश, चन्द्रवंश व अग्निवंश में भिन्न भिन्न प्रकारके क्षत्रिय पाये जाते हैं परन्तु सुमार सबों की एक सामुहिक संज्ञा में क्षत्रिय या राजपूत जाति के अन्दर की जाती है न कि इन जातियों के ऐसा अनेक नामों में। एक उदाहरण स्पष्ट आपको मालूम होगा कि क्षत्रिय महासभा जो कि प्रत्येक वर्ष में समूचे भारतवर्ष की होती है उसमें, इन जातियों के यहां निमंत्रणपत्र आदि नहीं भेजे जाते, न इन लोगों से सभाको कोई सहानुभूति मिलती है। तब इन जातियों को क्योंकर वर्त्तमान लेखक लोग क्षत्रिय जाति के अन्दर सामिल करना चाहते हैं?

क्षत्रियोंके कण्ठ करने योग्य।

वेद, उपवेद, शाखा, और सूत्र वर्णन

आर्य्य शास्त्रों में प्रत्येक द्विजों के लिये गोत्र प्रवर के साथ २ वेद, उपवेद, शाखा, सूत्रोंके अनुसार नित्य नैमित्तिक और काम्य कर्मोंके करने का विधान आया है, इसलिये प्रत्येक श्रेणीके क्षत्रियोंके लिये इसकी जानकारी आवश्यक है। सृष्टिमें संस्कृत विद्याका सबसे पहला ग्रन्थ वेद है, वेद चार हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद। और हरेकवेद के दो भाग हैं एकका नाम मंत्र अथवा संहिता है दूसरे का नाम ब्राह्मण भाग है। हरेक वेदकी भिन्न २ शाखाके अनुसार भिन्न २ ब्राह्मण हैं, और शाखाओंके अनुसार ही उनके गृह्यसूत्र हैं और सबके ६ अङ्ग भिन्न २

हैं, परन्तु सब शाखाओंके अङ्गोंके ग्रन्थ नहीं मिलते हैं। हरेक अङ्गके जो ग्रन्थ मिलते हैं वे इस प्रकार हैं जिनसे वेद समझमें आता है। अङ्ग निम्नांकित हैं:—

१ शिक्षा २ छन्द ३ व्याकरण ४ निरुक्त ५ कल्प ६ ज्योतिष। वैदिक ग्रन्थ सब अङ्गोंपर समय के भेदसे अनेक हैं। इन अङ्गोंके पीछे चार उपवेदोंको भी चोदह विद्यामें माना है। यद्यपि उपवेद नामके ग्रन्थ नहीं मिलते, परन्तु जो विद्या इस विषय पर मिलती है, जो अनेक संस्कृत ग्रंथोंमें पाई जाती हैं। चौदह विद्या मनुके लेखानुसार निम्नलिखित श्लोकोंमें पाई जाती हैं।

"अङ्गानि वेदाश्चत्वारो, मीमांसा न्यायविस्तरः।
पुराणं धर्मशास्त्रं च, विद्या ह्येताश्चतुर्दश॥" (मनु)

इस प्रकार १८ विद्या भी कही गयी हैं। चार वेद, छः अङ्ग, चार उपवेद और चार उपाङ्ग मनुके कथनानुसार—१ धर्मशास्त्र २ न्याय ३ मीमांसा ४ पुराण हैं। धर्म शास्त्र यद्यपि कल्प सूत्रोंमें विस्तारसे आजाते हैं परन्तु इनके विषय बड़े विस्तृत और भिन्न हैं।

६ वेदाङ्गों के विषय इस प्रकार वर्णित हैं:—

१ शिक्षा—जिसमें उच्चारण की विधि वर्णित है।

२ छन्द—जिसमें वेदोक्त तथा लौकिक छन्दोंकी व्याख्या है।

३ व्याकरण—जिसमें शब्दबोध वैदिक प्रयोगोंका प्रातिशाख्यादिमें है। तथा लौकिक शब्दोंका ज्ञान होता है।

४ निरुक्त—जिसमें निघण्टु सहित शब्दोंके अर्थोका ज्ञान होता है।

५ कल्प—जिसमें यज्ञ की विधि और इसके दो भेद हैं:—श्रौत सूत्र तथा गृह्य सूत्र।

६ ज्योतिष — जिसमें सूर्य्य मण्डलके प्रकार और समयका ज्ञान होता है —

सिद्धान्त ज्योतिष–संहिता भाग और जातक है।

चार—वेद की शाखा इस प्रकार हैं:—

ऋग्वेद की शाखा चरणव्यूह कर्तानि पांच गिनी हैं:— १ शाकल्य, २ बाष्कल, ३ आश्वलायन, ४ शाङ्खलायन, ५ भाण्डुकायन प्रसिद्ध है। इन सब शाखाओंमें जो अब प्रसिद्ध या प्रचलित शाकल्य शाखा है।

यजुर्वेद की शाखा विष्णु पुराणके आगे पीछे करके वर्णित है वे २७ शाखा इस प्रकार हैं—

जैसे १ चरकाः २ आहरकाः ३ कठाः ४ प्राचकठाः ५ कपिस्थलकठाः ६ चारविणीयाः ७ बारतन्तवीयाः ८ श्वेताः ९ श्वेततराः १० औपमन्यवाः ११ पातांडिनेयाः १२ मैत्रायणीयाः (इसके ६ भेद हैं।) १३ मानवाः १४ वाराहाः १५ दुन्दुभा १६ छागलेयाः १७ हारिद्रवीयाः (इसके पांच भेद हैं।) १८ श्यामायनीयाः १९ तैत्तिरीयाः (इसके दो भेद हैं।) २० औरवीयाः (इसमें तैत्तिरीया भी गिनती है) २१ खाण्डिकीयाः (इसके ६ भेद हैं) २२ आपस्तम्बीयः २३ बौधायनी २४ सत्याषाढी, २५ हिरण्यकेशी, २६ शाष्यानी, २७ भारद्वाजाः। परन्तु शब्दकल्पद्रुममें १७ शाखा इस प्रकार हैं:— १ जाबालाः २ बौधेयाः ३ कारावाः ४ माध्यन्दिना ५ शाफेयाः ६ तापनीयाः ७ कपोताः ८ पौतट्रवत्साः ९ आवटिकाः १० परमावाटिकाः ११ पराशरियाः १२ वैनेयाः १३ अधेयाः १४ मैनेयाः १५ गालवाः १६ बौधेयाः १७ वाजसनेयी इसे वाजसनेयीनाः भी कहते हैं।

सामवेद की शाखा एक हजार कही जाती है। परन्तु अब सब नहीं मिलती है, जो उपलब्ध हैं—चरण व्यूहके अनुसार शाखा इस प्रकार हैं :—

राणायनेया: २ शायमुग्रा: ३ कपोला: ४ महाकपोला: ५ लागलिका: ६ शारदुला: ७ कौथुमी: (इनके ६ भेद हैं।) असुरायणा: ९ वातयना: १० प्राञ्जल्या: ११ वैनधृता: १२ प्राचीनयोग्या: १३ नैगया:। इतने शाखाओंका प्रचार है।

अथर्व वेद चौथा वेद है, उसकी शाखा और गणना इस प्रकार है। इस वेद की शाखा ९ हैं।

१ पिप्लादा: २ शौनकीया: ३ दामोदा: ४ तोतायना: ५ जायला: ६ ब्राह्मपलासा: ७ कौनाखिना: ८ देवर्दशिना: ९ चारणविद्या:। इन शाखाओं का पता चलता है जो कुछ छप गये हैं और कुछ भोजपत्र आदि पर लिखे काश्मीरमें हैं।

उपदेव प्रत्येक वेदके भिन्न २ हैं जो चार नाम तथा भिन्न २ विषयों पर वर्णित हैं, जैसे :—

१ यजुर्वेदका धनुर्वेद शस्त्र विद्याका ज्ञान लिखा है, जिसके कर्ता विश्वामित्र, भृगु, बृहस्पति, शिवजी, इंद्र, द्रोणाचार्य आदि पूर्ण विद्वान् माने जाते हैं।

२ सामवेदका गन्धर्व वेद है, जिसमें संगीत विद्याका ज्ञान है, कर्त्ता नारदजी आदि ऋषि हैं।

३ ऋग्वेदका आयुर्वेद—वैद्यक विद्याका बोधक है, जिसके कर्त्ता धन्वन्तरी आदि माने जाते हैं।

४ अथर्ववेदका "स्थापत्य" वेद है जो शिल्पविद्या पर है, इसके कर्त्ता विश्वकर्मा आदि हैं।

शाखा ६ हैं जैसे :—

१ पूर्वमीमांसा दर्शन—इसके कर्त्ता जैमिनीजी हैं।

२ उत्तर मीमांसा दर्शन—कर्त्ता वेदव्यासजी हैं।

३ न्यायदर्शन—कर्त्ता गौतमजी माने जाते हैं।

४ वैशेषिकदर्शन—कर्त्ता कणादजी है।

५ सांख्यदर्शन—कर्त्ता कपिलजी हैं।

६ योगदर्शन—कर्त्ता पतंजलिजी हैं।

१ मनुस्मृति, २ याज्ञवल्क्य स्मृति, ३ अत्रि स्मृति, ४ विष्णु स्मृति, ५ हारीत स्मृति, ६ उशनस शुक्रस्मृति, ७ आंगिरसस्मृति, ८ यम स्मृति, ९ आपस्तम्ब स्मृति, १० संवर्त स्मृति, ११ कात्यायन स्मृति, १२ बृहस्पत्ति स्मृति, १३ पराशर स्मृति, १४ व्यास स्मृति, १५ शंख स्मृति, १६ लिखित स्मृति. १७ दक्ष स्मृति, १८ गौतम स्मृति, १९ शातातप स्मृति, २० वशिष्ठ स्मृति यह बीस स्मृति प्रसिद्ध हैं।

अष्टादश पुराण वर्णन।

अब मैं उन १८ पुराणोंका वर्णन करता हूं जिसके पढ़नेसे अपने धर्मके ऊपर श्रद्धा होती है, क्योंकि इसकी रचना स्वयं भगवान वेदव्यासजीने की है जिन पुराणोंके लक्षण निम्न लिखित प्रकार हैं :—

"सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितञ्चैव पुराणं पंचलक्षणम्॥"

ब्रह्मवैवर्त्त' पुराण श्री कृष्णजन्म खण्ड अ. १३३ में
अठारह पुराण इस प्रकार हैं :—

पुं० सं०	नाम	श्लोक सं०	पु० सं०	नाम	श्लोक सं०
१	ब्राह्म	१००००	१०	ब्रह्मवैवर्त्त	१८०००
२	पद्म	५५०००	११	लिङ्ग	११०००
३	वैष्णव	२३०००	१२	बाराह	२४०००
४	शैव	२४०००	१३	स्कन्द	८११००
५	भागवत	१८०००	१४	वामन	१००००
६	नारदीय	२५०००	१५	कौर्म	१७०००
७	मार्कण्डेय	९०००	१६	मात्स्य	१४०००
८	आग्नेय	१४५००	१६	गरुड़	१९०००
९	भविष्य	१४५००	१८	ब्रह्माण्ड	१८०००

धार्मिक इतिहास वर्णन :—

	ग्रंथ	श्लोक सं०	
१	वाल्मिकी रामायण	२४०००	वाल्मिक मुनी
२	महाभारत	१०००००	वेदव्यास
३	हरिवंश	२४०००	वेदव्यास

यहां तक मैं पूर्ण रूपसे वेद, शास्त्र, पुराण व इतिहास ग्रंन्थों का यथा उक्ति लिख चुका हूं जिसके पढ़नेसे क्षत्रिय सज्जन वृन्द तथा अन्यान्य महानुभाव लाभ उठावेंगे। इन सब प्राचीन ग्रन्थोंके अवलोकन न करनेके कारण हम भारतवासी हिन्दूगण अपने धर्मके ऊपर अश्रद्धा रखते हैं, तथा अन्य धर्मोंका अवलम्बन करते जाते हैं। इसलिये उचित है कि अपने प्राचीन ग्रन्थोंका यथासाध्य अवलोकन करें जिससे अपने धर्म तथा समाज व पूर्व पुरुषों पर हम क्षत्रियों की अकाट्य श्रद्धा बनी रहे।

जातिनिर्णय।

जाति क्या वस्तु है? इस विषयमें बहुत विवाद चल रहा है। कोई जन्मसे जाति मानते हैं, कोई कर्मसे। परन्तु यथार्थमें इसका निर्णय यह है कि जाति शब्द जन् धातुसे बना है जिसका अर्थ जन्म और गोत्रसे होता है। व्याकरणके मतसे किसी शब्दके प्रतिपाद्य अर्थ को जाति कहते हैं। व्याकरण चार प्रकारका शब्द बतलाता है। उनमें जातिवाचक एक प्रकारका है। व्याकरण शास्त्रमें जातिका लक्षण इस प्रकार बतलाया है :—

श्लोक:—आकृतिगृहणाजातिर्लिङ्गानाञ्च न सर्वभाक्।
सकृदाख्यातनिर्ग्राह्या गोत्रञ्च चरणैः सह॥

जिस चिह्नके द्वारा कोई पहचाना जाये उसे जाति कहते हैं। मनुष्यके हाथ पैर आदि विशेष २ आकृति न जानने पर यह नहीं पता चलता है कि यह मनुष्य है, पर उसकी आकृति देखने पर यह पता चलता है कि यह मनुष्य है। इसी प्रकार भिन्न २ आकृतियोंका ज्ञान होनेसे भिन्न २ जातिका बोध होता है। महाभाष्यमें जातिका लक्षण इस प्रकार है :—

लोक:—प्रादुर्भावविनाशाभ्यां सत्वस्य युगपद्गुणः।
असर्वलिङ्गा बह्वर्था तां जातिं कवयो विदुः॥

सत्वके प्रादुर्भाव और विनाशके साथ रहनेवाली गुणोंसे जो एक साथ मिलती है जो सब लिंगों को नहीं भजती अर्थात् उत्पत्तिके साथ ही जिसमें जो गुण हो और विनाशके साथ समाप्त होते हों। ऐसा एकलिंगमें वर्त्तमान बहुत अर्थवाली जाति कहलाती है। प्रथम तो जातिका विधान

इस प्रकार है :—वेदमें लिखा है कि उस परम ब्रह्मके मुख, हाथ, जंघा और पैरसे चारों वर्णोंकी उत्पत्ति है। वेद वाक्य इस प्रकार है :—

श्लोक:—ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ।
उरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ।।

इस वैदिक प्रमाणसे सिद्ध होता है कि चार वर्ण क्रमशः मुख, बाहु; जंघा और पैरसे उत्पन्न हुए, परन्तु इसका भाव यह नहीं है कि ये परस्पर मुख, हाथ, पांवसे पैदा हुए। इसका स्पष्ट भाव यह है कि ब्रह्माजीने जब सृष्टि की तब ८४ लक्ष योनियोंको चार भागोंमें विभक्त किया। एक मनुष्यमें ही नहीं जाति व्यवस्था है, सुतरां प्रत्येक योनिमें है। इस समस्याको पूर्व पुरुषोंनेही हल कर दिया। आज पश्चिमी शिक्षासे शिक्षित लोग तो यह सिद्ध करते हैं कि कर्मगत्त जाति व्यवस्था है। अगर ऐसी व्यवस्था रहती तो सारी जातियां ब्राह्मणवर्णही हो जातीं। इन दिनों कोई भी इतर जातियां—हलालखोर या मोची आदि जातियां निषिद्ध कर्म करते नहीं पाई जातीं। देखिये, महाभारत वन पर्वमें श्रीयुधिष्ठिरजीने यक्षोंके चार प्रश्नोंके उत्तर इस प्रकार किये हैं कि सृष्टि मात्रको चलनेके लिये यह रास्ता है :—

श्लोक —तर्कोऽप्रतिष्ठा श्रुतयो विभिन्ना नैको ऋषिर्यस्य मतं प्रमाणम् ।
धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां महाजनो येन गतः स पंथाः ।।

भाषा—तर्कका ठहराव नहीं; श्रुतियोंमें परस्पर भिन्नता है। ऋषि भी अनेक हैं, किसका मत माना जाय ? धर्मका तत्त्व बहुत सूक्ष्म है। इसलिये हमारे पूर्व पुरुष जिस मार्गसे चलते आये हैं वही श्रेयस्कर है। जैसे गीतामें भगवान् कृष्णचन्द्रने प्रत्येक स्थानोंमें अर्जुनको कहा है कि :—

श्लोकः —ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परंतप ।
कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः।। ४१ ।।

हे अर्जुन ! ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इन चारों वर्णोंके गुण सत्वादि गुणोंकें भेदसे स्वभाव जन्म स्वरूप तथा योग्य पृथक् २ विभक्त किये गये हैं। पुनः देखिये—

श्लोकः —चातुर्वर्ण्यं मया सृष्ट गुणकर्मविभागशः ।
तस्य कर्तारमपि मां विद्धयकर्त्तारमव्ययम् ।।

इस संसारमें गुण कर्मके विभागसे मैंने ही चारों वर्णोंको रचा है, और उसका विनाशकर्ता भी मैं ही हूं। फिर भगवान् कहते हैं कि—

श्लोकः —यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम् ।
"स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः" ।

हे अर्जुन ! जिस परमात्मासे भूतोंकी उत्पत्ति हुई है और जिससे यह समस्त जगत् व्याप्त है, उस परमेश्वरका अपने स्वाभाविक कर्म द्वारा पूजन कर मनुष्य सिद्धिको प्राप्त करता है। फिर।

श्लोकः —श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।
स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ।। ४७ ।।

हे अर्जुन ! पर धर्मसे अपना धर्म नीच भी हो तो अपनेही धर्मानुकूल आचरण करनेसे मनुष्य दुःखको प्राप्त नहीं होता है। इन सब बातोंसे आपको स्पष्ट विदित होगा कि उस परम ब्रह्मही की सृष्टि की हुई है, और जन्म सिद्ध विलग २ कर्म विभाग किये हुए हैं तो दूसरेकी क्या शक्ति है जो अपनेको और अपनी जातिको छोड़ २ कर उच्च वर्ण हो ? यह कदापि नहीं हो सकता क्योंकि ऐसा करनेसे पाप समझा गया है। यदि सुकर्म ही से जाति व्यवस्था होती तो श्रीपरशुराम, श्री द्रोणाचार्य ऐसे वीर क्षत्रिय धर्म पालन करनेवाले होते हुये भी ब्राह्मण कहलाते थे, क्षत्रिय

क्यों नहीं हो गये या कहलाये ? इन सब विषयोंको देखनेसे तथा अन्यान्य ग्रन्थोंका छान बीन करनेसे स्पष्ट विदित होता है कि जाति वीर्य्यगत है, कर्मगत नहीं, उच्च कर्मसे उच्च कहला सकता है, नीच कर्म करनेसे नीच कहला सकता है। अस्तु। अब मैं अपने विषयकी ओर आता हूं। प्रथम मैं कह चुका हूं कि जाति वीर्य्यगत है, कर्मगत नहीं। इसको साफ व स्पष्ट सिद्ध कर दिखाया कि जाति वीर्य्यगत है कर्मगत नहीं।

क्या परशुरामने क्षत्रियोंको निःशेष कर दिया था ?

जब परशुरामजीने २१ बार बारी बारी २ से पृथ्वीको निःक्षत्रिय कर दिया तो क्षत्रिय वंश कहांसे आया इसका सप्रमाण उत्तर इस प्रकार है :—

सोचनेकी बात है कि जब कि परशुरामजीने प्रथमही बारमें पृथ्वीको क्षत्रियरहित कर दिया तो दूसरी बार निःक्षत्रिय करनेका उन्हें अवसर ही क्योंकर मिला। इसी प्रकार लगातार उन्होंने इक्कीस वार पृथ्वीको निःक्षत्रिय कर दिया यह बात "वदतो व्याघात" से (अपनी बातको आप काटना) सिद्ध नहीं होती है। दूसरी बात यह है कि कल्पना करो कि यह ठीक हो तो भी उनके सामने ही उसी समय पृथ्वीपर बहुतसे क्षत्रिय मौजूद ही थे कि, जैसा वाल्मिकीय रामायण बालकाण्ड सर्ग ७५-७६ में लिखा है कि परशुरामजीने श्री महाराजा रामचन्द्रसे कहा कि हमारा वैष्णव धनु तुम्हारे तोड़े हुये शिव धनुषसे कहीं बलवान है, आपने तो दुर्बल धनुषको तोड़ा है। यहि हमारे वैष्णव धनुषको चढ़ा कर आप बाण छोड़िये तो मैं आपको बलवान समझकर आपसे द्वन्द्व युद्ध लड़ूंगा। इस पर श्रीरामचन्द्रजीने परशुरामजीके धनुषको चढ़ा कर बाण छोड़ कर दिखा दिया और कहा कि आपको ब्राह्मण समझकर हमने नहीं मारा। इसे सुन कर परशुरामजी चुप व सन्नाटे हो रहे और कुछ उत्तर न देकर महेन्द्र पर्वत पर चल दिये। फिर देखिये तुलसीकृत रामायणमें लिखा है कि जब श्रीरामचन्द्रजीने शिव धनुष भङ्ग किया तो उसकी घोर आवाज सारे भूमण्डलपर फैल गयी जिस आवाजको सुनकर परशुरामजी जनकपुर रङ्गभूमिस्थलपर आये और जनकजी व क्षत्रिय राजा तथा अन्यान्य महाराजाओंसे पूछनेपर जब मालुम हुआ कि रघुवंशी कुमार श्रीरामचन्द्रजीने धनुषको तोड़ा है तो बहुत क्रोधके साथ वादविवाद श्रीरामचन्द्रजीके कनिष्ठ भ्राता लक्ष्मणजीसे करने लगे, जिसपर श्रीरामचन्द्रजीने कहा कि हे परशुराम! तुम्हारा नाम तो मेरे भाई जानते थे पर तुम्हें पूर्णरूपसे पहिचाना नहीं और वंशके स्वभावसे कटु उत्तर दिया। यदि आप मुनीके भेषमें यहां आते तो लड़का जो लक्ष्मणजी है वह आपकी चरणधूरी शिर चढ़ाता। फिर आगे चलकर साफ शब्दोंमें भगवान रामचन्द्रने कहा है कि—

चौ०—जौ रण हमहिं प्रचारहि कोई, लड़ें सुखेन काल किन होई।
क्षत्रिय तनु धरि समर सकाना, कुलकलंक तेहि पामर जाना।।
कहा स्वभाव न कुलहि प्रशंसी, कालहुं डरहिं न रण रघुवंशी।। १ ।।

इन सब बातोंसे आपको स्पष्ट प्रकट होगा कि जिस समय धनुषभङ्ग हुआ था उस समय जनकपुरसे लेकर अयोध्या तक कितने क्षत्रिय राजे तथा बहुसंख्यक क्षत्रिय मौजूद थे। और अब द्वापरका हाल सुनिये महाभारत शान्ति पर्व अध्याय ४९ श्लोक ७७ से ९० तकमें लिखा है कि जब क्षत्रिय राजोंकी कमी होनेसे पृथ्वीपर बहुत अत्याचार होने लगा और वह पापके बोझसे व्याकुल होकर कश्यपजीसे कहने लगी कि हे ऋषि परशुरामजीके डरसे बहुतसे क्षत्रिय राजों तथा उनके बालक बालिकाओंको मैंने जहां तहां छिपा रक्खी है: जिनके नाम बतलाती हूं हैहो वंश जो खास परशुरामके द्रोही हैं वे स्त्रीरूपमें छिपे हुए हैं, और पौर वंशके विदूरथका पुत्र रैवतक पर्वतपर छिपा है; इसी प्रकार महा तेजस्वी पराशरने सौदाशके वंशवालोंकी रक्षा की है।

वह पराशरकी सब प्रकार सेवा करता है । शिविका पुत्र गोपाती वनमें रहता है । वह मेरी रक्षा करनेमें समर्थ है । प्रतदिनका पुत्र बछडोंके साथ वनमें निर्वाह करता है। निःक्षत्रिय होना सर्वथा झूठ है । यहां पर २१ बार जो लिखा है इस अलङ्कारिक लेखका भाव यह है कि क्षत्रियों-की कमी बहुत कुछ हुई परन्तु अभाव नहीं ।

सृष्टिसे लेकर गत द्वापर तक क्षत्रिय ही चक्रवर्ती राजे हुए ।

जैसा कि मैत्र्युपनिषद् प्रपाठक १ खण्ड ४ में लिखा है ।

इत्यादि प्रमाणोंसे सिद्ध है कि सृष्टिसे लेकर महाभारत पर्य्यन्त क्षत्रिय ही वंशके चक्र-वर्ती राजे हुए । क्योंकि परमेश्वरने इस पृथ्वीके पालन निमित्त क्षत्रिय वंशोद्भव इक्ष्वाकु नामक अश्वत्थ वृक्षरूप राजाको सत्ययुग में प्रथम अरोपित किया था । इस राजाकी दो शाखायें सूर्य्य वंश और चन्द्र वंश हुई । इनही दो वंशोंकी धारावाहिक संतान परम्परासे चारों युगोंसे इस पृथ्वीपर राज्याधिकारी होती आई । इन दोनों वंशोंके राजाओं में महत्तम धर्म, व तपोबल के प्रभावसे किन्हीं २ महाराजाओंने सप्त द्वीप पृथ्वीका शासन किया, बहुतों ने महत्तर धर्म, तपस्यासे बल और प्रताप से केवल जम्बू द्वीपका ही राज्य किया, और किन्हीं १ ने महाधर्म, तप, बल और प्रताप से भारतवर्ष मात्र पर अधिकार किया था । कुमारी का खण्ड मात्र के राजा हुये । इन दो वंशों में कोई २ चक्रवर्त्ती हुये और कोई २ मण्डलेश्वर हुये जिनका सविस्तार वर्णन पुराणों और इतिहासों में किया गया है । चक्रवर्त्ती महाराजे जैसे :—

सुद्युम्न, भूरिद्युम्न, इन्द्रद्युम्न, कुवलाश्व, यौवनाश्व, बद्ध्याश्व, अश्वपति, शशबिन्दु, हरिश्चन्द्र. अम्बरीष, ननक्तु, शर्य्याति, ययाति, अनरण्य, अक्षसेन, मरुत्त, भरत और युधिष्ठिर आदि । और मण्डलेश्वर राजे जैसे परीक्षित, जनमेजय, अश्वमेध, द्वितीय राम, छत्रमल, आदि लगभग २०० राजे हुये, जिनके विषयमें महाभारतसे लेकर उसके पीछे की ऐतिहासिक पुस्तकों में भली-भांति वर्णन किया गया है । दिल्लीके राजा पृथ्वीराज तक क्षत्रिय वंशके अन्तिम राजा हुये जिनको सुलतान शाहाबुद्दीन गोरी ने दिल्ली के किले में छलछन्दसे कैद कर आप दिल्ली का राजा बन गया । तब से भारतका साम्राज्य मुसलमानोंके हाथ चला गया और लगभग ६५१ वर्ष तक उनके हाथमें रहा । इसके पश्चात् भारतमें अंग्रेजी साम्राज्य हुआ जिसको लगभग २०० वर्ष हुये । अंगरेजी आधिपत्य होने पर भी भारत में लगभग ६० से ऊपर बडे स्वतन्त्र राजे क्षत्रिय वंशके हैं, लगभग ५०० के छोटे २ खुइसर जागिरदार हैं । और पराधीन राजे तालुकेदार और बडे २ जमीन्दार आदि अनुमानतः ५०० के हैं।

क्षत्रियजाति (वंश) में स्वाधीन, पराधीन, परतन्त्र महाराजाओं, राजाओं और ठाकुरोंकी सूची ।

सिसौदिया वंश में इस समय आगे लिखे स्वतन्त्र राज्य हैं :—१ अलिराजपुर इनको ११ तोपों की सलामी होती है । २ बांसवाड़ा (राजपुताना) इनको १५ तोपों की सलामी होती है । ३ बरवानी राज्य (मालवा में) इनको ११ तोपों की सलामी होती है । ४ धरमपुर राज्य गुजरात में) इनको ९ तोपों की सलामी होती है । ५ धौलपुर राज्य यहां के महाराजा साहब को १५ तोपोंकी सलामी होती है । ६ राज्य डूंगरपुर (राजपुताना) यहां के राजा साहब को १५

तोपों की सलामी होती है । ७ नेपाल के महाराजा साहब स्वाधीन मित्र राज्य है इनको १३ तोपों की सलामी होती है । ८ प्रतापगढ़ (राजपुताना) राज्य १५ तोपों की सलामी होती है । ९ शाहपुरा राज्य (राजपुताना) ९ तोपों की सलामी होती है । इसी वंश की शाखा गोहिल है इस वंशके इस समय ये राजे हैं । १० भावनगर का राज्य यह राज्य काठियावाड़ में र यहां के राजा साहब को १३ तोपों की सलामी होती है । ११ पालीताणा (काठियावाड़) इनको ९ तोपोंकी सलामी होती है ।

१२ राज्य पिपला (रेवाकान्तमें हैं) इनको ३ तोपोंकी सलामी होती है । १३ राज्य उदयपुर (मेवार) है । यहांके महाराजा साहबको १९ तोपों की सलामी होती है ।

कच्छवाहा वंशमें आगे कहे हुए स्वतन्त्र राजे हैं । १ अलवर राज्य । यहांके महाराजा साहबको १७ तोपोंकी सलामी होती है । २ जयपुर (राजपुताना) यहांके राजासाहबको १४ तोपोंकी सलामी होती है । ३ जम्बू काश्मीरका राज्य यहांके महाराजा साहबको २१ तोपोंकी सलामी होती है ।

सुलंकी क्षत्रियवंशके वक्ष्यमाण राज्य है । १ राज्य बासन्दा (गुजरात) यहांके राजा-साहबको ९ तोपोंकी सलामी होती है । राज्य लिमरी (रेवाकान्त) यहांके राजा साहबको ९ तोपोंकी सलामी होती है । और ३—रीवां राज्य है । यहांके राजा साहबको १७ तोपोंकी सलामी होती है । यह राजासाहब बघेल वंशके कहलाते हैं यह सुलंकी की शाखाओमें से एक शाखा है ।

राठौर वंशके वक्ष्यमाण राज्य हैं । १ बीकानेर (राजपुताना)यहांके महाराजा साहबको १९ तोपोंकी सलामी होती है । २ राज्य इडर (महीकांतमें है) । यहां के राजा साहबको १५ तोपोंकी सलामी होती है । ३ राज्य झाबुवा (मध्यभारत) है । यहांके राजासाहबको ११ तोपोंकी सलामी होती है । ४ राज्य–जोधपुर (राजपुताना) है । यहां के राजहाराजा साहबको १७ तोपोंकीं सलामी होती है । ५ राज्य किशुनगढ़ (राजपुताना) है । यहांके राजा साहबको १५ तोपोंकी सलामी होती है । ६ राज्य–रतलाम (मालवामें) यहांके राजा साहबको १३ तोपोंकी सलामी होती है । ७ राज्य–सैलाना, (मध्य भारत) है यहांके राजासाहबको ११ तोपोंकी सलामी होती है । ८ राज्य सीतामऊ (मध्य-भारतमें) है । यहांके राजा साहबको ११ तोपोंकी सलामी होती है ।

रघुवंशी—क्षत्रिय वंशके वक्ष्यमाण राजे हैं । १—वरौधा (मध्य भारत) है । यहांके राजा साहबको ९ तोपोंकी सलामी होती है ।

झाला (चन्द्रवंशीवंशके वक्ष्यमाण राज्य हैं । १ राज्य ध्रांगधरा (काठियावाड) है यहांके राजा साहबको १३ तोपोंकी सलामी होती है । २ राज्यझालाबाड (राजपुताना) है यहांके राजासाहबको १३ तोपोंकी सलामी होती है । ३ राज्य–लूनवाड़ा (काठियावाड) है । यहांके राजा साहबको ११ तोपोंकी सलामी होती है । ४ राज्य–वाघौत (काठियावाड) है । यहां के राजा साहबको ११ ततोपोंकी सलामी होती है । ५ राज्य वांकानेर (काठियावाड) है ११ तोपोंकी सलामी होती है ।

चौहान (अग्नि वंशी) वंशके वक्ष्यमाण राजे है । १–राज्य वरिया (मध्य भारत) है । यहांके राजासाहबको ११ तापोंकी सलामी होती है । २ राज्य–बूंदी (राजपुताना) है। यहांके राजासाहबको १७ तोपोंकी सलामी होती है । ३ राज्य–छोटा उदयपुर (रेवाकांत) है । यहांके राजा साहबको ९ तोपोंकी सलामी होती है । ४ राज्य–खिलचीपुर (मध्य भारत) है । यहांके राजासाहबको ९ तोपोंकी सलामी होती है । ५ राज्य–सिरोही । (राजपुताना) है । यहांके राजासाहबको ११ तोपोंकी सलामी होती है । और हाड़ा (चौहानकी शाखा वंशका राज्य)

६ राज्य–कोटा (राजपुताना) है । यहांके महाराजा साहबको १७ तोपोंकी सलामी होती है ।

पमार वंशके—क्षत्रियोंमें इस समय–वक्ष्यमाण राजागण हैं । १ राज्य छतरपुर बुन्देल खण्ड (मध्यभारत) में है । यहांके राजासाहबको ११ तोपोंकी सलामी होती है । २ राज्य दान्ता (काठियावाडमें) है । यहांके राजासाहब को ९ तोपोंकी सलामी होती है । ३ राज्य-नरसिंहगढ़ (मालवामें) है । यहांके राजा साहबको ११ तोपोंकी सलामी होती है । ४ राज्य–सोभय (रेवाकान्तमें) है । यहांके राजासाहबको ११ तोपोंकी सलामी होती है । ये पौर (पमारकी शाखामेंसे) वंशके हैं ।

बुन्देला क्षत्रिय (सोमवंशी) में इस समय वक्ष्यमाण स्वतन्त्र राजे हैं । १ राज्य–अजयगढ है । यहांके राजा साहबको ११ तोपोंकी सलामी होती है । २ राज्य–चरखारी (बुन्देलखण्ड मध्य भारतमें) है । यहांके महाराजा साहबको ११ तोपोंकी सलामी होती है । ३ राज्य-दतिआ (बुन्देल खण्ड मध्य-भारतमें) है यहांके महाराजा साहबको ५ तोपोंकी सलामी होती है । ४ राज्य–ओर्छा (बुन्देल खण्ड मध्यभारत में) है । यहांके महाराजा साहबको ११ तापोंकी सलामी होती है। ५ राज–पन्ना (बुन्देल खण्ड मध्य भारत में) है । यहांके महाराजा साहबको ११ तोपोंकी सलामी होती है ।

झरेजा—सोमवंशीकी शाखामें है इस वंशके क्षत्रियोंमें वक्ष्यमाण राजे हैं । १ राज्य कच्छ (रेवाकान्तमें) है । यहांके महाराजा साहबको १७ तोपोंकी सलामी होती है । २ राज्य–गोण्डाल (राजपुताना) है । यहांके राजा साहबको ११ तोपोंकी सलामी होती है । ३ राज्य–मोरबी (काठियावाड़में) है । यहांके ठाकुर साहबको ११ तोपोंकी सलामी होती है । ४ राज्य जामनगर है । यहांके महाराजा साबको १५ तोपोंकी सलामी होती है । ५ राज–कोट (काटिया-वाडमें) है । यहां के राजासाहबको ९ तोपोंकी सलामी होती है ।

भाटी यादव वंशकी शाखामेंसे हैं । यह भी सोमवंशी हैं । इस वंशमें इस समय वक्ष्यमाण राजे हैं । १ जैसलमेर राज्य है । यहांके महाराजा साहबको १५ तोपोंकी सलामी होती है । यादौन भी सोमवंशी ह । इस वंशके क्षत्रियोंके वक्ष्यमाण राज्य हैं । २ राज्य करौली (राजपुताना) है । यहांके महाराजा साहबको १७ तोपोंकी सलामी होती है । ३ राज्य–मयसूर (दक्षिणभारत करनाटकमें) है । यहांके रमहाराजा साहबको २१ तोपोंकी सलामी होती है । ४ राज्य सिरमोर (पंजाबमें) है । ये भाटी वंशके हैं । यहांके राजासाहबको ११ तोपोंकी सलामी होती है ।

सोमवंशी क्षत्रियका राज्य–जेतवा (काठियावाडमें) है । यहांके राजा साहबको १३ तोपोंकी सलामी होती है ।

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
E-mail : khemraj@bharatmail.co.in

Printed by Sanjay Bajaj For M/s.Khemraj Shrikrishnadas
Prop.: Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004
at their Shri Venkateshwar Press,
22, Chintamani Industrial Estate, Ramtekdi, Pune-411013.

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS